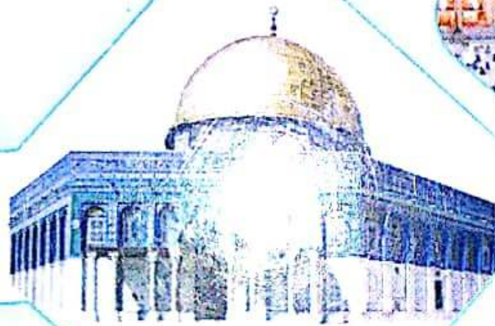
सच्ची हिकायात

हज़रत मौलाना अबुन्नूर मौहम्मद बशीर साहब









अदबी दुनिया

इल्तिज़ा है कि इस किताब को अपनी मोबाईल की मैमोरी में सेव करके ना रखे वल्कि आप से गुजारिश है कि इस किताब का मुताला कीजिये ये किताब बहुत शानदार है।

दुआ की गुजारिश
डॉ ज़ाहूर रज़वी
अल अश्हर अकडमी

दुआ की गुज़ारिश
मोहम्मद अहतिराम क़ुरैशी

आप हज़रात से गुजारिश है कि इस किताब को आप अपना निम्ती वक़्त दे और इस किताब का मुताला करे और हम ना चीज़ को अपनी अपनी दुआओं में याद रखे

Scanned by CamScanner

नाम किताब	:	सच्ची हिकायात मुकम्मल
तालीफ़	:	मौलाना अबु अलनूर बशीर
सन इशाअत	:	2013
सफ़हात	:	936
मतबअ	:	नाहिद प्रेस, देहली
हदिया	:	
नाशिर	:	अदबी दुनिया, देहली

इस किताब में

कुतब अहादीस और दीगर मुसतनिद इस्लामी किताबों से दिलचस्प, मुफ़ीद और सबक़ आमोज़ हिकायात जमा कर दी गई हैं और हर हिकायत के बाद इससे जो सबक़ हासिल होता हैए लिख दिया गया है और हर हिकायत को असल किताब से देखकर दर्ज किया गया है और किताब का नाम, सफ़हा और जिल्द सब कुछ दिया गया है।

Publisher

ADABI DUNIYA

399, Matia mahal; jama masjid,
Delhi - 110006
Phone : 23250122

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिलकरीम

पहली नज़र

इस ज़माने में अफ़्साने, ड्रामे, किस्से और कहानियाँ बड़े शौक़ से पढ़ी जाती हैं और ये शौक़ बिलअमूम हर छोटे बड़े मर्द और औरत में पाया जाता है, आज कल हर वो तहरीर जिसमें अफ़्सानवी तर्ज़ और हिकायती रंग मौजूद हो, पसंदीदगी की नज़र से देखी जाती है, क़ौम का यही रूहजान तबअे इस अम्र का बाइस है के मुल्क के अक्सर रसायल व जरायद अपने अपने "कहानी नम्बर" और "अफ़्साना नम्बर" शाय करते हैं और अफ़्साना पसंद अफ़राद इन्हें हाथों हाथ लेते हैं।

ये अफ़्साने, ड्रामे और आज कल की हिकायात व कहानियाँ ज़्यादा तर दरोग़ व कज़िब और ग़ैर वाक़ेई बिना पर मुबनी होती हैं, उनकी कोई हक़ीक़त और असल नहीं होती और ऐसे अफ़्साना लिखने वाले उन वज़अई हिकायात को "तबै ज़ाद" और अपनी तख़लीक़ क़रार देकर अपने वज़अे व कज़िब को अपना एक शाहकार साबित करते हैं और अफ़्साना पसंद तबीअतें उन्हें उस कारनामे पर दादे तहसीन देती हैं और उसे तरक़्क़ी पसंद अदब के नाम से मोसूम करने लगती हैं।

क़िस्से और हिकायात ज़रूरी नहीं के झूट ही हों, इस आलम में क़िस्सों और सच्ची हिकायात का वजूद भी है, खुद क़ुरआने पाक और अहादीसे शरीफ़ा में भी हिकायात व क़सस मौजूद हैं और वो हिकायात व क़सस ऐसे हैं जिनमें सौ फ़ीसदी सदाक़त है और जो अपनी सदाक़त के बाइस मख़्लूक़ के लिए मौजिबे रूश्दो हिदायत और वजह दर्से इब्रत हैं। खुदा तआला ने अपनी सच्ची किताब मजीद में अम्बियाइक्राम अलेहिमअस्सलाम के ईमान अफ़रोज़ क़िस्से और उमम साबिक़ा की सबक़ आमोज़ हिकायात बयान फ़रमाई हैं और रसूले खुदा सल-लल्लाहो-तआला-अलेह व सल्लम ने भी अपने इर्शादाते आलिया में पहली उम्मतों के इब्रत आमोज़ वाक़ेयात और सबक़ आमोज़ हिकायात सुनाई हैं और इसी तरह बुज़ुर्गाने दीन के इर्शादात और उनकी तालीफ़ात में भी इस क़िस्म की सच्ची हिकायत का वजूद पाया जाता है मगर मुश्किल ये है के ये सब पुरानी बातें हैं और इस नए दौर में उन परानी बातों की तरफ़ तवज्जह नहीं की जाती ऐ काश! मुसलमान आज

कल के लायानी अफ्सानों और वज़अई और झूटी हिकायात की बजाए अपने हक़ीक़ी अफ्सानों और सच्ची हिकायात को पढ़ते पढ़ाते तो दिलचस्पी के अलावा उन्हें दीनी और दुनयवी फ़वायद भी हासिल होते।

मुद्दत से मेर दिल में ये ख़याल था के क़ुरआन व हदीस और दीगर इस्लामी लिटरेचर से हक़ीक़ी क़िस्सों और सच्ची हिकायात को जमा करूं और उन्हें सादा और आम फ़हेमो तर्ज़ में क़लमबंद कर के मुसलमानों के लिए एक ऐसी किताब लिखूं जिसका मुतअल्ला उनके लिए दिलचस्पी भी पैदा करे और साथ साथ ही उनके लिए सबक़ व इब्रत पेश करके उनके दीन व दुनिया की इसलाह भी करे चुनाँचे इसी अपने इरादे के तहेत मैंने सच्ची हिकायात को जमा करना शुरू कर दिया और क़ुरआन व हदीस के अलावा और बहुत सी इस्लामी कुतुब का मुतअल्ला करने के बाद इस सबक़ आमोज़ सिसिले की इब्तिदा कर दी।

मेरे ज़हेन में ये सिलसिला बड़ा तवील है और इरादा है के मुबारक सिलसिला को दूर तक ले जाऊँ, मैंने इस तालीफ़ के लिए जो बाब तजवीज़ किए हैं वो हस्बे ज़ेल हैं:-

चूँके ये सिलसिला बहुत तवील है इसलिए इस किताब को तीन हिस्सों पर तक़सीम कर दिया है इसका ये पहला हिस्सा जो आपके हाथ में है पहले चार अबवाब पर मुशतमिल है, इसमें पहला, दूसरा, तीसरा, और चौथा बाब है और बाक़ी दूसरे अबवाब इंशाअल्लाह दूसरे हिस्सों में आएँगे इस किताब के पहले बाब में ऐसी हिकायात का इन्तिख़ाब है जिनका ताल्लुक़ "तौहीदे बारी" से है और दूस. बाब में उन रिवायात व हिकायात का ज़िक्र है जिनका ताल्लुक़ हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ज़ातेग्रामी से है, उन सच्ची हिकायात व रिवायात से हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम के मरातिब व मदारिज, आपके इख़्तियारात व कमालात और आपके उलूम का पता चलता है और ये बात साबित होती है के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम मालिक व मुख़्तार हैं और दानाऐ ग़यूब हैं और हर गिज़ हर गिज़ हमारी मिस्ल नहीं हैं, तीसरे बाब में अम्बियाऐक्राम अलेहिम-उल सलाम के मुतअल्लिक़ हिकायात दर्ज हैं जिनसे पता चलता है के अम्बियाऐक्राम की बहुत बड़ी शानें हैं और अल्लाह तआला ने उन्हें बड़े बड़े इख़्तियारात अता फ़रमाए हैं, चौथे बाब में ख़ुल्फ़ाऐ राशिदीन यानी हज़रत सिद्दिके अक्बर, हज़रते उमर फ़ारूक़ आज़म हज़रत उस्मान ज़ुलनोरैन और हज़रते मौला अली रिज़्वानउल्लाही अलेहिम अजमईन के मुतअल्लिक़ हिकायात दर्ज हैं जिनसे इन चार याराने नबी के मरातिब व मदारिज ज़ाहिर होते हैं और पता चलता है के ये चारों ही अल्लाह के महबूब के महबूब हैं और उनकी मोहब्बत ऐन ईमान है और उनकी अदावत से ईमान जाता रहता है। इस हिस्से में ये चारों बाब हैं बाक़ी के छः अबवाब दूसरे और तीसरे हिस्से में हैं।

ज़रूरत है के आज वो मुसलमान जो क़िस्सों के शौक़ीन हैं वो झूटी हिकायात को छोड़ कर उन सच्ची हिकायात को पढ़ें ताके उन के लिए दीनी तरक़्क़ी का सबब हो और वो मुसलमान औरतें जो रातों में बच्चों को झूटी कहानियाँ सुनाया करती हैं इन सच्ची हिकायात को पढ़ें, याद करें और अपने बच्चों को ये सच्ची हिकायात सुनाएँ ताके बच्चों के दिल में भी दीन की रग़बत पैदा हो।

(अबु अलनूर मोहम्मद बशीर)

Scanned by CamScanner

हिस्सा चहरम
दसवाँ बाब
मुख़्तलिफ़ हिकायात

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

अदब-उल-अरब

पाँचवाँ हिस्सा

ग्यारहवाँ बाब

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिलकरीम
लक़द काना फी क़सासीहिम इबरातुन लिऔलियल अलबाब

(बेशक उनके क़िस्सों में इबरत है समझदारों के लिए–पारा: 13, रूकू: 6)

मुसतनिद और सबक़ आमोज़
सच्ची हिकायात मुकम्मल
हिस्सा चहारम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिल करीम
बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

पहली नज़र

"सच्ची हिकायात" का मुफीद सिलसिला बेहद पसंद किया गया है। और सच्ची हिकायात के पहले तीन हिस्सों को जो ग़ैर मामूली क़बूलियत हासिल हुई है। वो शाज़ो नादिर ही किसी कितबा को हासिल होती है।

पहले तीन हिस्से जिनके मुतालअे में आ चुके हैं। उनका बेहद इसरार था के इस दिलचस्प और मुफीद सिलसिले का चौथा हिस्सा भी जल्द शाय हो।

अलहम्दूलिल्लाह

के आज ये चौथ हिस्सा भी आपके हाथ में है।

इस हिस्से में हुज़ूर सल–लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़ाते ग्रमी के मुतअल्लिक़ औलिया इक्राम बिलखसूस हुज़ूर ग़ौसे आज़म अलेहिम अर्रमा और शाहाने इस्लाम के मुतअल्लिक़ मुख़्तलिफ हिकायात दर्ज हैं और आख़िर में।

अदब–उल–अरब

के ज़ेरे उनवान दो तवील हिकायतें दर्ज हैं। अहले अरब की फ़ुसाहत व बलाग़त और उनके खूर्द व कलाँ की बे मिस्ल याददाश्त व ज़हानत की ये

दो शाहकार हिकायतें

अपनी मिसाल आप हैं। इन दो हिकायतों को पढ़कर आप अरबी अदब की अज़मत और अहले अरब की फ़ुसाहत व ज़हानत का अंदाज़ा कर सकेंगे।

मुझे उम्मीद है के पहले तीन हिस्सों की तरह ये हिस्सा भी काफी मक़बूल होगा और शायक़ीन इक्राम इसे भी हाथों हाथ लेंगे।

अबु अलनूर मोहम्मद बशीर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलीहिलकरीम

सच्ची हिकायत के तीसरे हिस्से में

दसवाँ बाब

की मुख़्तलिफ़ हिकायात का बक़िया दर्ज है

हिकायत नम्बर(641) सफेद साँप

एक बुज़ुर्ग इब्राहीम नामी फ़रमाते हैं के मैं हज़रत अब्दुल्लाह अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ी अल्लाहो अन्ह के चन्द दोस्तों के साथ हज के लिए रवाना हुआ तो रास्ते में हम ने एक सफेद रंग का खूबसूरत साँप देखा जिसके बदन से मुश्क व अंबर की खुश्बू आ रही थी। वो सांप बेचैन सा था और किसी तकलीफ में नज़र आ रहा था। थोड़ी देर के बाद वो सांप मर गया। उसके खुश्बूदार बदन को देखकर मेरे दिल में उसके मुतअल्लिक़ नेक गुमान पैदा हुआ। औ मैंने उसे एक कपड़े में लपेट कर रास्ते से अलग एक अच्छी जगह में दफ़्न कर दिया। फिर हम आगे बढ़े। और नमाज़ मग़रिब से पहले हम एक जगह बैठ गए। थोड़ी देर हुई तो हमारे पास चार औरतें आईं। उनमें से एक बोली, के तुम में से "उमर" को किस ने दफ़्न किया है। "उमर" कौन? वो बोली। वो सफेद सांप जिसे तुम में से किसी दफ़्न किया है, वही "उमर" था। मैंने कहा। बखुदा उसे मैंने दफ़्न किया है। तो वो मुझ से मुखातिब होकर बोली के

"तुम ने एक तहज्जुद गुज़ार और बहुत ज़्यादा रोज़े रखने वाले मोमिन को दफ़्न किया है। उसने नबी आखिर-उज़-ज़माँ मोहम्मद रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की सिफ़्त उनकी तशरीफ़ आवरी से चार सौ साल पहले आसमानों पर सुनी थी। और ये उसी वक़्त नबी करीम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम पर ईमान ले आया था।"

मैंने ये बात सुनकर अल्लाह का शुक्र अदा किया। और फिर हम मक्का मोअज़्ज़मा में पहुँचे ये ज़माना हज़रत फारूके आज़म(र०अ०) का था। हज के बाद हम हज़रत फारूके आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह से मिले। और सफेद सांप वाला किस्सा बयान किया। तो हज़रत फारूक़ आज़म रज़ी अल्लाहो

ने फ़रमाया। तुम ने सच कहा। मैंने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह सल्लम से भी इस जिन्न का तज़करह सुना था। (हयात-उल-हैवान, जिल्द 1, सफ़ा 174)

सबक़:- जिनों की कई कई सौ साल उम्र होती है और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर(स॰अ॰स॰) की अज़मत व तारीफ के डंके ज़मीनों आसमानों में बजते रहे और बज रहे हैं और बजते रहेंगे। और ये भी मालूम हुआ के कई खुश नसीब अफ़राद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की तशरीफ़ आवरी से पहले ही हुज़ूर पर ईमान ले आए थे और कई बदबख़्त हुज़ूर को देखकर भी इस नअेमत से महरूम रह गए।

हिकायत नम्बर(642) उमरो बिन जाबिर रज़ी अल्लाहो अन्ह

हज़रत सफवान बिन मौत्तल फ़रमाते हैं के हम चन्द मुसलमान मिल कर हज के लिए घर से निकले। तो रास्ते में एक बहुत बड़ा सांप देखा जो तड़प रहा था। हम ने देखा के तड़प तड़प कर थोड़ी देर के बाद वा मर गया। हमारी जमात में से एक शख़्स ने जैब से एक कपड़ा निकाला और इस मुर्दा सांप को इस कपड़े में लपेट कर ज़मीन में एक गढ़ा खोद कर उसमें दबा दिया। फिर हम मक्का मोअज़्ज़मा पहुँचे और मस्जिद हराम में दाखिल हुए। तो एक शख़्स हमारे पास आया। और कहने लगा। तुम में से वो कौन सा नेक आदमी है जिसने "उमर बिन जाबिर रज़ी अल्लाहो अन्ह" से नेक सलूक किया? हम ने कहा "उमर बिन जाबिर" तो हम में से कोई वाक़िफ नहीं। उस शख़्स ने कहा। वो कौन है जिसने रास्ते में सांप की तजहीज़ व तकफीन की। हमने बताया। वो ये है। फिर वो शख़्स हमारे साथी की तरफ़ मुख़ातिब होकर कहने लगा। जज़ाकल्लाह! ये जिसकी आप ने तजहीज़ व तकफीन की है ये हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का जिन्न सहाबी था। और उसका नाम "उमरो बिन जाबिर" था। और ये नो जिनों में से था। जिन्होंने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़बाने नूर से क़ुरआन सुना था। (रवाहू अलहाकिम फिल मुसतदरक, हयात-उल-हैवान, जिल्द, सफ़ा 174। रूह-उल-बयान, जिल्द 4, सफ़ा 488)

सबक़: हमारे हुज़ूर(र॰अ॰) रसूल-उल-सक़लीन हैं। इंसानों और जिनों के भी रसूल हैं और जिनों में भी ऐसे खुश नसीब अफ़राद हैं जो शर्फ सहाबियत से मुशर्रफ हैं रज़ी अल्लाहो अन्ह

हिकायत नम्बर(643) सर्क रज़ी अल्लाहो अन्ह

एक रोज़ हज़रत उमरो बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ी अल्लाहो अन्ह एक चटयल मैदान में से गुज़र रहे थे के आपने रास्ते में एक बहुत बड़ा सांप मरा हुआ देखा। आपने अपनी चादर फाड़ी और उसमें उस सांप को लपेट कर ज़मीन में दफ़्न कर दिया। दफ़्न कर देने के बाद आपने एक आवाज़ सुनी।

"ऐ सर्क! मैं गवाही देता हूँ के मैंने रसूल अल्लाह स़ल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से सुना था के उन्होंने तुम से फ़रमाया था। के ऐ सर्क! तुम एक चटयल मैदान में मरोगे और तुम्हारी तजहीज़ व तकफ़ीन एक मर्दे सालेह करेगा।"

हज़रत उमरो बिन अब्दुल अज़ीज़ ने ये आवाज़ सुनी। तो आपने फ़रमाया अल्लाह तुम पर रहम फ़रमाए। तुम कौन हो? और मै। ये किस की आवाज़ सुन रहा हूँ। जवाब मिला।

"मैं उन जिनों में से हूँ जिन्होंने रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़बाने अनवर से क़ुरआन सुना था। उन जिनों में से मेरे और सर्क के सिवा कोई बाक़ी ना था। और अब सर्क भी चल बसा। और सिर्फ मैं ही रह गया हूँ" (हयात-उल-हैवान, ज 1, सफ़ा 174)

सबक़: मालूम हुआ के सरवरे आलम(स॰अ॰स॰) पर ईमान लाने वाले और शर्फ सहाबियत हासिल करने वाले जिनों में भी हैं और हमारे हुज़ूर रसूल-उल-कुल हैं और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को ये भी इल्म हासिल था के फ़लाँ शख़्स फ़लाँ वक़्त और फ़लाँ ज़मीन पर मरेगा।

हिकायत नम्बर(644) ख़ौफनाक वादी

हज़रत सईद बिन जबीर रज़ी अल्लाह अन्ह फ़रमोते हैं के एक बनू तमीमी शख़्स ने अपने इस्लाम लाने का ये क़िस्सा बयान किया। के एक मर्तबा मुझे एक सफर के दौरान एक बहुत बड़े रेगिस्तान में रात गुज़ारना पड़ी। इस ख़ौफनाक रेगिस्तान में मेरी ऊँटनी मेरे साथ थी। और मैं बिलकुल तनहा था। रात का वक़्त था मैंने ऊँटनी को एक जगह बिठाया। और खुद लेट गया। और सो जाने से पहले मैंने ये पढ़ा। *आऊज़ू बि अज़ीमी हाज़ल वादी* यानी "यानी वादी के बड़े जिन के साथ मैं पनाह माँगता हूँ" ये पढ़कर सो गया। सोने के बाद ख़्वाब में, मैंने देखा के एक

क़वी हैकल जो उन जिसके हाथ में एक खंजर है आया और आते ही वो खंजर उसने मेरी ऊँटनी के हलक़ पर रख दिया। ये देखते ही मैं घबरा कर जाग उठा। और इर्दगिर्द देखने लगा। मगर कोई चीज़ ना आई। मैं उसे यूंही वहमो खयाल समझ कर फिर सो गया। दोबारा फिर वही जवान हाथ में खंजर लिए नज़र आया। उसने खंजर फिर मेरी ऊँटनी के गले पर रख दिया। मैं फिर चौंक पड़ा। और देखा के मेरी ऊँटनी भी कांप रही है। मैं फिर सो गया और तीसरी मर्तबा फिर यही क़िस्सा देखा। और अब तो मैं डर कर और घबरा कर जाग उठा। मैंने देखा के ऊँटनी डर के मारे बहुत कांप रही है। मैंने पीछे मुड़कर देखा। तो वही जवान हाथ में खंजर लिए खड़ा नज़र आया। और उसके साथ एक बूढ़ा शख़्स भी देखा जिसने उस जवान का हाथ पकड़ रखा था। और ऊँटनी के क़रीब आने से उसे रोक रखा था। और वो दोनों आपस में लड़ झगड़ रहे थे। थोड़ी देर में तीन बड़े बड़े बैल वहाँ आ गए। और इस बूढ़े ने इस जवान से कहा के इन बैलों में से जो बैल चाहो इस मेरे पड़ोसी आदमी की ऊँटनी के बदले में ले लो। मगर मेरे पड़ोसी आदमी की ऊँटनी को हाथ ना लगाओ। चुनाँचे वो जवान आगे बढ़ा। और उन बैलों मं से एक बैल उसने पकड़ लिया और उसे लेकर वहाँ से चला गया। फिर वो बूढ़ा शख़्स मुझ से मुख़ातिब होकर कहने लगा के देखो भाई! अब तुम लोग इस क़िस्म की डरावनी जगहों में किसी जिन्न के साथ पनाह ना माँगा करो। इसलिए के अब उनका ज़ोर और उनका तिलिसम टूट चुका है। अब तमु यूं कहा करो *आऊज़ बिल्लाही रब्बी मोहम्मदिन मिन होली हाज़िल वादी।* यानी "मैं मोहम्मद के रब के साथ पनाह माँगता हूँ, इस वादी के होल से" मैंने पूछा, कहाँ रहते हैं? उसने कहा के मदीना मुनव्वरह में। मैं ये सुनकर इन्तिहाई शौक़ में अपनी ऊँटनी पर सवार हुआ। और सीधा मदीना मुनव्वरह आ पहुँचा। और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की खिदमत में हाज़िर हो गया। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने मुझे देखते ही मेरा ये सारा क़िस्सा खुद ही लफ़्ज़ लफ़्ज़ सुना दिया। और फिर मुझे मुसलमान हो जाने के लिए इर्शाद फ़रमाया तो मैं फ़ौरन कलमा पढ़कर हल्क़ा बगोश इस्लाम हो गया। (हुज्जत-उल्लाह अलल आलमीन, सफ़ा 184)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की तशरीफ़ आवरी से हर बातिल का ज़ोर व तिलिस्म टूट गया। और ये भी

मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की रिसालत आलमगीर रिसालत है और जिन्न भी हुज़ूर के ख़ादिम हैं। और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से कोई बात पौशीदा व पनेहाँ नहीं।

हिकायत नम्बर(645) मुबल्लिग़ जिन्न

हज़रत खरीम बिन फातिक रज़ी अल्लाहो अन्ह अपने इस्लाम लाने का किस्सा बयान फ़रमाते हैं के मेरे कुछ ऊँट गुम हो गए। और मैं उनकी तलाश में बाहर निकला तो उन्हें वादी में पा लिया। चूंके मैं थक गया था इसलिए थोड़ी देर के लिए वहीं सोने के लिए लेट गया। और आदत के मुताबिक़ ये पढ़ा *"नऊज़ बअज़ीज़ हाज़ल वादी"* इतने में मैंने सुना के कोई कह रहा है के...

उज़या फता बिल्लाही ज़िलजलाली
वलमजदी वन्नअमाई व अफज़ाली
ववहिदिल्लाहा वला तबाली
क़द ममारा केदुल जिन्ना फी सिफाली

"यानी ऐ जवान! अल्लाह के साथ पनाह माँग जो अज़मत व जलाल और फज़्लो करम का मालिक है और अल्लाह की तौहीद का इक़्रार कर और जिनों का मक्रो तिलिस्म तो अब पस्ती में जा पड़ा है।"

मैंने ये आवाज़ सुनकर कहा ऐ हातिफ! साफ साफ बताओ के तुम्हारा क्या मतलब है? और मेरी हिदायत के लिए क्या तरीक़ है? तो फिर वही आवाज़ आई के....

जआ रसूलुल्लाही ज़ुलख़ैराती
बियसराबा यदऊ इलन्नजाती

"यानी अल्लाह के रसूल तशरीफ़ ले आए हैं जो यसरब (मदीना मुनव्वरह) में हैं। और निजात की तरफ़ बुला रहे हैं।"

मैंने कहा। और तुम कौन हो? तो आवाज़ आई के मैं जिन्न हूँ। मेरा नाम उमरो बिन आसाल है। और नज्द के मुसलमान जिनों पर हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की तरफ़ से आमिल मुक़र्रर हूँ।

मैंने कहा के अगर मेरे ये ऊँट कोई शख़्स मेरे घर तक पहुँचा दे। तो मैं अभी मदीना मुनव्वरह हाज़िर होकर ईमान ले आऊँ। आवाज़ आई के जाओ तुम मदीना मुनव्वरह। और रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व

सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर ईमान लाओ। तुम्हारे ये ऊँट मैं तुम्हारे घर पहुँचा दूंगा।

चुनाँचे मैं उसी वक़्त उन ऊँटों में से एक ऊँट पर सवार होकर मदीना मुनव्वरह पहुँच गया। ये दिन जुमआ का था और जिस वक़्त में पहुँचा हूँ। उस वक़्त नमाज़ हो चुकी थी। और सहाबा इक्राम मस्जिद से निकल रहे थे। मैं अपनी ऊँटनी बिठा रहा था। इतने में हज़रत अबुज़र रज़ी अल्लाहो अन्ह तशरीफ़ लाए और मुझ से फ़रमाने लगे। अन्दर चलो। हुज़ूर अलेहिस्सलाम तुम्हें बुला रहे हैं चुनाँचे मैं हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। तो हुज़ूर ने फ़रमाया। क्यों भई! जिसने तुम्हारे ऊँट तुम्हारे घर तक पहुँचाने का वादा किया था। उसने तुम से क्या क्या कुछ कहा? और फिर फ़रमाया। सुनो! उसने तुम्हारे ऊँट सही सालिम तुम्हारे घर तक पहुँचा दिए हैं। (हुज्जतुल्लाह अलल आलमीन, सफ़ा 185)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की अज़मत व रिसालत के डंके हर जगह बज रहे हैं। और ये भी मालूम हुआ के चाहे दुनिया के किसी गोशे में कोई बात हो हमारे हुज़ूर को इस का इल्म हो जाता है

हिकायत नम्बर (646) बिछड़ों का मिलाप

बनी इस्राईल में एक सालेह शख़्स था। उसका एक बेटा था। जब उसकी वफ़ात क़रीब आई। तो उसने अपने बेटे को वसीयत की। के "ख़ुदा की क़सम" कभी ना खाना, ना झूटी ना सच्ची। जब वो मर गया और लोगों ने ये सुना तो बनी इस्राईल उसाके बेटे के पास आए। और एक एक आके कहने लगा के तेरे बाप के ज़िम्मे मेरा इतना क़र्ज़ था। वो हर एक को उसके कहने के मुताबिक़ रक़म देता रहा। हत्ता के ये बेचारा मुफ़लिस हो गया। और जब कोड़ी भी उसके पास बाक़ी ना रही तो वो अपनी बीवी और दो बच्चों को साथ लेकर निकल खड़ा हुआ। और दरया में कश्ती पर सवार हो गया। ख़ुदा का हुक्म कश्ती टूट गई। और ये चारों सितम रसीदा अलेहदा अलेहदा एक एक तख़्ते पर बहने लगे। और बाद मुख़ालिफ़ ने हर एक को एक दूसरी सिम्त में जा फैंका। ये शख़्स जिसने मुद्दईयों के ज़ुल्म से वतन छोड़ा था एक जज़ीरे में पहुँच गया। जहाँ कोई आदम ज़ाद नज़र ना आता था। हैरान था के क्या करे। इतने में हातिफ से एक आवाज़ आई के ऐ माँ बाप के साथ एहसान करने वाले! मशीयते इलाही इस बात की मुक़्तज़ा है के तुझ को एक ख़ज़ाना मिले फ़लाँ जगह जाओ और वहाँ से ख़ज़ाना निकाल लो। ये वहाँ पहुँचा। तो

उस मुक़ाम से वाक़ई ख़ज़ाना मिल गया। फिर अलह तआला ने कुछ आदमी कहीं से वहाँ भेज दिए। उसने उनसे बड़ा अच्छा सलूक किया और उसके इस नेक सलूक की ख़बर गर्दो नवाह में फैल गई और मेहमान नवाज़ी व ग़ुरबा परवरी की दूर दूर तक शौहरत हो गई। चुनाँचे इत्राफ व जवानिब से लोग उसके पास आना शुरू हो गए। और जो आते गए वहीं बस्ते गए। यहाँ तक के वो जज़ीरा एक बड़ा शहर हो गया। और ये शख़्स इस जज़ीरे का हाकिम बन गया। खुदा की शान जैसे के और आदमी उसकी ख़बरें सुन सुन कर उसके पास आते थे ऐसे ही उसके बड़े बेटे को भी ख़बर लगी के एक शख़्स इन ओसाफ का फलाँ जज़ीरे में है और उसकी वजह से वो जज़ीरा आबाद हो गया है। ये सुनते ही वो भी उधर को रवाना हो गया। क़तअे मनाज़िल के बाद सफ़ा जज़ीरे में आया। और हाकिम जज़ीरे से मुलाक़ात की। हाकिम जज़ीरे ने उसकी बड़ी आओ भगत और ख़िदमत की। और उसे अपने ख़ास लोगों में दाखिल कर लिया। बावजूद उसके एक दूसरे से नावाक़िफ ही रहे और अपने रिश्ते से बेख़बर ही रहे।

इसी तरह उसके दूसरे बेटे को ख़बर लगी। और वो भी हाज़िरे ख़िदमत होकर अपने बड़े भाई की तरह शरफ़े खिदमत से बहरायाब हुआ। अभी तक एक का हाल दूसरे से मख़्फी ही था। अब हाकिम जज़ीरे बीवी का हाल सुनिए। के वो किसी दूसरे जज़ीरे में पहुँच गई और एक शख़्स ने उसे अपने घर में डाल लिया। जब उस शख़्स को भी इस हाकिम जज़ीरे की सखावत का इल्म हुआ तो वो भी अपनी औरत को साथ लेकर उसकी तरफ़ चल पड़ा। जब जज़ीरे के क़रीब पहुँचा तो औरत को कश्ती में छोड़कर और कुछ हदया लेकर हाकिम जज़ीरे के पास पहुँचा। हाकिम ने उसकी ख़ातिर व मदारात के बाद कहा। के रात यहीं रहो। उसने बताया के मैं अपनी औरत कश्ती में छोड़ आया हूँ। हाकिम ने कहा के उसकी हिफाज़त के लिए दो आदमी मैं वहाँ भेज देता हूँ। फिर उन्हीं दोनों भाईयों को हुक्म दिया के जाओ और रात भर इस कश्ती की हिफाज़त करो। जब वो दोनों कश्ती के पास पहुँचे तो आपस में सलाह करने लगे के हमें इस औरत की हिफाज़त के लिए भेजा गया है कहीं ऐसा ना हो के नींद आ जाए। आओ आपस में कुछ बातें करें। और आज तक ज़माना के हालात में से हो कुछ जिसको मालूम है वो बयान करे। ताके रात बसर हो। और नींद ना आए। चुनाँचे एक ने पहले अपना ही क़िस्सा बयान करना शुरू किया। और अपनी मुसीबत ज़दा दास्तान सुनाना शुरू की।

और कहा के हम दो भाई थे। दसूरे भाई का नाम यही था। जो तुम्हारा है। हमारा बाप हम को मअे हमारी वालिदा के लेकर दरया में सवार हुआ। खुदा की कुद्रत कश्ती टूट गई। और हम सब एक दूसरे से अलग अलग हो गए और बिछड़ गए। खुदा जाने कौन कौन कहाँ कहाँ जा पहुँचा है। जब दूसरे ने ये क़िस्सा सुना तो पूछा तुम्हारे बाप का क्या नाम है। उसने बताया के फलाँ नाम है। पूछा और तुम्हारी माँ का नाम? उसने माँ का नाम भी बताया। ये सुन कर उसे ताब ना नही और दौड़ कर उससे लिपट गया। और कहा के रब्बे कअबा की क़सम! तो तू मेरा भाई है। वो औरत जो कश्ती में बैठी थी और जो दरहक़ीक़त उनकी थी। बैठी दोनों की बातें सुन रही थी। जब सुबह हुई और वो शख़्स कश्ती पर आया। तो औरत को निहायत ग़मगीन पाया। ये देखकर उसे शक गुज़रा। के शायद उन दोनों पहरेदारों ने कोई शरारत की है। चुनाँचे वो ग़ुस्से में उल्टे पाँव फिर हाकिम ज़ज़ीरे के पास पहुँचा और सारा क़िस्सा सुनाया। हाकिम ने उन दोनों को तलब किया। और साथ ही इस औरत को भी बुला लिया। और फिर औरत से पूछा के बताओ तुम को उनसे क्या शिकायत। वो बोली। जनाब उन दोनों से कहिये के ये रात का अपना क़िस्सा जो सुना रहे थे फिर दोहरायें। चुनाँचे उन्हें ये हुक्म दिया गया। और उन्होंने फिर वही क़िस्सा बयान किया। हाकिम जज़ीरे ने ये क़िस्सा सुना। तो बे इख़्तियार अपने तख़्त से उठा। और उन दोनों को छाती से लगाकर कहने लगा *अनतुमा वल्लाही वलादी* "खुदा की क़सम तुम तो मेरे ही बेटे हो।" इधर औरत भी बेचैन हो गई। और उठी *वआना वल्लाही उम्मूहुमा* "और मैं खुदा की क़सम इन दोनों की माँ हूँ" अल्लाह तआला जब चाहे बिछड़ों को जमा करने पर क़ादिर है। (नुज़हरत-उल-मजालिस बाब बर अलवालिदैन, सफ़ा 283, जिल्द अव्वल)

सबक़:- माँ बाप के साथ नेक सलूक और उनकी फ़रमाँबर्दारी का फल मीठा है और माँ बाप की फ़रमाँबर्दारी औलाद की दुनिया भी बन जाती है और दीन भी संवर जाता है। और ये भी मालूम हुआ के मुसीबत के बाद राहत भी हासिल होती है। और मुसीबत के वक़्त सब्र करने वाले को बड़ा अज्र मिलता है। और ये भी मालूम हुआ के खुदा तआला बड़ी हिकमतों और कुद्रतों का मालिक है वो बिछड़ों को मिला देने पर भी क़ादिर है। और जिस तरह यहाँ उसने मुनतशिर अफ़्राद को एक जगह जमा फ़रमा दिया। इसी तरह क़यामत के रोज़ तमाम मुनतशिर अफ़्राद और अजज़ा को वो जमा फ़रमा देगा।

हिकायत नम्बर(647) आरिफ़ा

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाते हैं। मैं बैत-उल-मुक़द्दस जाना चाहता था के रास्ता भूल गया। अचानक एक औरत पर नज़र पड़ी। मैंने उससे कहा। ऐ मुसाफिरा! क्या तू भी रास्ता भूल गई?" उसने ग़ुस्से में आकर जवाब दिया। कहीं आरिफ़बिल्लाह भी मुसाफिर हो सकता है? और खुदा को दोस्त रखने वाला भी राह भूला हुआ कहलाया जा सकता है? फिर कुछ तवक्कुफ के बाद बोली। लो मेरी लकड़ी का सिरा पकड़ लो। और आगे आगे हो लो। मैंने ऐसा ही किया। अभी थोड़ी दूर ही चला होंगा के सामने बैत-उल-मुक़द्दस की चोटियाँ धुंदले ग़ुबार में नज़र आने लगीं। मैंने हैरान होकर पूछा। बड़ी बी! ये क्या माजरा है? के इतनी जल्दी हम बैत-उल-मुक़द्दस पहुँच गए। कहने लगी। ऐ शख़्स! तेरी रफ़्तार ज़ाहिदों जैसी है और मेरी रफ़्तार आरिफ़ों जैसी है। ज़ाहिद सय्यार और आरिफ़ तय्यार है। कहाँ चलने वाला और कहाँ उड़ने वाला। इतना कहकर वो मेरी नज़रों से ग़ायब हो गई (नुज़हत-उल-मजालिस, सफ़ा 26, जिल्द 2। बाब हिफ़्ज़ुलअमानत)

सबक़:- अल्लाह की मारफ़त की बदौलत बड़ी बड़ी मुश्किलें आसान हो जाती हैं। और आरिफ़ बिल्लाह अफ़राद भूलों भटकों की रहनुमाई फ़रमाते हैं। और मुश्किल में दस्तगीरी फ़रमाते हैं और ये भी मालूम हुआ के मारफ़त हक़ की बदौलत जब एक औरत भी कोसों दूर का सफर पल भर में तय कर सकती है। तो जो ज़ातग्रामी(स॰अ॰स॰) इर्फ़ान व मारफ़त का सर चश्मा है। वो पल भर में अगर अर्शे अला पर जा पहुँचे तो उसमें कौन सी ताज्जुब की बात है।

हिकायत नम्बर(648) ना अहल

हज़रत ज़ुलनून मिस्री रहमत-उल्लाह अलेह के पास एक शख़्स इस्मे आज़म सीखने के लिए आया और कई महीने मुतावातिर आपकी ख़िदमत में रहा। एक रोज़ हज़रत ज़ुलनून को क़सम देकर कहने लगा के अब तो मुझे इस्मे आज़म की तालीम दे दीजिए। आपने उसे एक बर्तन का मुंह कपड़े से ढका हुआ था। दिया और फ़रमाया के इसे फलाँ शख़्स के पास ले जाओ। ये शख़्स इसे ले चला रास्ते में कुछ खयाल जो आया तो बर्तन का मुंह खोल दिया। मुंह खोलते ही बर्तन में से एक चूहा निकल कर भागा.....ये

शख़्स गुस्से में आकर वहीं से पलटा। और हज़रत ज़ुलनून के पास पहुँच कर कहने लगा आप मुझ से दिल लगी करते हैं। हज़रत ने फ़रमाया। दिल लगी की कोई बात नहीं। हम ने एक चूहे पर तेरी अमानत व अहलियत को आज़माना चाहा था। मगर तुम इस बात के अहले साबित नहीं हुए। और तुम ने खयानत कर दिखाई। अब तुम ही बताओ के जब तुम एक हक़ीर सी शै की हिफाज़त नहीं कर सके। तो इस्मे आज़म की अमानत जलीला पर तुम साबित क़दम कैसे रह सकते हो? जाओ। तुम इम्तिहान की कसूटी पर खोटे उतरे हो (नुज़हत-उल-मजालिस, जिल्द 2, सफ़ा 31)

सबक़:- अल्लाह तआला अपनी मारफ़त और अपनी मोहब्बत। ना अहलों को अता नहीं फ़रमाता।

हिकायत नम्बर(649) गवाह

हज़रत सफयान सूरी तालिब इल्मी के ज़माने में जहाँ तालीम पाते थे। वहाँ एक मकान था। जिसकी दीवार के साया में बैठा करते थे। इत्तिफाकन उस मकान में किसी ने नक़ब लगाकर सारा सामान उड़ा लिया। मालिके मकान ने हज़रत सफयान पर चोरी का इलज़ाम लगाकर उनको पकड़ लिया। हज़रत सफयान ने उस बेबसी की हालत में मुज़तरबाना अदा के साथ कहा। इलाही! तू फ़रमाता है। *लायआ-बश्-शूहादाऊ इज़ा मा दुऊ* के जब गवाह गवाही देने के लिए बुलाए जायें तो गवाही देने से इंकार ना करें" और यहाँ मेरा गवाह तेरे सिवा कोई नहीं। अचानक उसी वक़्त एक शख़्स चिल्लाता हुआ आया। और कहने लगा। सफयान को छोड़ दो। चोर मैं हूँ। लोगों ने उससे इस इक़्रारे जुर्म की वजह दरयाफ़्त की। तो कहने लगा। मैंने अपने कानों से सुना कोई ग़ज़बनाक लहजे में कह रहा है। चोरी का सामान वापस कर दो। सफयान को फौरन छुड़ाओ। वरना अभी ग़ारत हो जाओगे। (नुज़हत-उल-मजालिस, जिल्द 2, सफ़ा 30)

सबक़:- सच्चे दिल से अल्लाह तआला से जो भी दुआ माँगी जाए वो ज़रूर क़बूल होती है।

हिकायत नम्बर(650) मेहनत का फल

एक बादशाह का गुज़र एक बूढ़े शख़्स पर हुआ। जो दरख़्तों की दुरूस्तगी और कांट छांट कर रहा था। बादशाह ने कहा, ऐ बूढ़े! क्या तुझे इन दरख़्तों का फल खाने की उम्मीद पड़ती है? कहा! बादशाह सलामत! हमारे

पहले लोगों ने ज़राअत की। तो उससे हम लोगों ने फायदा उठाया। अब मैं अपने बाद आने वालों के लिए ये मेहनत कर रहा हूँ। ताके वो नफा हासिल करें। बादशाह को उसकी ये बमज़ाक़ और मुफीद बात बहुत ही पसंद आई। और खुश होकर उसे एक हज़ार अशर्फियाँ ईनाम के तौर पर दीं। इस पर बूढ़ा काश्तकार खिलखिला कर हंस पड़ा। बादशाह ने हैरत में आकर पूछा। के इस वक़्त हंसी का क्या मौक़ा है। कहा मुझ इस ज़राअत के इस क़द्र जल्द फल देने से ताज्जुब हुआ। इस बात पर बादशाह और भी ज़्यादा खुश हुआ। और एक हज़ार अशर्फियाँ और दे दीं। बूढ़ा काश्तकार फिर हंसा। बादशाह नू पूछा। के अब क्यों हंसे? तो वो बोला के काश्त कार पूरा साल गुज़रने के बाद एक दफा फायदा उठाता है। मेरी ज़राअत ने इतनी थोड़ी सी देर में दो दफा ख़ातिर ख़्वाह फायदा पहुँचाया। बादशाह ने एक हज़ार अशर्फियाँ और दीं। और इसे वहीं छोड़ कर चला गया। (नुज़हत-उल-मजालिस, जिल्द 2, सफ़ा 26)

सबक़:- मेहनत का फल ज़रूर मिलता है। और ये भी मालूम हुआ के दानाई की बात करने में बड़े फायदे हैं।

हिकायत नम्बर(651) दुश्मने रसूल

हज़रत ज़क्रया अलेहिस्सलाम के साहबज़ादे हज़रत याहिया अलेहिस्सलाम ने किसी जंगल में शैतान को रोते हुए देखा। आपने पूछा रोते क्यों हो? शैतान बोला, ऐ अल्लाह के नबी! वो शख़्स क्यों ना रोये। जिसने एक तवील ज़माना तक खुदा की बन्दगी की हो। और उसकी इबादत महज़ बेकार और रायगाँ जाती रही हो। हज़रत याहिया अलेहिस्सलाम ने अल्लाह से अर्ज़ की। इलाही! ये मलऊन अब तो पछताता और रोता है क्या उसके साथ मुसालेहत की कोई सूरत है? खुदा ने फ़रमया ऐ याहिया! इस मलऊन के रोने पर ना जाओ। ये इख़लास के साथ नहीं रोता। बनावटी और मनाफिक़ा रोना रोता है। और अगर तुम इसके निफाक़ को मालूम करना चाहते हो तो उससे को के अल्लाह फ़रमाता है। तुम आज भी अगर आदम अलेहिस्सलाम की क़ब्र को सज्दा कर लो। तो हम राज़ी हो जायेंगे। हज़रत याहिया अलेहिस्सलाम ने शैतान से ये बात कही तो वो मलऊन खिलखिला कर हंस पड़ा और कहने लगा मैंने जब आदम को ज़िन्दगी में सज्दा नहीं किया। तो अब उसके मरने के बाद क्यों करने लगा। (नुज़ह-उल-मजालिस, जिल्द 2, सफ़ा 60)

सबक़:- मालूम हुआ के हर रोने वाला ज़रूरी नहीं के मुखलिसाना ही

रो रहा हो। बल्के बअज़ लोग झूटा रोना भी रोते हैं। और ये भी मालूम हुआ के शैतान रसूल का बहुत बड़ा दुश्मन है और रसूल के आगे झुकने पर वो किसी सूरत तैयार ना पहले हुआ था और ना अब होता है। और ये मालूम हुआ के शैतान ने ना तो रसूल की दुनयवी ज़िन्दगी में तअज़ीमे रसूल की। और ना उनके विसाल के बाद उनकी क़ब्र पर ही जाने के लिए तैयार हुआ। और ये भी मालूम हुआ के रसूल पर "मरने" का लफ़्ज़ शैतान ने बड़े खुले मुंह से कह दिया था।

हिकायत नम्बर(652) मरने से डरना

सुलेमान बिन अब्दुल मलिक ने एक मर्तबा हज़रत अबु हाज़िम अलेह अर्रहमा से पूछा के "हम मरने से डरते क्यों हैं?" तो आपने जवाब दिया। इसलिए के तुम ने दुनिया अबाद कर ली। और आक़्बत बर्बाद कर डाली। पस आबादी से निकल कर वीराने को जाने पर किस का दिल चाहता है? सुलेमान ने फिर पूछा के क़यामत के दिन खुदा के सामने पेश होने की क्या सूरत होगी? तो आपने जवाब दिया के नेक आदमी तो यूं पेश होगा। जैसे कोई गुमशुदा आदमी घर लौटे और घर वालों से खुशी खुशी मिले। और बुरे आदमी की मिसाल यूं होगी। जैसे कोई भागा हुआ ग़ुलाम पकड़ा जाए। और उसे उसके आक़ा के हुज़ूर पेश किया जाए। और वो लरज़ता कांपता और डरता हुआ पेश हुआ। (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 13)

सबक़:- हमें अपनी आक़्बत संवारने और आबाद करने की फिक्र करना चाहिए ताके जब हम मरें तो इस शैर के मिसदाक़ साबित हों.....

निशाने मर्द मोमिन बातो गोयम
चू मर्ग आयद तबस्सुम बरलब ओसत

यानी मोमिन जब मरता है तो हंसता हुआ मरता है। इसलिए के वो वीराने से आबादी की तरफ़ और परदेस से अपने घर की तरफ़ जा रहा होता है।

हिकायत नम्बर(653) हिसाब

एक आक़्बत अंदेश आदमी को एक मर्तबा अपने गुनाहों का खयाल आया और वो अपनी उम्र का हिसाब करने लगा। हिसाब जो किया। तो उसकी उम्र साठ साल की निकली। फिर वो इन साठ सालों के दिन गिनने लगा। तो साठ साल के साढ़े इक्कीस हज़ार दिन बने। ये बात देखी। तो वो ग़श खाकर गिर पडा और जब होश में आया। तो कहने लगा। अफसोस मैं हलाक हो

गया। साढ़े इक्कीस हज़ार दिनों में फी रोज़ अपना एक गुनाह भी शुमार करूं। तो भी मेरे जुमला गुनाह साढ़े इक्कीस हज़ार बनते हैं। और हाल ये है के मैंने एक एक दिन में कई कई गुनाह किए हैं। ये कहकर वो फिर गिर पड़ा और मर गया। (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 14)

सबक़:- हर शख़्स को अपने आमाल का मुहासबा करना चाहिए। और सोचना चाहिए। के सारी उम्र में बिलफर्ज़ अगर फी यौम उसने एक भी गुनाह किया होगा तो भी हज़ारों गुननाह उसके लिए जमा हो जायेंगे। फिर अगर एक एक रोज़ में कई कई गुनाह किए जायें। तो अंदाज़ा लगाईये। के इन गुनाहों के किस क़द्र अंबार लग जायेंगे। और कल क़यामत के दिन किस क़द्र मुश्किल का सामना होगा। पस हर शख़्स को डरना चाहिए। और गुनाहों से बचना चाहिए।

हिकायत नम्बर (654) आबादी

एक घुड़सवार ने जाते हुए एक शख़्स से पूछा। भई! आबादी यहाँ से कितनी दूर है? इस शख़्स ने जवाब दिया। आप अपनी दायें तरफ़ देखिये। वो देखिये। सामने आबादी नज़र आ रही है। घुड़सवार ने इधर देखा। तो उसे एक वसी व अरीज़ क़ब्रिस्तान नज़र आया। घोड़े सवार ने दिल में सोचा के ये शख़्स या तो दीवाना है और या कोई मर्द कामिल। फिर उसने उससे कहा। के भई! मैंने आबादी का पूछा है। और तुम क़ब्रिस्तान बता रहे हो। ये क्या बात? तो वो बोला। ये इसलिए के मैंने दूसरे तमाम मुक़ामात के लोगों को यहाँ आते देखा है, और यहाँ से किसी को कहीं जाते नहीं देखा। और आबादी कहते ही उस मुक़ाम को हैं जहाँ दूर दूर से लोग आयें। और वहाँ से फिर वीराने को ना जायें। तो मेरी नज़र में सही मअनों में "आबादी" यही है। (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 17)

सबक़:- हर एक को एक दिन मरना है। और अपने शानदार मकान, मोहल्ले ओर शहर छोड़कर क़ब्रिस्तान में जाना है। जिसे हम आबादी कहते हैं। उसे एक दिन बर्बादी का सामना होगा। असल आबादी तो क़ब्रिस्तान में है। जहाँ आहिस्ता आहिस्ता सब लोग जमा हो रहे हैं।

हिकायत नम्बर (655) चार बुज़ुर्ग

हज़रत जुनैद बग़दादी रहमत-उल्लाह अलेह एक मर्तबा अपने अहबाब में तशरीफ़ फ़रमा थे। और वो सब अल्लाह के मक़्बूल बन्दों का

तज़करह कर रहे थे। हज़रत सरी सक़्ती रहमत-उल्लाह अलेह फ़रमाने लगे के मैं एक रोज़ बैत-उल-मुक़द्दस में था। और हज के दिनों में बहुत थोड़े दिन बाक़ी रह गए थे। मैंने उस साल हज के लिए ना पहुँच सकने पर बड़ा अफसोस किया। और दिल में सोचने लगा के मक्का मोअज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरह पहुँच चुके होंगे। और मैं यहाँ ही हूं। अफसोस के मैं इस नअेमत से महरूम रह गया। मैं रोने लगा और बहुत रोया। थोड़ी देर के बाद हातिफ से एक निदा सुनी। कोई कह रहा था। ऐ सरी! मत रो। अल्लाह तआला तुम्हें किसी सबब हज के लिए मक्का मोअज़्ज़मा पहुँचा देगा। मैंने कहा। मगर ये कैसे मुमकिन है। जब के मक्का मोअज़्ज़मा यहाँ से काफी दूर है और मैं यहाँ बैत-उल-मुक़द्दस में हूँ। आवाज़ आई के अल्लाह के लिए सब कुछ मुमकिन है। मैंने सज्दा-ए-शुक्र अदा किया और हातिफ की आवाज़ की सदाक़त के ज़हूर की इन्तिज़ार करने लगा। इतने में मस्जिद बैत-उल-मुक़द्दस में वजीहा और नूरानी चहरे वाले चार हज़रात दाख़िल हुए। उनकी नूरानी सूरतें ऐसी पुरनूर थीं जैसे सूरज चमक रहा हो। उन चारों में से एक उनका पैश्वा था। और तीन उनके पीछे पीछे चल रहे थे। ये लोग मस्जिद में दाखिल हुए तो सारी मस्जिद जगमगा उठी। मैंने उन्हें देखा तो उठकर उनके साथ हो लिया। फिर उन्होंने दो दो रकातें बा जमात नमाज़ पढ़ी। इमाम वही बना जो उनका पैश्वा था। नमाज़ के बाद उनका वो इमाम दुआ माँगने लगा। और वो तीनों उसकी दुआ पर आमीन कहने लगे। मैं क़रीब हो गया। मैंने देखा के वो बड़ी क़्त आमेज़ दुआ माँग रहे हैं। जब वो दुआ से फारिग़ हुए तो मैंने उनसे अस्सलाम अलेकुम कही। और उन्होंने जवाब दिया। फिर उनके इसी श्वा ने मुझ से कहा। मुबारकबाद! ऐ सरी! के हातिफ से तुम्हें हज की शारत मिल चुकी है। मैंने कहा। हाँ! या सय्यदी! आपके यहाँ तशरीफ़ ाने से क़ब्ल मुझे हातिफ से ये बशारत मिली है। वो फ़रमाने लगे। हाँ ाँ! जब तुम्हें वो निदाऐ हातिफ सुनाई गई है। हम उस वक़्त खरासाँ में ं। मैंने हैरान होकर पूछा। हुज़ूर! खरासान की मुसाफत तो यहाँ से साल र की है। फिर आप इतनी जल्दी यहाँ कैसे पहुँच गए? तो फ़रमाया। साफत अगर हज़ारों साल की भी हो तो कोई बात नहीं। ज़मीन उसी ुदा की है जिसके हम बन्दे हैं। हम उसी के घर की ज़ियारत के लिए कले हैं। और पहुँचा देना भी इसी का काम है। देखो ये सूरज मशरिक़ चलकर सिर्फ एक दिन ही में मग़रिब में पहुँच जाता है। हालाँके

मशरिक़ व मग़रिब में मुसाफत कई सालों की है। तो क्या सूरज ये इतनी तवली मुसाफत अपनी क़ुद्रत से तय करता है? तो जब एक बे जान वजूद अपनी लम्बी मुसाफत दिन भर में तय कर लेता है तो जो अल्लाह के मक़्बूल बन्दे हैं वो अगर साल भर की मुसाफत पल भर में तय कर लें तो कौन सी ताज्जुब की बात है फिर वो बाहर निकले और मुझे साथ ले लिया। और नमाज़ ज़ोहर के वक़्त हम एक ऐसी जगह पहुँचे। जहाँ पानी का नामो निशान तक ना था। मगर उसी मक़्बूले हक़ की बर्कत व करामत से हम ने वहाँ एक ठंडा चश्मा पाया। जिससे हम ने वज़ू किया और नमाज़ पढ़ी। फिर चले। और नमाज़ अस्र के वक़्त हमें हिजाज़ की निशानियाँ नज़र आने लगीं। और मग़रिब से पहले पहले हम मक्का मोअज़्ज़मा पहुँच गए। मक्का मोअज़्ज़मा पहुँचा कर वो पाक लोग मेरी नज़रों से ग़ायब हो गए। (रोज़-उल-फायक़, सफ़ा 22)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दों को अल्लाह तआला से बड़ी बड़ी ताक़तें हासिल होती हैं। ये लोग सेंकड़ों मील की मुसाफत पल भर में तय कर लेते हैं। फिर जो उनके आक़ा व मौला सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हैं। उनकी मैराजे पाक का इंकार करना क्यों गुमराही ना होगी। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह तआला अपनी मख़लूक़ की मुरादें अपने बन्दों के ज़रिये व वसीले से पूरी फ़रमाता है। और ये भी मालूम हुआ के जो लोग बग़ैर छड़ी के चल नहीं सकते और एक मील ही की मुसाफत तय करके उनका दम फूल जाता है वो लोग उन अल्लाह वालों की मिस्ल बनने लगें। तो बड़े ही गुमराह हैं।

हिकायत नम्बर(656) एक बूढ़ा शेर

(मंज़ूम हिकायत)

कहते हैं एक शेर जब बूढ़ा हुआ
दौड़ने और भागने से रह गया
नाख़ुन व पंजे की ताक़त कम हुई
दांत टूटे पुश्त उसकी खम हुई
भूक से लाचार हो मरने लगा
फिक्र करके दिल में ये हीला किया
बन गया बीमार और जो जानवर
पूछने आता ना आता फिर नज़र

लोमड़ी आई अयादत के लिए
ग़ार के दर पर लगी ये पूछने
है तबीयत आपकी कैसी हुज़ूर?
चश्म बद रखने खुदा हज़रत से दूर
शेर बोला उम्र हो तेरी फ़िज़ों
बच्ची तो अन्दर नहीं आती है क्यों?
लोमड़ी ने ये कहा ऐ ज़िल्ल रब
अर्ज़ कर देती हूँ उसका भी सबब
कह रहे हैं बरमला ये नक़्श पा
हैं जो ज़ाहिर ग़ार के दर पर शहा
सेंकड़ों अन्दर गए हैं बिलयक़ीन
बाहर आने का निशाँ इक भी नहीं

(दरमंज़ूम, सफ़ा 21)

सबक़:- काम से पहले है लाज़िम सोचना
ये के है इस काम का अंजाम क्या

हिकायत नम्बर(667) आईना-ए-हक़ नुमा

(मंज़ूम हिकायत)

देखकर अहमद का रूऐ पुरज़िया
जहल से बोझल यूं बकने लगा
सब से बद रू है बनी हाशिम मैं तू
क्यों हसीं मशहूर है आलम मैं तू
आपने फ़रमाया है मुझ को यक़ीं
तू बजा कहता है और झूटा नहीं
देखकर सिद्दीक़ ने फिर ये कहा
आफताबे दो जहाँ तू है शहा
चहरा-ए-रोशन है ऐसा पुर जमाल
बद्र कामिल हो मुक़ाबिल क्या मजाल
सरवरे आलम का यूं इर्शाद था
तूने भी सिद्दीक़! बिलकुल सच कहा
ये कहा यारों ने हो के बा अदब
ऐ नबी हैरान हैं हम सब के सब

आप ने दोनों की क्यों तसदीक़ की
रास्त दोनों हो नहीं सकते कभी
आपने फ़रमाया। ऐ याराने दीं
आईना भी देखते हो या नहीं
हर कोई जैसा है दिखलाता है वो
ये सबक़ तुम सब को सिखलाता है वो
ऐ अज़ीज़ मैं भी हूँ वो आईना
अक्स देता है दिलों का जो दिखा

(दर मंज़ूम, सफ़ा 40)

सबक़:-

नूरे हक़ से जिनके दिल मामूर हैं
उनकी नज़रों में मोहम्मद(स०अ०स०) नूर हैं
और जिन के दिल हुए तारीक तर
वहीं कहें अहमद को मिस्ल अपनी बशर

हिकायत नम्बर(658) तवक्कल

थे मदीने में यमन के चन्द मर्द
था तवक्कल में हर इक उनमें से फर्द
सब गए फारूक़ को करने सलाम
आपने पूछा के क्या करते हो काम
बोले वो करते नहीं हम कोई कार
है तवक्कल पर हमारा तो मदार
सुन के ये फारूक़ ने उनसे कहा
ये भी कोई काम है तारीफ का
मुफ़्त खोरे क्यों नहीं कहते के हो
बोझ अपना डालते ओरों पे हो
जाँ खपाता है कोई खाते हो तुम
और तवक्कल उसको बतलाते हो तुम
है तवक्कल असल में दहक़ान का
है तवक्कल पैश-ए-मर्दे खुदा
डाल कर दाना फक़्त उम्मीद पर
रब पै रखता है नज़र जो साल भर

(दर मंज़ूम, सफ़ा 121)

सबक़:-

कार कर मत कर भरोसा कार पर
कर भरोसा क़िस्मत जब्बार पर

हिकायत नम्बर(659) क़ीमती पियाला

एक बादशाह के पास कोई शख़्स बेहद क़ीमती पियाला जो जवाहरात से जड़ा हुआ था। बादशाह ऐसा ला जवाब पियाला पाकर बड़ा खुश हुआ। एक मर्द दाना दरबार में हाज़िर था। बादशाह ने उससे पूछा। के तूने इस पियाले को देखा कैसा है? उसने कहा। हुज़ूर! इस पियाले के साथ साथ में रंज व ग़म और नुक़्सान को देखता हूँ। इस पियाले के आने से पहले आप इन बातों से मुतमई थे। मगर अब इस के आने से रंजो ग़म और नुक़्सान का भी अंदेशा पैदा हो गया है। बादशाह ने कहा के ये कैसे? वो बोला के अगर ये टूट गया तो रंजो ग़म का पैदा हो जाना यक़ीनी है और अगर गुम हो गया तो नुक़्सान वाक़े हो जाएगा। इत्तिफाक़न वो पियाला एक रोज़ टूट गया। तो बादशाह को बेहद रंज हुआ। और वो कहने लगा के इस मर्दे हकीम ने सच ही कहा था। (कीमियाऐ सआदत-उल-इमाम ग़ज़ाली अलेह अर्रहमत, सफ़ा 366)

सबक़:- दुनिया की हर चीज़ फानी और अंजाम कार मौजिब हज़्नो मलाल है। हक़ीक़ी और अबदी राहत अगर है तो खुदा की याद में माले दुनिया की जितनी इफ़्रात होगी उतनी ही परेशानी भी बढ़ेगी। एक शायर ने क्या ख़्वाब लिखा है के....

गरचै ज़ाहिर में सूरत गुल है
पर हक़ीक़त में खार है दुनिया
एक झोंकने में है इधर से उधर
चार दिन की बहार है दुनिया
ज़िन्दगी नाम रख दिया किस ने
मौत का इन्तिज़ार है दुनिया

हिकायत नम्बर(660) पुल सिरात

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ी अल्लाहो अन्ह की एक बांदी ने एक रोज़ सुबह अर्ज की। अमीर-उल-मोमिनीन! आज रात मैंने एक

ख़्वाब देखा, आप ने फ़रमाया बयान कर। वो बोली मैंने देखा है के दोज़ख़ भड़काई गई है। और पुल सिरात इस पर रखा गया है। और बअज़ खुलफा को फरिश्ते लाए हैं। पहले ख़लीफा मरवान को देखा के फरिश्ते उसे लाए हैं। और उसे हुक्म दिया के पुल सिरात पर चल। वो थोड़ा सा चला था। के दोज़ख़ में गिर गया। हज़रत उमर बिन अब्दुलअज़ीज़ बोले। फिर आगे क्या हुआ? जल्दी बयान करो। वो बोली। फिर मरवान के बेटे वलीद को लाया गया। वो भी इसी तरह दोज़ख में गिर गया। आप बेचैनी से बोले। जल्दी कहो। फिर क्या हुआ। वो बोली के फिर इब्ने अब्दुल मलिक को लाए। वो भी इसी तरह दोज़ख़ में गिर गया। आप बोले। फिर क्या देखा? जल्दी कहो। वो बोली। फिर आपको लाया गया। बांदी इतना कहा ही था के हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने एक नारा मारा और बेहोश होकर गिर पड़े। इस डर से के कहीं मुझे भी इसी तरह दोज़ख़ में गिरते हुए ना देखा गया हो। बांदी ने चीख कर कहा। अमीर-उल-मोमिनीन! खुदा की क़सम! मैंने देखा के आप सलामत गुज़र गए। बांदी चीख चिल्ला रही थी मगर हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ बेचैनी में लौटते और हाथ पैर मारते थे। काफी देर के बाद आपको होश आया। (कीमियाए सआदत, सफ़ा 496)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दों के दिल में आक़्बत का ख़ौफ रहता है। और वो कभी ऐसा काम नहीं करता जिसका अंजाम दोज़ख में गिरना हो। एक वो पाक लोग भी थे के हर वक़्त आक़्बत की फिक्र रहती थी। और एक ये लाग भी हैं जों अलल एलान कहते हैं के...

आक़्बत की ख़बर खुदा जाने
अब तो आराम से गुज़रती है

खुदा एसे ग़फ़्लत आमोज़ शैरों से भी बचाए।

हिकायत नम्बर(661) अद्ल व इंसाफ

जंगे बद्र में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अपने हाथ मुबारक में एक तीर पकड़कर मुजाहिद की सफें दुरूस्त फ़रमा रहे थे। हज़रत सव्वाद रज़ी अल्लाहो अन्ह सफ से बाहर निकले हुए थे। हुज़ूर अलेहिस्सलाम ने उस तीर से हज़रत सव्वाद की पीठ को छू कर फ़रमाया। ऐ सव्वाद! सफ के बराबर हो जाओ। हज़रत सव्वाद ने अर्ज़ किया। हुज़ूर! आपके इस तीर के मेरे बदन के साथ छू जाने से मुझे जो ठोकर सी लगी है। मैं इसका बदला

लेना चाहता हूं। हुज़ूर! आप अद्लो इंसाफ के मुनब्बअ व मख़्ज़न हैं। मुझ इसका बदला लेने दीजिए। हुज़ूर अलेहिस्सलाम ने वही तीर हज़रत सव्वाद को दिया। और कहा। लो तुम भी इस तीर से मेरे बदन पर ठोकर लगा लो। हुज़ूर अलेहिस्सलाम ने बदला देने को अपनी क़मीज़ मुबारक पुश्त अनवर से उठाई तो हज़रत सव्वाद ने हुज़ूर के बदन अनवर से चिमट कर मेहर नबुव्वत को चूम लिया और अर्ज़ किया मेरे आक़ा! मैंने तो इस बहाने से बदने अनवर से अपना बदन लगा लिया है। ताके बदन अनवर की बर्कतों से मैं माला माल हो जाऊँ। (नुज़हत-उल-मजालिस, जिल्द 2, सफ़ा 93)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अद्ल व इंसाफ और रहमो व करम के पैग़म्बर हैं। और आप ने हमें ये दर्स दिया है के हम भी अद्लो इंसाफ को अपनायें। और ये भी मालूम हुआ के सहाबा इक्राम रज़ी अल्लाहो अन्हुम का ये ईमान था के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के बदन अनवर से छू जाने से इंसान का बैड़ा पार हो जाता है। फिर आज अगर कोई शख़्स हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का जिस्म मुबारक ना पाकर आपके इस्मे मुबारक ही को चूम ले। तो खुदा तआला उस पर क्यों फज़्लो करम ना फ़रमाएगा। एक शायर ने क्या खूब लिखा है....

तर आसताँ जो मिल सका, तिरी रहगुज़र पै जबीं सही
हमें सज्दा करने से काम है जो वहाँ नहीं तो यहीं सही

हिकायत नम्बर(662) रस्ता

हज़रत अबु इसहाक़ शीराज़ी रहमत-उल्लाह अलेह एक मर्तबा अपने मुरीदैन के साथ कहीं जा रहे थे के रास्ते में एक कुत्ता आता हुआ नज़र आया। मुरीदैन ने आगे बढ़कर कुत्ते को धतकारा। हज़रत ने फ़रमाया। उसे मत धतकारो। क्योंके रास्ता हम में और उसमें मुशतरिक है। (नुज़हत-उल-मजालिस, जिल्द 2, सफ़ा 94)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दे जानवरों तक से भी नेक सलूक से पेश आते हैं। और अपनी अज़मत व बड़ाई का खयाल तक नहीं लाते।

हिकायत नम्बर(663) नामे अक़्दस

एक यहूदी तौरात पढ़ रहा था। उसने तौरात में एक सहीफा पर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का नाम अक़्दस लिखा देखा।

यहूदी ने बुग़्ज़ व कीना से उस नामे पाक को खुरच डाला। दूसरे रोज़ तौरात खोली तो इस सफहे पर ये नामे अक़्दस चार जगह लिखा देखा। गुस्से में आकर उसने इस नाम पाक को फिर खुरच डाला। तीसरे रोज़ उसने देखा। के इस सफहे पर ये नाम अक़्दस आठ जगह लिखा हुआ है। उसने फिर ये नाम पाक सब जगह से खुरच दिया। चौथे दिन उसने इस नाम अक़्दस को बारह जगह लिखा देखा। अब इसकी हालत बदली। और इस नाम पाक की दिल में मोहब्बत पैदा हो गई। और इस नाम वाले महबूब सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़ियारत के लिए शाम से मदीना मुनव्वरह की तरफ़ रवाना हुआ। इत्तिफ़ाक़ देखिये के ये हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़ियारत करने के लिए रवाना हुआ। मगर उधर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का विसाल पाक हो चुका था जब ये मदीना मुनव्वरह पहुँचा। तो उसकी हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह से मुलाक़ात हुई। और हज़रत अली से हुज़ूर के विसाल का इल्म हुआ। अब तो ये सख़्त बेचैन हुआ। और हज़रत अली से कहने लगा। के मुझे हुज़ूर के बदने अनवर का कोई कपड़ा दिखाईये। हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह ने हुज़ूर का एक कपड़ा मुबारक उसे दिया। उस यहूदी ने पहले तो उसे सूंघा। फिर हुज़ूर के रोज़ा-ए-अनवर के सामने आकर कलमा पढ़ा। और मुसलमान होकर दुआ माँगी के इलाही! अगर तूने मेरा इस्लाम क़बूल कर लिया हे तो मुझे अपने महबूब के पास बुला ले। इतना कहा। और हुज़ूर के सामने ही इन्तिक़ाल कर गया। हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह ने उसे गुस्ल दिया और जन्नत बक़ीअ में उसे दफनाया। (नुज़हत-उल-मजालिस, जिल्द 2, सफ़ा 144)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का नाम पाक कोई कीना परवर लाख मिटाना और खुरचना चाहे। मगर बमिसदाक़.....

तू घटाए से किसी के ना घटा है ना घटेगा
जब बढ़ाए तुझे अल्लाह तआला तेरा

हुज़ूर का नाम अनवर ना मिटा ना मिट सकता है। मिटाने वाले खुद मिट गए। मगर इस नाम अक़्दस को वही क़रार और उसकी वही बहार है जो पहले थी। सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम!

हिकायत नम्बर(664) दुनयवी मेहबूब

एक अमीर आदमी एक ग़रीब मगर नेक आदमी की लड़की पर

आशिक़ हो गया। ग़रीब बाप को पता चला, तो उसने अपनी बेटी को सख़्त इसहाल आवर दवाई खिला दी। जिससे उसकी लड़की को कसरत के साथ इसहाल आने लगे। बाप उसके इस माद्दा-ए- ग़लाज़त को एक बड़े मटके में जमा करता रहा। लड़की कसरे इसहाल से बेहद लाग़िर और दुबली हो गई। और रंग भी पीला पड़ गया। फिर उस ग़रीब आदमी ने इस रईस को पैग़ाम भेजा। के आप मेरे घर तशरीफ़ लायें। और मेरी लड़की को जो आप की मेहबूबा है देख लें और दिल चाहे तो उससे निकाह कर लें। वो अमीर आदमी खुश खुश उसके घर आया। और जब उस लड़की को देखा तो वो पहला सा हुस्नो जमाल ना देख कर मुंह फैर लिया। और कहा के मुझे जिस हुस्नो जमाल से मोहब्बत थी वो तो सब नज़र नहीं आता। लड़की के बाप ने कहा। ठहरिये आपको वो मेहबूब हुस्नो जमाल भी मैंने एक मटके में मेहफ़ूज़ रखा है। आप अपने मेहबूब ही को साथ लिए जाईये। चुनाँचे वो ग़लाज़त से पुर मटका उठा लाया। और कहने लगा के इसी में है आपका वो मेहबूब जो जब तक इस लड़की के अन्दर मौजूद था। तो ये लड़की आपको अच्छी लगती थी। और अब ये समें से निकल गया है तो लड़की अच्छी नहीं लगती। लीजिए आपका मेहबूब हाज़िर है। ले जाईये इसे साथ। वो अमीर आदमी बड़ा शर्मिंदा हुआ और उठकर चला गया। (मसनवी शरीफ)

सबक़:- दुनयवी और ग़ैर शरई मोहब्बत ग़लाज़त का एक ढेर ही है। आदमी को चाहिए के हुस्न ज़ाहिरी पर फरिफ़्ता ना हो के उसकी असल सरासर ग़लाज़त की पोट ही है...

रोग़नी है ज़र्फ इसानी बज़ाहिर और बासिल
हम को है मालूम जो कुछ उसकी आब व गुल में है

हिकायत नम्बर(665) चालाक औरत

(मंज़ूम हिकायत)

था मुजर्रिद और बूढ़ा एक मर्द
आज़मोदा था जहाँ के गर्म सर्द
चैन से रहता था वो सुबह व मसबा
आई कमबख़्ती निकाह इक जा किया
बीवी जो आई बड़ी चालाक थी
बद रोया बे हया बे बाक थी

चाटने खाने से उसको काम था
और यही काम उसका सुबह व शाम था
एक दिन मेहमान आया उनके घर
उसकी ख़ातिर गोश्त आया सैर भर
भूनती जाती थी जब के देगची
बोटी इक इक चुन के ज़ालिम खा गई
देखकर हांडी को खाली ये किया
लाई बाहर से मियाँ को वो बुला
और कहा तुम को ना आगा यक़ीं
है मगर सच झूट ज़र्रा भर नहीं
उस निगोड़ी बिल्ली को तुम देखना
बैठी है क्या भोला भाला मुंह बना
भूनती थी मैं मसालह गोश्त का
गोश्त था इक तास में रखा हुआ
मैं लगी चखने मसालह का नमक
गोश्त सारा कर गई चट बे धड़क
कुछ ना बोला मर्द साहब दिल मगर
जाके ले आया तराज़ु दोड़ कर
पलड़े में बिल्ली को रखा की ना देर
वज़न में पूरी जो निकली एक सैर
ये कहा मुझ को बता ऐ बे हया
वज़न है बिल्ली का या ये गोश्त का?
गोश्त है गर ये तो बिल्ली है कहाँ?
है जो बिल्ली गोश्त का दे तो निशाँ!

नतीजा

नाव काग़ज़ की कभी बहती नहीं
काठ की हंडिया सदा रहती नहीं
झूट तेरा ज़ाहिर इक दिन होएगा
चोर के सौ दिन तो इक दिन साध का

(दर मंज़ूम तर्जुमा मसनवी शरीफ)

हिकायत नम्बर(666) हज़रत अबु सईद रहमत-उल्लाह अलेह

हज़रत अब्दुर्रहामन बिन जाफर अलेह अर्रहमा फ़रमाते हैं। मैं बसरा में रहता था। और मरे पड़ोस में एक मस्जिद थी। जिसमें मैं पाँचों नमाज़ें बा जमात अदा किया करता था। इस मस्जिद के इमाम एक खुदा रसीदा बुज़ुर्ग थे जो "अबु सईद" के नाम से मशहूर थे। हज़रत अबु सईद हर रोज़ सुबह बाद अज़ नमाज़ फज्र वअज़ फ़रमाया करते थे। एक साल में हज के लिए घर से निकला। इस साल बड़ी सख़्त गर्मी पड़ रही थी। इसलिए मैं जिस क़ाफले के साथ था। रात को उनसे जुदा होकर सारी रात सफर करता, और सुबह होती तो किसी मंज़िल पर क़याम कर लेता। और दिन भर वहीं रहता। शाम तक मेरा क़ाफला भी वहाँ आ जाता। और मैं दूसरी रात फिर आगे बढ़ता। एक रात मैं रास्ते से भटक गया। और अपने क़ाफले से बाहर जुदा हो गया। और एक ख़तरनाक दश्त में पहुँच गया। सूरज चढ़ा। तो दिल घबराया। के अब क्या होगा। दोपहर को गर्मी की शिद्दत और रेत का सहरा और क़ाफले से जुदाई। इन बातों ने मौत का यक़ीन दिला दिया। और इस तसव्वुर से एक मुक़ाम पर लेट गया। और मौत की इंन्तिज़ार करने लगा। इतने में मुझे किसी शख़्स की आवाज़ सुनाई दी। जो मेरा नाम लेकर मुझे पुकार रहा था। मैंने हैरान होकर ऊपर जो देखा तो ये वही मस्जिद के इमाम अबु सईद थे। उन्हें इस दश्त में देखकर हैरान रह गया। और अल्लाह का शुक्र भी अदा किया। अबु सईद फ़रमाने लगे। तुम भूके मालूम होते हो? मैंने कहा। हाँ! फ़रमाया! लो ये रोटी खाओ। फिर फ़रमाया। लो ये रोटी खाओ। फिर फ़रमाया। तुम प्यासे भी हो? कहा। हाँ। फ़रमाया। लो पानी भी मौजूद है। चुनाँचे मैंने पेट भर कर रोटी भी खाई और पानी भी पिया। और मेरी जान में जान आई। हज़रत अबु सईद ने फिर फ़रमाया। लो अब मेरे पीछे पीछे चले आओ। मैं उनके पीछे पीछे चलने लगा। और थोड़ी ही देर चलने के बाद मक्का मोअज़्ज़मा के शहर की दीवारें नज़र आने लगीं। और हम मक्का मोअज़्ज़मा पहुँच गए। फिर आपने मुझे एक जगह ठहरा कर फ़रमाया। के यहीं ठहरो। तुम्हारा क़ाफला तीन दिन के बाद यहाँ पहुँचेगा। आपने मुझे एक रोटी और फ़रमाया ये तुम्हारे लिए काफी है। चुनाँचे मैं तीन दिन तक उसी एक रोटी से दो लुक़्मे खाता रहा। और सैर शिकम हो जाता रहा।

तीसरे रोज़ हमारा क़ाफला भी आ पहुँचा। और फिर जब हम अरफ़ात में पहुँचे। तो मैंने हज़रत अबु सईद को जबले रहमत के क़रीब दुआ में मशग़ूल देखा। मैंने सलाम अर्ज़ किया। तो फ़राग़त के बाद उन्होंने सलाम का जवाब देकर फ़रमाया। के कुछ हाजत हो तो कहो। मैंने कहा। मेरे लिए दुआ कीजिए। चुनाँचे उन्होंने दुआ की। उसके बाद फिर उन्हें नहीं देखा। हत्ता के जब हम हज के बाद बसरा पहुँचे। और रात घर क़याम करने के बाद सुबह उसी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने गया। तो हज़रत अबु सईद ही जमाअत करा रहे थे। और बाद नमाज़ आपने हस्बे दस्तूर वअज़ भी फ़रमाया। वअज़ के बाद मैंने उन से मुसाफहा किया। तो आपने मेरा हाथ दबाया। गोया इर्शाद फ़रमाया के राज़ ज़ाहिर ना करना। मैंने मस्जिद के मौअज़्ज़न से पूछा के हज़रत अबु सईद इन दिनों कहीं गए तो नहीं थे तो मौअज़्ज़न ने हलफिया बयान किया। के एक रोज़ भी आप मस्जिद से ग़ैर हाज़िर नहीं रहे। बाक़यदा पाँचों नमाज़ें पढ़ाते रहे हैं। और सुबह वअज़ भी फ़रमाते रहे हैं। ये बात सुनकर मैंने यक़ीन कर लिया। के हज़रत अबु सईद अब्दाल में से हैं। (राज़-उल-फायक़, सफ़ा 54)

सबक़:- मालूम हुआ के अल्लाह के मक़्बूलों को खुदा तआला ने बड़ी ताक़तें अता कर रखी हैं। वो दिनों और महीनों का रस्ता पल भर में तय कर लेते हैं। और ये भी मालूम हुआ के हवा के वो एक वक़्त में यहाँ भी और वहाँ भी हो सकते हैं। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के मक़्बूल बन्दे मुश्किल और मुसीबत के वक़्त मदद के लिए पहुँच जाते हैं। फिर जो इन मक़्बूलों के भी सरदार और रसूलों के भी रसूल और सारी कायनात के बादशाह हैं। यानी हुज़ुर सय्यद-उल-अंबिया अहमदे मुजतबा, मोहम्मद मुसतफा सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम। उनके इख़्तियार व तसर्रुफ और उनके दाफअे-उल-बला और हामी नासिर होने में अगर कोई शख़्स कलाम करने लगे तो वो किस क़द्र जाहिल व बद नसीब है।

हिकायत नम्बर(667) मर्दे ज़ाकिर

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं। एक रोज़ मैं मस्जिद हराम से निकल कर जबले अबी क़ैस पर गया। तो मैंने एक सियाह रंग आदमी को देखा जो बड़े ज़ौक़ व शौक़ से ज़िक्रे हक़ में मशग़ूल था। और ये कलमात कह रहा था अंता। अंता। याहू। याहू" बस यही कलमात बार बार दोहरा रहा था। मैंने जब उसे देखा के इन कलमात के सिवा और कुछ कहता ही नहीं। तो मैंने उससे कहा

के तुम पागल तो नहीं हो? ये सुनकर वो बोला। के या शेख़! पागल तो वो है जो इतने क़दम चल कर यहाँ पहुँचे। और इस अर्से में अपने मालिक को एक बार भी याद ना करे" मैंने कहा। भई! खुदा का ज़िक्र दिल से करना ज़्यादा अफ़्ज़ल है। वो बोला। ठीक है मगर दिल जब ज़िक्रे हक़ से पुर हो जाए। तो वो ज़बान पर भी छलकने लगता है। इतना कहकर वो मेरी नज़रों से ग़ायब हो गया। और मैं बड़ा नादिम हुआ के मैंने ऐसे मक़्बूल से ये तकरार क्यों की। फिर रात को जब सोया हूँ। तो ख़्वाब में एक निदाऐ हातिफ सुनी के इस सियाह रंग के आदमी की हमारे नज़दीक बहुत बड़ी क़द्र है। और क़यामत के रोज़ हम उसे एक ऐसा नूर अता फ़रमायेंगे। जिस नूर से सारा माहोल चमक उठेगा। (रोज़-उल-फायक़ 77)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दों का दिल भी और ज़बान भी खुदा के ज़िक्र में मशग़ूल रहती हैं। और वो किसी लम्हा अपने मालिक को फ़ारोमोश नहीं करते। और ये भी मालूम हुआ के मक़्बूलाने हक़ को कभी हिक़ारत की निगाह से ना देखना चाहिए। इसलिए के ये अपने अल्लाह के नज़दीक बड़ी क़द्रो मंज़िलत के मालिक होते हैं।

हिकायत नम्बर(668) तीन तीर

हज़रत फज़ील रहमत-उल्लाह अलेह एक बहुत बड़े क़ज़्ज़ाक़ थे। एक रात वो अपने ग़ुलाम की गौद में सर रखे सो रहे थे। के दफअतन एक क़ाफला ज़ाहिर हुआ। क़ाफले वालों ने जब राह में फज़ील को देखा। तो डर गए। और कहने लगे। के अब हम क्या करें। फज़ील क़ज़्ज़ाक़ वो रास्ते में मौजूद है। क़ाफले में तीन शख़्स हाफिज़ क़ुरआन और क़ारी भी थे। कहने लगें ठहरो हम इस पर तीन तीर बरसाते हैं। मुमकिन है के वो असर कर जायें। चुनाँचे उनमें से एक ने तीर फैंका और ये आयत पढ़ी। *अलम याती लिल्लज़ीना आमनू अन तख़्शा क़ुलूबूहुम लिज़िक्रिल्लाही* "क्या ईमान दारों पर वो वक़्त नहीं आया के ज़िक्रे इलाही से उनके दिल कपकपा उठें।"

फज़ील ने ये आयत सुनी तो लर्रज़ गए। इतने में दूसरे ने ये आयत पढ़ी: *फफिरू इललाही इन्नी लकुम मिनहू नज़ीरू मुबीना* "अल्लाह की तरफ़ रूजू करो। मैं उसकी तरफ़ से तुम्हें डराता हूँ।"

ये आयत सुनकर फज़ील चीख मार कर रोने लगे। इतने में तीसरे ने ये आयत पढ़ दी।

व आनीबू इला रब्बीकुम असलिमू लहू मिन क़ब्ली अन यातीकुम

अलअज़ाबु सुम्मा ला तनसुरूना "अपने रब की तरफ़ रूजू करों और अज़ाब टूट पड़ने से पहले पहले मान जाओ। क्योंके इस वक़्त तुम्हें मदद ना मिलेगी।"

अब तो फज़ील बे क़ाबू हो गए और अपने साथियों से कहने लगे। यहाँ से सब पलट जाओ। मैं अपनी करतूतों पर नादिम हूँ। मेरे दिल में ख़ौफ इलाही घर कर गया है। ये कहकर मक्का मोअज़्ज़मा को रवाना हो गए और सच्चे दिल से तायब होकर अल्लाह के वलियों में शुमार होने लगे। (नुज़हत-उल-मजालिस, जिल्द, 2 सफ़ा 65)

सबक़:- अल्लाह का ख़ौफ बड़ी अच्छी चीज़ है। उससे इंसान की काया पलट जाती है। और उम्र भर के गुनाह छूट जाते हैं। और आदमी अल्लाह का मक़्बूल बन जाता है।

हिकायत नम्बर(669) हलवा फ़रोश

एक बुज़ुर्ग जिनका नाम अहमद था। वो क़र्ज़ ले ले कर लोगों को खिलाया पिलाया करते थे। इस आदत की वजह से उनके ज़िम्मे बहुत सा क़र्ज़ हो गया आपका जब आख़री वक़्त आया। तो क़र्ज़ ख़्वाह आपके पास जमा हो गए। और तक़ाज़ा करने लगे। के आप तो मर रहे हैं। हमारे रुपये किसी तरह देते जाईये। थोड़ी देर के बाद एक हलवाई लड़का हलवे की सीनी लिए हुए हलवे की आवाज़ देता हुआ गुज़रा। हज़रत अहमद ने उसे बुलवाया और सब हलवा उससे खरीद लिया। और उन सब क़र्ज़ ख़्वाहों को खिला दिया। लड़के ने हलवे के पैसे माँगे तो आपने फ़रमाया के जहाँ ये लोग बैठे हैं। तू भी बैठ जा। ये सब मेरे क़र्ज़ ख़्वाह हैं। तू भी इन में शामिल हो जा। लड़के ने रोना शुरू कर दिया। के मैं एक ग़रीब और ग़रीब बाप का लड़का हूँ। मेरा बाप मुझे मार डालेगा। लोगों को ये बात बहुत नागवार गुज़री के नाहक़ इस लड़के को सताया और रूलाया। वो बुज़ुर्ग ख़ामोश पड़े थे। इतने में एक रईस का फ़रसतादा आया। और बहुत सा रुपया सामने लाकर रख दिया और कहा के ये फलाँ रईसे ने भेजा है। हज़रत ने उस रुपये से सब क़र्ज़ ख़्वाहों का क़र्ज़ अदा कर दिया। एक ख़ादिम ने अर्ज़ किया के हज़रत इसमें क्या हिकमत थी के आपने मरते दम भी हलवाई लड़के से हलवा खरीद कर अपने ज़िम्मे क़र्ज़ और बढ़ा लिया। फ़रमाया के मैंने ख़ुदा से दुआ की के मेरा क़र्ज़ अदा हो जाए। तो इर्शाद हुआ के क़र्ज़ की अदाएगी कोई मुश्किल नहीं। मगर कोई

रोए तो दरया-ए-रहमत जोश में आए। लेकिन तुम्हारे इन क़र्ज़ ख़्वाहों में कोई रोने वाला तो है नहीं। सब ख़ामोश बैठे हैं। इसलिए मैंने उस ग़रीब लड़के से हलवा खरीदा। जब उसने रोना शुरू कर दिया तो उसी वक़्त रहमते हक़ को जोश आया। तो ये मेरी एक तरीकीब थी जो काम आई...

ताना गरीद को दके हलवा फ़रोश
बहर बख़्शायश नमी आयद बजोश

(मसनवी शरीफ)

सबक़:- अल्लाह के हुज़ूर तज़ुर्रो वज़ारी बड़ी मक़्बूल है जो लाग अपने गुनाहों पर नादिम होकर रोते और सच्चे दिल से तायब हो जाते हैं। रहमते हक़ उन्हें अपनी आग़ोश में ले लेती है।

दर तज़ुर्रो बाश ताशादाँ शवी
गर ये किन ताबे दहाँ खिंदाँ शवी
ऐ खुशा दिल के आँ बरयान औस्त
ऐ खोशा चश्मे के आँ गरयान औस्त

हिकायत नम्बर(670) चालाक लोमड़ी

एक शेर ने जंगल के जानवरों को हुक्म दिया। के मैं अब बूढ़ा हो चुका हूँ। आईंदा मार व धहाड़ और शिकार करके खाने की ज़ेहमत मुझ से ना हो सकेगी। मेरा हुक्म है के फलाँ ग़ार में हर रोज़ तुम खुद ही किसी जानवर को मुनतख़िब करके मेरे पास भेज दिया करो। ताके मैं बैठे बिठाए अपना शिकार पा लिया करूं। जानवरों ने ये शाही हुक्म पाकर हर रोज़ किसी जानवर को मुनतख़िब करके उस ग़ार में भेजना शुरू किया। दस पंद्रह दिन के बाद लोमड़ी का नम्बर आ गया। और ग़ार में उसे जाना पड़ गया। चलते हुए लोमड़ी ने सारे जानवरों से कहा के अल्लाह ने चाहा तो आज तुम सबकी मुश्किल दूर करके आऊँगी। दुआ करते रहना। आज मेरा इरादा शेर को ख़त्म करके आने का हैं जानवर हैरान हुए। के ये क्या कहती है? लोमड़ी चली गई। और वक़्त मुक़र्रर से बिलइरादा कुछ देर से ग़ार में पहुँची। शेर ने ग़ुस्से में पूछा। के देर से क्यों आई? लोमड़ी ने जवाब दिया हुज़ूर! हम दो बहनें थीं और हम दोनों ही आपके "राशन" के लिए आ रही थी के रास्ते में एक और शेर मिल गया। उसने ज़बरदस्ती मेरी बहन को पकड़ लिया। और कहा। के उसे मैं खाऊँगा। और उसे साथ ले गया। मैंने बहतेरा कहा। के हम

दोनों अपने बादशाह की खूराक हैं। मगर हुज़ूर! वो तो आपको भी कुछ नहीं समझता। और आपकी परवाह किए बग़ैर मेरी बहन को ले गया है ये क़िस्सा सुनकर शेर गुस्से में आ गया। और कहा चलो मुझे वो शेर दिखाओ कहाँ है? पहले मैं उससे निपट लूं। चुनाँचे लोमड़ी उसे एक गहरे कुएँ पर ले आई। और शेर को कुएँ के किनारे खड़ा करके साथ ही आप भी खड़ी हो गई। और कुएँ के अन्दर पानी की तरफ़ इशारा करके कहने लगी। हुज़ूर! वो देखिये। वो शेर है और वो साथ ही उसके मेरी बहन खड़ी है। शेर ने देखा तो उसे वाक़ई (अपना अक्स) शेर नज़र आया। और साथ ही (लोमड़ी का अक्स) लोमड़ी भी नज़र आई। तो गुस्से में उसने मुंह फाड़ कर उस (अपने ही अक्स) शेर पर हमला करने को जस्त लगा दी और जस्त लगाते ही कुएँ में जा पड़ा। लोमड़ी ने किनारे पर से कहा। बादशाह सलामत! बन्दी सलाम अर्ज़ करती है। अफसोस! के आपका आख़री वक़्त आ पहुँचा। ये कहकर लोमड़ी वापस चल गई। और शेर कुएँ में डूब कर मर गया। (मसनवी शरीफ)

सबक़:- जिस तरह इस शेर ने बज़ोम खवैश दूसरे शेर पर हमला किया था। हालाँके वो उसका हमला किसी ग़ैर पर ना था। बल्के खुद अपनी ही ज़ात पर था। जिसके बाइस वो हलाक हो गया। इसी तरह वो लोग जो अपने भाईयों को लूटते हैं। कम तोलते हैं। रिश्वत लेते हैं। और दूसरों पर ज़ुल्म करते हैं वो दरअसल किसी दूसरे पर नहीं बल्के खुद अपनी ही जान पर ज़ुल्म करते हैं। पस अगर सलामती दरकार है तो किसी भाई पर ज़ुल्म ना करो।

हिकायत नम्बर (671) इत्तिफ़ाक़

(मंज़ूम हिकायत)

एक जंगल में कहीं दो बैल थे
शेर ने उन पर कई हमले किए
वो मगर रहते थे दोनों एक जा
एक लहज़ा भी ना होते थे जुदा
मिल के और सींगों को करके सामने
मारते थे दोनों टक्कर शेर के
जब लगाते मिल के टक्कर और सुम
भागता था शेर हो के नोक दुम
काम देखा ज़ोर से चलता नहीं

फ़िक्र कर तदबीर ये सोची वहीं!!
पाके मौक़ा एक ने उससे कहा
मुफ़्त क्यों खोता है जान अपनी भला
यार से तेरे अदावत है मुझे
कुछ भी हो जाए ना छोडूंगा उसे
है क़सम मुझ को खुदा की कर यक़ीन
तुझ से मेरे दिल में कीना कुछ नहीं
दोस्ताना ये समझ मेरा सुख्न!
साथ उसका छोड़ दे अहमक़ ना बन
आ गया दुश्मन के दम में वो गधा
बैल ही आख़िर था धोका खा गया!
इस तरह से जब गए दोनों वो फट
शेर ने फ़ौरन किया दोनों को चट

(मोतियों का हार तर्जुमा मसवी शरीफ़)

सबक़:-

है अजब शै इत्तिफ़ाक़ बाहमी
ये कहावत क्या नहीं तुम ने सुनी
दुश्मनों को ज़ेर करना हो अगर
तफ़र्रक़ा डाल उनमें और मग़लूब कर

हिकायत नम्बर (672) दिल की बात

देवबंदी हज़रात के हकीम-उल-उम्मत मौलाना अशरफ़ अली साहब थानवी लिखते हैं। शाह अब्दुर्रहीम साहब के पहले पीर का नाम भी शाह अब्दुर्रहीम साहब ही था। फ़रमाते थे के एक मर्तबा मैं अपने पीर का सर दबा रहा था, पीर साहब ने कहा। के खूब अच्छी तरह ज़ोर से दबाओ। मेरे दिल में खयाल आया के जो बहुत ज़ोर से दबाऊँगा तो सर खरबूज़े की तरह पिचक जाएगा। (क्योंके शाह साहब खूब क़वी थे) पीर साहब ने फ़रमाया। के नहीं भाई तुम खूब ज़ोर से दबाओ। खरबूज़े की तरह नहीं पिचकेगा। (मलफ़ूज़ात हसन-उल-अज़ीज़, सफ़ा 92 यानी मोलवी अशरफ़ अली थानवी के मलफ़ूज़ात)

सबक़:- उन अल्लाह के वलियों से कोई बात छुपी नहीं रहती। और वो दिलों की बातें भी जान लेते हैं। फिर अगर कोई शख़्स खुद हुज़ूर सरवरे

आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इल्म में कलाम करे और ये कहे के उन्हे दीवार के पीछे का भी इलम ना था तो वो किस क़द्र जाहिल है।

हिकायत नम्बर(673) दूरदराज़ से

एक मग़रिबी शख़्स ने एक रईस से 150 रुपये क़र्ज़ माँगे। रईस ने कहा के एक साहब मेरे दोस्त हैं। उनका एक दुश्मन लंदन में है। अगर तुम उसको किसी तरकीब से मार दो। तो मैं तुम्हें उन से 150 रुपये दिलवा दूंगा। इस शख़्स ने वादा किया। चुनाँचे साहब के पास गए। इस शख़्स ने एक आईना मंगवाथा। और साहब से इस आईने में देखने के वास्ते कहा। चुनाँचे देखा। तो उसमें लंदन नज़र आया। और वो दुश्मन बाज़ार में जा रहा था। उस शख़्स ने साहब से कहा के आप निशाना दुरूस्त करके पंचा का फायर कीजिए। चुनाँचे फ़ायर किया गोली ग़ायब हो गई। वो साहब बराबर आईना में देखते रहे। के वो शख़्स गोली खा कर गिरा। फिर उन्होंने अहतियातन लंदन से बज़रिया तार अपने किसी दोस्त से ख़बर मंगाई के फलाँ शख़्स का क्या हाल है। वहाँ से ख़बर आई के वो फलाँ शख़्स का क्या हाल है। वहाँ सफ़ा ख़बर आई के वो फलाँ तारीख़ में इस तरह हलाक हुआ। के दफअतन गोली आकर लगी। और पता ना चला के किस ने गोली चलाई। पुलिस तहक़ीक़ात में मसरूफ है। क़ातिल का हनूज़ पता नहीं चला। जब साहब बो अपने दुश्मन की हलाकत का यक़ीन हो गया तो उन्होंने मुआहेदा से कुछ ज़्यादा रुपये पेश किए। तो इस मग़रिबी ने सिर्फ 150 रुपये लेकर बाक़ी ज़ायद वापस कर दिए। (मोलवी अशरफ़ अली थानवी के मलफूज़ात हसन-उल-अज़ीज़, सफ़ा 93)

सबक़:- एक मग़रिबी शख़्स अगर इतनी दूरदराज़ से किसी शख़्स को लंदन में ज़रर पहुँचा सकता है और उसकी गोली सेंकड़ों मील दूर से मार कर सकती है और एक आईना के ज़रिये वो सेंकड़ों मील दूर की चीज़ देख सकता है और दिखा भी सकता है तो फिर अल्लाह के वली में ये ताक़त क्यों नहीं हो सकती। के वो सेंकड़ों मील दूर की चीज़ को आईना करामत के ज़रिये से देख भी ले और दिखा भी दे। और दूर दराज़ से वो अपने अक़ीदतमंदों की मदद फ़रमाए। और नफा पहुँचाए। और फिर जो उन सब मक़्बूलों के सरदार हुज़ूर अहमद मुख़्तार सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हैं। उनकी बे पनाह ताक़तों और बे नज़ीर तसर्रूफात का जो इंकार करे। और यूं कहे के जिसका नाम मोहम्मद है वो किसी चीज़ का मालिक व मुख़्तार नहीं। और वो कुछ नहीं कर सकते। तो वो शख़्स किस क़द्र बदबख़्त और गुमराह है।

हिकायत नम्बर(674) हक़ हक़ हक़

शेख़ अहमद अब्दुलहक़ रूदोलवी ने शादी की। औलाद भी हुई मगर औलाद ज़िन्दा ना रहती थी जो बच्चा पैदा होता था वो तीन मर्तबा हक़ हक़ हक़ कहकर मर जाता था। एक मर्तबा आपकी बी बी इस रंज की वजह से के औलाद नहीं जीती। आपके सामने रोईं। आपने फ़रमाया के अच्छा अब जो बच्चा पैदा होगा वो ज़िन्दा रहेगा। चुनाँचे फिर जो बच्चा पैदा हुआ उसने हक़ हक़ हक़ नहीं किया। और वो ज़िन्दा रहा। (मोलवी अशरफ़ अली थानवी के मलफ़ूज़ात हसन-उल-अज़ीज़, सफ़ा 100)

सबक़:- मालूम हुआ के अल्लाह के मक़्बूलों से फ़रयाद करना जायज़ है। और अल्लाह के वलियों से औलाद और औलाद की ज़िन्दगी तलब करना शिर्क नहीं। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के मक़्बूलों की नज़र से मौत भी ज़िन्दगी बन जाती है। और ये भी मालूम हुआ के जो बात अल्लाह के मक़्बूल कह दें वो हो जाती है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के वलियों को ये इल्म होता है के फलाँ बच्चा मर जाएगा और फलाँ ज़िन्दा रहेगा। फिर जो सारे वलियों और नबियों के भी सरदार के इख़्तियार व तसर्रूफ में और उनके इल्मे पाक में कलाम करे वो किस क़द्र बद नसीब और नाक़द्र शनास शाने रिसालत है।

नोट:- ये तीनों हिकायात मोलवी अशरफ़ अली साहब थानवी की बयान की हुई हैं। लिहाज़ा जो शख़्स मोलवी साहब मज़कूर से अक़ीदत रखता है। इसे हुज़ूर सरवरे आलम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इल्मे गै़ब और हुज़ूर के इख़्तियार व तसर्रूफ का इंकार ज़ैब नहीं देता। यूंही औलिया इक्राम के मतलअ अललअसरार होने और उनके तसर्रूफात को शिर्क बताना मोलवी अशरफ़ अली साहब की इन तहरीरात के खिलाफ है और इसी तरह मोलवी अशरफ़ अली साहब की कोई अपनी तहरीर भी जो किसी दूसरी जगह इन तहरीरात के खिलाफ हो क़ाबिले क़बूल हर गिज़ नहीं। हक़ यही है जो उन ऊपर की हिकायात में लिखा गया है।

हिकायत नम्बर(675) फिरऔन की हलाकत

एक रोज़ खुदा तआला ने हज़रत मूसा अलेहिस्साम से फ़रमाया के ऐ मूसा! मेरी तरफ़ से फिरऔन से कहो। के क्या तुम मुझ से सुलह कर लेने की ख़्वाहिश रखते हो? अगर रखते हो तो तुम ने सारी उम्र अपने नफ्स की

पैरवी में गुज़ार दी। अब अगर एक साल भी तुम हमारी मर्ज़ी पर चलो। तो हम तेले उम्र भर के गुनाह माफ फ़रमा देंगे। और अगर तुम से इस क़द्र ना हो सके। तो सिर्फ एक महीना ही हमारी इताअत करो। अगर ये भी ना हो सके तो एक रोज़ ही सही। ये भी नहीं तो एक सांस में *लाइलाहा इल्लल्लाह* कह लो। तो हमारी तुम्हारी सुलह हो जाएगी।

हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने ये पैग़ामे हक़ फ़िरऔन तक पहुँचाया तो वो ज़ालिम गुस्से में आ गया। और सारे लश्कर को जमा करके बरसरे दरबार कहने लगा। कौन है मेरे सिवा दूसरा कोई रब? अना रब्बीकुम अललआला फिरऔन का ये मुताकब्बिराना एलान सुनकर ज़मीनो आसमान लरज़ उठे। और उसके हलाक किए जाने की खुदा तआला से दुआ माँगी। हुक्म हुआ। के फिरऔन कुत्ते की मानिंद है। उसे तो सिर्फ एक लकड़ी ही काफी है। ऐ मूसा! तुम अपना असा ज़मीन पर डालो। मूसा अलेहिस्सलाम ने असा ज़मीन पर डाला। तो वो एक अज़ीम अज़दहा बन गया। हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ये असा लेकर फिरऔन के दरबार में पहुँचे। और उसे अपना ये करिश्मा दिखाया। तो वो डर कर अपने महल में भाग गया। मूसा अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। ऐ फिरऔन! अगर तू घर से ना निकलेगा तो मैं अपने असा को वहीं तेरे पास पहुँच जाने का हुक्म दूंगा। ये सुनकर फिरऔन बोला। ऐ मूसा! मुझे थोड़ी सी मोहलत मिलनी चाहिए। और इस क़द्र जल्द हलाक करना ना मुनासिब है। मूसा अलेहिस्सलाम से खुदा तआला ने फ़रमाया। ऐ कलीम! से मोहलत दे दो। क्योंके मैं हलीम हूँ हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम ने उसे चालीस रोज़ तक की मोहलत दे दी। मगर ज़ालिम ने अपना इंकारो कुफ्र फिर भी ना छोड़ा। पस खुदा तआला ने उसे दुनिया व आख़िरत के अज़ाब में पकड़ लिया। और यहाँ दुनिया में उसे अज़ाब ग़र्क में मुबतला किया। और आख़िरत में दोज़ख़ के अलमनाक अज़ाब में डाल दिया। (नुज़हत-उल-मजालिस, फस्ल फी अलज़िक्र, सफ़ा 33)

सबक़:- खुदा तआला बड़ा ग़फूर-उर-रहीम है। कोई शख़्स उम्र भर गुनाह करता है। मगर पल भर के लिए भी सच्चे दिल से तौबा कर ले तो खुदाए तआला उसके सारे गुनाह माफ फ़रमा देता है। और ये भी मालूम हुआ के तकब्बुर व गुरूर और अनानियत बहुत बुरी चीज़ है। इससे आदमी तबाह व हलाक हो जाता है। तकब्बुर खुदा ही को ज़ैबा है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के पैग़म्बरों को बड़े बड़े मोजज़ात अता हुए हैं। और जो अल्लाह

के पैगम्बरों (अलेहिम अस्सलाम) की इताअत नहीं करते। वो दुनिया व आखिरत के अज़ाब में मुबतला हो जाते हैं।

हिकायत नम्बर(676) गाय

एक आबिद का एक शख़्स पर गुज़र हुआ। जो गाय की पूजा कर रहा था। आबिद ने उससे फ़रमाया। ऐ नादान! इस गाय की पूजा ना कर और ये बुत परस्ती छोड़ कर मुसलमान हो जा और *लाइलाहा इल्लल्लाह मोहम्मदुर्रसूल अल्लाह* पढ़ ले। उस शख़्स ने कहा के मैं तो ये कलमा हरगिज़ ना पढ़ूंगा। आबिद ने उस गाय की तरफ़ मुंह करके कहा। ऐ गाय! बहक़ *लाइलाहा इल्लल्लाह* तू आग का शौला बन जा। चुनाँचे गाय हुक्म इलाही से आग का शौला बन गई। फिर इस आबिद ने उस शख़्स से कहा। देख अब भी कलमा पढ़ ले। वरना तू भी इसी तरह आग का शौला बन जाए। उस शख़्स ने फौरन पढ़ लिया और मुसलमान हो गया। (नुज़हत-उल-मजालिस, जिल्द अव्वल, सफ़ा 41)

सबक़:- अल्लाह के नेक बन्दे बुरा काम होता देखें। तो उससे मना करते हैं और ये भी मालूम हुआ के औलिया इक्राम की करामात बरहक़ हैं। और ये भी मालूम हुआ के ये गाय जिसे बअज़ लोग अपना "खुदा" समझते हैं। मुसलमान की नज़र में ये महज़ एक जानवर ही है। और मुसलमान के ताबे बल्के मुसलमान की गि़ज़ा। गोया मुशरिक का जो खुदा है। मुसलमान की वो गि़ज़ा है।

हिकायत नम्बर(677) एक राहिब का ख़्वाब

हज़रत मालिक बिन दीनार रहमत-उल्लाह अलेह एक रोज़ एक इसाई राहिब के गिर्जे के पास से गुज़रे। तो आपने अन्दर से राहिब की आवाज़ सुनी। जो यूं कह रहा था।

ऐ वो मुक़द्दस ज़ात जिसके हरम में डरने वाले और लोगों के सताए हुए पनाह लेते हैं। और तालिब लोग उसकी रहमत व नअेमत में रग़बत करते हैं। मैं तेरे इन्तिक़ाम से रिहाई की दरख़्वास्त करता हूँ। और अपने गुनाहों की माफी चाहता हूँ। इन गुनाहों की जिनकी लज़्ज़त मिट गई और मुशक़्क़त बाक़ी रह गई।"

मालिक बिन दीनार ये आवाज़ सुनकर राहिब के पास पहुँचे। और पूछा के ये इंक़िलाब कैसे आ गया। तो वो बोला। के मैं इसाई था लेकिन अब

नहीं रहा। बात ये हुई। के एक रात ख़्वाब में देखा। के कोई कहने वाला बड़े तसल्ली बख़्श लहजे में कह रहा है। के ऐ राहिब! भला तू कब तक शिर्क व कुफ़्र में मुबतला रहेगा। बिला शक ईसा (अलेहिस्सलाम) खुदा के बन्दों में से एक बरग़ज़ीदा बन्दे और उसके पैग़म्बर हैं। मगर वो खुदाया खुदा के बेटे हर गिज़ नहीं। मैंने पूछा। आप कौन हैं? तो फ़रमाया।

मैं गुनहगारों का शफीअ, आख़िर ज़मान का पैग़म्बर हूँ और वो रसूल हूँ, जिसकी बशारत ईसा अलेहिस्स्लाम ने भी दी। और जिसकी पेशगोई इंजील में भी मौजूद है। और मैं वो हूँ जिसकी नबुव्वत की गवाही मूसा (अलेहिस्सलाम) ने भी दी और जिसके ओसाफ तौरात ने भी बयान किए।"

फिर इस मुबारक शख़्स ने मेरे सीने पर अपना रहमत का हाथ फैरा। और ये दुआ पढ़ी। *अल्लाहुम्मा अलहम अब्दुकर्शाद व वफ़्क़लसदाद*

"यानी इलाही! तो अपे बन्दे के दिल में हिदायत की बात डाल दे और उसे रास्ती और सच्चाई की तौफीक़ अता फ़रमा।"

यूँही मैं नींद से चौंका तो मेरे दिल में इस्लाम की मोहब्बत मौजूद थी और अब मैं मुसलमान हूँ। अलहम्दू लिल्लाह अला ज़ालिका (नुज़हत-उल-मजालिस, जिल्द अव्वल, सफ़ा 41)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम आज भी ज़िन्दा और क़यामत तक के लिए हादी व रहबर हैं। और आप जिस पर नज़रो करम फ़रमा दें। उसकी काया पलट जाती है और वो दोज़ख़ से निकल कर जन्नत का मालिक बन जाता है।

हिकायत नम्बर (678) राहिब के सवालात

सालेहों का एक मर्दे मुजाहिद रास्ता भूल कर एक ऊँचे पहाड़ पर चढ़ गया। वहाँ उसने देखा, के इसाईयों का एक बहुत बड़ा मजमअ लगा हुआ है। और बीच में एक बड़ी कुर्सी लगी हुई है। मर्दे मुजाहिद ने उनसे इस इजतमअ और बीच में खाली कुर्सी होने की वजह पूछी। तो वो बोले के हमारे पास साल भर में एक दफा एक राहिब यहाँ आता है और कुछ वअज़ व नसीहत करता है। इसीलिए हम यहाँ जमा हैं और ये कुर्सी इस राहिब के लिए है। वो मर्दे मुजाहिद भी इस मजमअे में बैठ गए। थोड़ी देर में एक राहिब आया। और उस कुर्सी पर बैठ गया और चारों तरफ़ मुतजस्सुस नज़रें डाल कर कहने लगा। ऐ हाज़ीन! आज मैं तुम लोगों को वअज़ नहीं सुनाऊँगा। क्योंके इस वक़त तुम में उम्मते मोहम्मदिया का

कोई शख़्स मौजूद है। ये कहकर फिर उसने चारों तरफ़ नज़र डाली। और बाअवाज़ बुलंद कहा। ऐ मोहम्मद! मैं तुझे तेरे दीन की क़सम देता हूँ के हम सबके सामने आ खड़ा हो। ताके हम तुम्हें देखें। और तुझ से कुछ सवाल करें। वो मर्दे मुजाहिद फ़ौरन उठा। और राहिब के सामने आ खड़ा हो गया। और राहिब से कहा। मैं हूँ मोहम्मदी! फ़रमाईये, आप क्या पूछना चाहते हैं। राहिब ने कहा। मेरे चन्द सवालात हैं उनका जवाब दो। पहले ये बताओ के मैंने सुना है के खुदा तआला ने जन्नत में रंग रंग के फल और तरह तरह के मेवे पैदा किए हैं। क्या दुनिया में भी उन जैसे फल हैं? मर्दे मुजाहिद ने जवाब दिया। बेशक दुनिया में भी उन जैसे फल हैं। मगर वो जन्नत के फलों के साथ सिर्फ नाम और रंग में मुशाबहत रखते हैं। मज़े और लज़्ज़त में दुनिया के फलों को जन्नत के मेवों से कुछ मुनासबत नहीं। उसके बाद राहिब बोला। के मैंने सुना है के जन्नत में कोई ऐसा घर और बालाखाना नहीं। जिसमें शज्र तूबा की एक शाख़ मौजूद ना हो। क्या दुनिया में उसकी कोई नज़ीर है। मैंने कहा। हाँ देखो। जब आफ़्ताब आसमान के वस्त में पहुँचता है तो जिस तरह शज्र तूबा की शाखें तमाम मकानों में हर जगह पहुँची हुई हैं। इसी तरह इस वक़्त आफ़्ताब का नूर हर जगह फैल जाता है। राहिब ने कहा के जन्नत में चार नहरें हैं। जिनके मज़े तो मुख़्तलिफ हैं मगर उनका मुनब्बअ और जड़ जहाँ से वो निकली हैं एक ही है। क्या दुनिया में इसकी भी नज़ीर है? मुजाहिद बोला, बेशक इसकी मिसाल भी दुनिया में है। देखो कान का पानी कड़वा है। आँख का खारी। नाक का बूदार और मुंह का शीरीं। तो ये चारों पानी मज़े और बू में गो मुख़्तलिफ हैं मगर इन सबकी असल एक ही है। और वो है सर। उसके बाद राहिब बोला। के बस एक बात और पूछनी है। मैंने सुना है के अहले जन्नत तरह तरह के खाने खायेंगे और क़िस्म क़िस्म के मशरूबात नोश करेंगे। मगर उन्हें ना तो पैशाब की हाजत पड़ेगी ना पाखाना की। क्या दुनिया में उसकी भी कोई नज़ीर है? मर्दे मुजाहिद बोले के हाँ उसकी मिसाल भी है। देखो जब तक बच्चा माँ के पेट में रहता है तो वो जिस चीज़ के खाने की ख़्वाहिश माँ के दिल में डाल देता है और क़ुद्रते खुदा से वही ग़िज़ा बच्चा के पेट में पहुँच जाती है। मगर जब तक वो पेट में रहता है ना तो पायखाना ही करता है और ना ही पैशाब!

इसके बाद राहिब खामोश हो गया। और लोगों से कहने लगा। लो आज मेरा वअज़ ये है के *लाइलाहा इल्लल्लाह मोहम्मदर्रसूल अल्लाह*

तुम भी मेरी तरह यही कलमा पढ़ लो। चुनाँचे वो सब कलमा पढ़कर मुसलमान हो गए। (नुज़हत-उल-मजालिस, जिल्द अव्वल, सफ़ा 45-46)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूलों और मुजाहिदों के इल्मो इर्फान की बदौलत हज़ारों को दौलते ईमान मिल जाती है।

हिकायत नम्बर(679) नफ़्स की मुख़ालफत

मिस्र में एक राहिब रहता था। जिसे मुकाश्फा हसिल था। और उसके मुकाश्फे का बड़ा चर्चा था। वहाँ के एक मुसलमान आलिम ने ये सोचा के उसके मुकाश्फे के चर्चे से कहीं ऐसा ना हो के अवाम मुसलमान धोका खा जायें और उसके दाम में फंस जायें। इसलिए बेहतर है के इस रहिब को क़त्ल कर दिया जाए। चुनाँचे वो आलिम एक ख़ंजर लेकर इस राहिब के मकान पर पहुँचे और उसके दरवाज़े को खटखटाया। राहिब ने अन्दर से आवाज़ दी। के “ऐ मुसलमानों के आलिम व रहबर! खंजर को वहीं डाल दो। और खुद अन्दर आ जाओ। आलिम ने खंजर को तो वहीं छोड़ा और ख़ुद अन्दर चले गए। और राहिब से पूछा के ये तो बताओ। के ये मुकाश्फा तुम्हें हासिल कैसे हुआ। राहिब ने कहा। नफ़्स की मुखालफत करने से। आलिम ने फ़रमाया। और तुम्हारा नफ़्स मुसलमान हो जाने पर खुश है या नहीं? राहिब बोला। नहीं। आलिम ने कहा। तो नफ़्स की ये मुखालफत अभी बाक़ी है। नफ़्स की इस मामले में भी मुखालफत करो। और कलमा पढ़ लो। चुनाँचे ये बात राहिब के दिल पर असर कर गई और वो कलमा पढ़कर मुसलमान हो गया। (नुज़हत-उल-मजालिस, जिल्द, अव्वल, सफ़ा 187)

सबक़:- नफ़्स की मुखालफत करने से एक फाफिर को भी ये मनसब मिल जाता है के वो छुपी हुई बातों को जान जाता है। मालूम हुआ के दिल की बातें जान लेना और पौशीदा बातों की ख़बर दे देना ये कोई कमाल नहीं कमाल ये है के हुज़ूर मोहम्मद रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की ग़ुलामी इख़्तियार की जाए। और ये भी मालूम हुआ के जब एक काफिर को भी अपने इसतदराज से ये इल्म हो जाता है। के उसके दरवाज़े पर कौन खड़ा है और उसके पास क्या चीज़ हैं फिर अगर कोई शख़्स सय्यद-उल-अंबिया सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के मुतअल्लिक़ यूं कहने लगे के उन्हें दीवार पीछे की चीज़ का भी इल्म नहीं होता। तो वो शख़्स किता बड़ा रसूले दुश्मन और गुमराह है।

हिकायत नम्बर (680) बातिनी क़िला

जंग फारस में एक क़िले को मुसमानों ने घेर लिया। और मजूसी उसके अन्दर महसूर हो गए। इस क़िले में एक हसीन औरत थी। इस औरत ने मुसलमानों के लश्कर में एक हसीन मुसलमान को देखा। और इस पर फ़रीफ़्ता हो गई। इस औरत ने अपना एक क़ासिद भेजा। ताके वो उस मुसलमान को इस औरत के पास ले आए। क़ासिद ने जब इस शख़्स को इस का पैग़ाम दिय तो वो बोला। के तुम उसे जाकर कह दो। के तू अपना ज़ाहिरी और बातिनी क़िला सिर्फ खुदा के लिए हमारे सपुर्द कर दे। औरत ने जवाब दिया। के ज़ाहिरी क़िला तो मैं समझ गई। मगर बातिनी क़िले को मैं नहीं समझी। के इससे क्या मुराद है। उसने जवाब भेजा के इसका मतलब ये है के तू अपना दिल भी ख़ास खुदा के लिए सोंप दे। ये बात सुनकर औरत ने बेसाख़्ता कहा के अच्छा मैंने अपना दिल ख़ुदा को सोंप दिया। उसके बाद उस औरत ने क़िला खोल दिया। और मुसलमानों का लश्कर अन्दर चला गया। औरत ने उस जवान मुसलमान से कहा के तुम्हारे हाथ पर मुसलमान होना चाहती हूँ। उस नोजवान ने कहा के चलो हमारे सरदार हज़रत अब्दुल्लह बिन उमर के पास। उनके हाथ पर मुसलमान होना। चुनाँचे जब उसे हज़रत अमीर लश्कर हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर के पास लाया गया तो वो कहने लगी के मैं उनसे भी बड़े शख़्स के हाथ पर मुसलमान होंगी। आपने फ़रमाया। मेरे वालिद हज़रत अमीर-उल-मोमिनीन फारूक़े आज़म के हाथ पर? उसने कहा। हाँ! चुनाँचे उसे हज़रत उमर के पास ले गए। उसने हज़रत उमर से भी यही कहा के मैं आपसे भी बड़े शख़्स के हाथ पर मुसलमान होंगी! हज़रत उमर ने फ़रमाया। उसे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की क़ब्र अनवर पर ले चलो। चुनाँचे उसे रोज़ा-ए-अनवर के पास लाया गया। उस औरत ने जूहीं क़ब्र अनवर को देखा। कलमा-ए-शहादत पढ़कर उसी वक़्त जान दे दी। (नुज़हत-उल-मजालिस, जिल्द अव्वल, सफ़ा 201)

सबक़:- सच्चे मुसलमान ज़ाहिरी क़िलों के साथ साथ बातिनी क़िले भी फतह करते हैं। और उन की नज़रों से अग़यार के दिलों में भी इंक़िलाब आ जाता है। और वो अपने ईमान। ख़लूस और हुस्ने किरदार के बाइस दीन व दुनयिा के बादशाह होते हैं।

हिकायत नम्बर (681) नमाज़ की बर्कत

एक शख़्स एक औरत पर आशिक़ हो गया। और उस औरत वे अपनी ख़्वाहिश ज़ाहिर की। इस औरत ने इस वाक़ेये की अपने ख़ाविंद को इत्तिला दी। उसका ख़ाविंद नेक आदमी था। उसने अपनी बीवी से कहा के तुम उसे कह दो के अगर तुम चालीस रोज़ तक मेरे ख़ाविंद के पीछ नमाज़ पढ़ोगे तो जो तुम चाहोगे मैं मंज़ूर कर लूंगी। चंनाँचे उसने अपने ख़ाविंद की बताई हुई बात उस शख़्स से कह दी। वो शख़्स बड़ा खुश हुआ उसने चालीस दिन तक बिला नाग़ा उसके ख़ाविंद के साथ नमाज़ पढ़ी। जब चालीस दिन हो गए। तो औरत ने बुला कर पूछा के बताओ तुम्हारा क्या मतलब है। वो बोला। बस अब मुझे तुम्हारी कोई हाजत नहीं। मैंने जो कुछ पा लिया है उसके होते हुए अब मेरी कोई बड़ी ख़्वाहिश बाक़ी नहीं रही। औरत ने ये सारा क़िस्सा ख़ाविंद से कहा। तो वो बोला। नमाज़ के मुतअल्लिक़ इर्शादे हक़ है के *इन्नसलाता तनही अनफाहशाई व मुनकर।* नमाज़ नमाज़ बुरी बातों से रोकती है। मैंने ये उसका इलाज क्या है। (नुज़हत-उल-मजालिस, जिल्द अव्वल, सफ़ा 204)

सबक़:- नमाज़ बड़ी बर्कतों की चीज़ है। और नमाज़ से बुरी बातें छूट जाती हैं।

लतीफा:

और अगर कोई कहे। के हम ने ऐसा भी देखा है के बअज़ लोग नमाज़ पढ़ने के बावजूद बुरी बातों से किनारा कश नहीं हैं। तो उसका जवाब समझने के लिए एक लतीफा सुनिये।

एक भिकारी ने एक रईस से एक भेंस तलब की। रईस ने कहा, मियाँ भिकारी! तुम चालीस रोज़ नमाज़ पढ़ते रहो और जाब चालीस दिन पूरे हो जायें तो मुझ से भेंस ले जाना। चुनाँचे उस भिकारी ने चालीस रोज़ नमाज़ पढ़ना जारी रखी। और 41वें रोज़ उस रईस के पास आकर भेंस तलब करने लगा। रईस ने जवाब दिया। मियाँ अपनी राह लो। कैसी भेंस? मैंने तो तुम्हें नमाज़ की आदत डालने के लिए ये बात कही थी। भिकारी ने कहा। अच्छा अगर यही बात है तो जाइये। मैंने भी चालीस रोज़ सारी नमाज़ बे वज़ू ही पढ़ी हैं। मालूम हुआ के उसकी नमाज़ ही ना थी। नमाज़ वही है जो अपनी शरायत व अरकान के साथ पढ़ी जाए। और ख़लूस, खुशू और खुज़ू से अदा की जाए। ऐसी नमाज़ यक़ीनन बुरी बातों से रोक देती है। और अगर नमाज़ से उसका फायदा मुरत्तब ना हो तो ये नमाज़ का क़सूर नहीं। बल्के तरीक़ अदा

का क़सूर है। एक मिसाल और सुनिये हकीम साहब ने आपको बताया के हर रोज़ सुबह दस बादाम खा लिया करो। उससे तुम्हारी कमज़ारी की तमाम शिकायात दूर जाऐंगी। अब आपने हर रोज़ दस बादाम बग़ैर तोड़े के साबित ही निगलने शुरू कर दिए तो बजाए तक़वीयत के आंतें छिलने लगीं। और लहू के दस्त आने लगे। तो फ़रमाईये ये हकीम साहब या बादामों का क़सूर या खुद आपकी तरीके़ इस्तेमाल का क़सूर है? नमाज़ को पूरे खुशू व खुज़ू और उसके जुमला शरायत व अरकान के साथ अदा कीजिए। फिर देखिये। उसके किस क़द्र फवायद हैं।

हिकायत नम्बर (682) माँ

एक शख़्स ने ख़्वाब में देखा के हज़रत अबु इसहाक़ रहतम-उल्लाह अलेह की दाढ़ी मुबारक याक़ूत और जवाहरात से मरसअे है। उस शख़्स ने सुबह हज़रत अबु इसहाक़ के पास पहुँच कर ये ख़्वाब बयान किया। तो हज़रत अबु इसहाक़ फ़रमाने लगे। तूने सच कहा है। मैंने कल अपनी माँ के क़दम चूमे थे। ये उसी की बदौलत है। (नुज़हत-उल-मजालिस, जिल्द अव्वल, सफ़ा 369)

सबक़:- माँ का बहुत बड़ा दर्जा है। उसके क़दमों तले जन्नत है और उसके क़दम चूमने से नूरानियत व बर्कत हासिल होती है।

हिकायत नम्बर (683) शाही फ़रमान

ख़लीफा हारून अल रशीद के बेटे मामून के अहद में एक मुज्रिम शहर से भाग गया। ख़लीफा ने उसके भाई को पकड़ कर मंगाया और कहा के अपने भाई को हाज़िर करो। वरना तुम्हें क़त्ल कर दिया जाएगा। उसने अर्ज़ किया के ऐ ख़लीफा! अगर तुम्हारा कोई मातहत हाकिम किसी को क़तल करना चाहे और तो हुक्म दे के उसे छोड़ दो। तो वो छोड़ेगा या नहीं? मामूँ रशीद रे कहा के हाँ छोड़ देगा। तो मैं तुम्हारे सामने इस बड़े बादशाह का हुक्म पेश करता हूँ। जिसकी इनायत से तू हाकिम बना है। के तू मुझे रिहा कर दे। मामूँ ने कहा। वो हुक्म मुझे सुनाओ। कहा वो अल्लाह का ये इर्शाद है के *ला तज़ीरू वज़ीरातुन विज़्रा उख़रा* "यानी किसी को दूसरे के गुनह के बदले ना पकड़ो"

मामूँ ये सुनकर बड़ा मुतासिर हुआ। और रोते हुए हुक्म दिया के उसे छोड़ दो? उसने मुहक्किम और अटल हुक्म पेश कर दिया है।

(तालीम-उल-अख़लाक़, सफ़ा 483)

सबक़:- बड़े से बड़ा हाकिम भी हो तो उसे क़ुरआने पाक के अहकाम के आगे सर तसलीम ख़म कर देना चाहिए और ये के बे गुनाहों को कभी पकड़ना और सताना नहीं चाहिए।

हिकायत नम्बर(684) सबसे ज़्यादा अहमक़

सुलतान मेहमूद ग़ज़नसी रहमत-उल्लाह अलेह ने एक दफ़ा अपने अरकाने दौलत से कहा के एक ऐसा शख़्स ढूंड कर लाओ। जो सबसे ज़्यादा अहमक़ हो। ये सुनकर सुलतानी मुक़र्रिब तलाश में निकल खड़े हुए। ताके किसी बेवक़ूफ को ढूंड निकालें। आख़िर उन्होंने एक शख़्स को देखा जो एक ऊँचे दरख़्त की शाख़ पर बैठ कर उस शाख़ की जड़ पर कुलहाड़ा मार रहा था। पैश्तर इसके के वो शाख़ जड़ से कटती और वो शख़्स नीचे गिरकर मर जाता। उस शख़्स को दरख़्त पर से उतार लिया गया। और पकड़कर उसे सुलतान मेहमूद के पास ले आए। और अर्ज़ किया हुज़ूर! ये शख़्स बड़ा बेवक़ूफ और अहमक़ है। उसे हम ने इस हालत में पाया है के एक बड़े दरख़्त की शाख़ पर बैठा उसी शाख़ की जड़ पर कुलहाड़ा मार रहा था। सुलतान ने कहा। वाक़ई ये शख़्स बड़ा अहमक़ है। मगर ये बताओ के उससे भी ज़्यादा अहमक़ और कौन हो सकता है? अर्ज़ किया। हुज़ूर खुद फ़रमाएँ। सुलातन ने जवाब दिया। के वो हाकिम सबसे ज़्यादा अहमक़ है। जो ज़ुल्मो सितम से रूइय्यत को तबाह कर दे। और खुद उसके सबब बदबख़्ती और परेशानी के गढ़े में गिरे। (तालीम-उल-अख़लाक़, सफ़ा 496)

सबक़:- रूइय्यत की मिसाल जड़ की है। और बादशाह दरख़्त के मानिंद होता है। और दरख़्त जड़ की पायदारी से सलामत रहता है। इस जड़ को जितना मज़बूत किया जाएगा। दरख़्त उतना ही महफ़ूज़ रहेगा। और जब जड़ कमज़ोर हो जाए तो हवा का एक झोंका भी उस दरख़्त को गिर सकता है। पस हर साहबे इक़्तिदार को अपनी रिआया का खयाल रखना चाहिए।

हिकायत नम्बर(685) मलिक सालेह और एक दुरवैश

मलिक सालेह बादशाह शाम का मामूल था के रात को एक ग़ुलाम के साथ मस्जिदों, मक़्बरों और मज़ारों में जाता और हर एक का हाल मालूम करता। एक रात मौसमे सर्मा में गश्त करता हुआ एक मस्जिद में पहुँचा। देखा के एक दुरवैश बिरहना है। और सर्दी से कांप रहा है। और कह रहा है के या

अल्लाह! दुनिया के बादशाह तेरी अता की हुई नअेमत को नफ़्स की हर्स व हवा और लज़्ज़त में बर्बाद कर देते हैं। मोहताजों, ज़ईफों की हालत से बे ख़बर हैं। अगर वो क़यामत के दिन बहिश्त में गए। तो तेरी इज़्ज़तो जलाल की क़सम! मैं वहाँ क़दम ना रखूंगा।

मलिक सालेह ये बात सुनकर आगे बढ़ा और दीनारों भरी थेली आगे रख दी। और रोते हुए कहा के मैंने सुना है के दुरवैश बहिश्त के बादशाह होंगे। आज हम बादशाह हैं और सुलह के लिए तुम्हारे पास आए हैं। क्योंके कल तुम बादशाह होगे। अज़राहे करम उस दिन हम से दुश्मनी ना करना। बल्के इनायत व मेहरबानी से पेश आना। मैं उन बादशाहों में से नहीं हूँ। जो ग़रीबों से मुंह फैर लेते हैं। (तालीम-उल-अख़लाक़, सफ़ा 506)

सबक़:- बड़े बड़े लोगों को मोहताजों और ग़रीबों का खयाल रखना चाहिए। और अपनी दौलत से ग़रीब लोगों की ज़रूरतों को भी पूरा करना चाहिए। जो लोग दौलत के नशे में ग़ुर्बा और मोहताजों का खयाल नहीं रखते वो बहुत बड़े ग़ाफिल और ना आक़्बत अंदेश हैं।

हिकायत नम्बर (686) एक लड़के की दानाई

मअन बिन ज़ायदा एक अमीर शख़्स और मेहमान नवाज़ी में बड़ा मश्हूर था। उसके पास उसकी दुश्मन क़ौम के कई हज़ार अफ़्राद असीर करके लाए गए। उसने हुक्म दिया के सब को क़त्ल कर दो। उस क़ौम में से एक लड़का खड़ा हुआ। और कहा। ऐ अमीर! मैं प्यासा हूँ। मुझे क़त्ल तो हो ही जाना है। मगर मुझे पहले पानी तो पिला दो। मअन ने हुक्म दिया के उसे पानी पिला दिया जाए। उसने पियाला हाथ में लिया। और कहा। के ऐ अमीर! मेरे लिए डूब मरने का मुक़ाम है। और मुरव्वत का मुक़ाम नहीं। के मैं तो पानी पी लूं। और मेरी क़ौम प्यासी मरे। आपकी दरया दिली से तवक़्क़ो है। के उनको भी पानी पिलाने का हुक्म दीजिए। चुनाँचे सबको पानी पिला दिया गया। अब लड़का फिर बोला। के ऐ अमीर! अब तो हम सब तेरे मेहमान हो गए हैं। और मेहमानों को मारना करीमों की शान नहीं बल्के उनकी इज़्ज़त करने का हुक्म है। मअन लड़के की फ़ुसाहत व दानाई पर मुताज्जिब हुआ और सब क़ैदियों को रिहा कर दिया। (तालीम-उल-अख़लाक़, सफ़ा 508)

सबक़:- अक़्ल व फ़ुसाहत और मौक़ा व महल के मुताबिक़ गुफ़्तगू करने से बड़े बड़े फ़वायद हासिल होते हैं। और खुदा तरस अफ़्राद हमेशा लुत्फ़ो करम से काम लेते हैं।

हिकायत नम्बर(687) नोशेरवाँ और एक बूढ़ी औरत

नोशेरवाँ ने एक बड़ा आलीशान महल तामीर कराया। और उसकी तकमील के बाद अपने वज़ीरों अमीरों को दिखाया। और पूछा के उसमें कोई कजी तो नहीं? अर्ज़ की गई। के ये महल ऐसा अज़ीम-उश्शान है के चश्मे फलक ने भी ऐसा महल ना देखा होगा मगर उसमें एक नुक्स की बात ये है के उसके गोशे में एक झोंपड़ी है जिसके रोज़न से धुआँ निकलकर सारे ऐवान को सियाह कर रहा है। उसे उठा देना चाहिए ताके ये महल बिलकुल बे दाग़ हो जाए।

नोशेरवाँ ने कहा। के ये झोंपड़ी एक बूढ़ी औरत की है जिसने सारी उम्र उसी झोंपड़ी में बसर की है। अब वो क़ब्र में पाँव लटकाए बैठी है। मैंने ये महल शुरू करते वक़्त उस बुढ़िया को कहला भेजा था के ये जगह मेरे हाथ बेच दे। और मुंह माँगी क़ीमत ले ले। या उसके अवज़ जैसा अच्छा चाहे कोई मकान ले ले। उसने जवाब दिया के ऐ बादशाह! ये जगह मेरी मलकियत है। उसी में मैं पैदा हुई और इससे मैं मानूस हो गई हूँ मैं तो ये देखकर के तेरे पास इतना बड़ा मुल्क है बुरा नहीं मनाती। और तू इस ग़रीब की कुटिया देखना गवारा नहीं करता। मैं इस बात से मुतास्सिर होकर खामोश हो गया। हत्ता के महल बन कर तैयार हो गया। अब जो उस कुटिया से धुआँ निकल कर खराब करने लगा तो मैंने पैग़ाम भेजा के धुआँ निकालती हो। तो बोली के अपने लिए खाना पकाती हूँ। मैंने उसके लिए भुने हुए मुर्ग़ वग़ैरा समेत ख़्वान इरसाल किया। इस पैग़ाम के साथ के ऐ माँ! मैं हर रोज़ तुम्हें क़िस्म क़िस्म के ख़्वान भेजता रहूंगा। तू अपनी झोंपड़ी में आग लगाना छोड़ दे। बुढ़िया ने जवाब दिया। के मुल्क भर में कितने ही आदमी फाक़ा ज़दा दिल जले रो रहे हैं और मैं भुने हुए मुर्ग़ खाऊँ, ये जायज़ नहीं। मैं अपने खुदा से डरती हूँ के सत्तर साल तो जौ की रोटी खाई। और अब भुने हुए मुर्ग़ खाने लगूं। मेरी कुटिया को बरक़रार रहने दे के ये तेरे अद्ल के महल की ज़ीनत है। उमरा जब देखेंगे के तूने ग़रीब की झोंपड़ी पर भी हाथ डालना पसंद नहीं किया। तो वो रिआया के इमलाक पर दस्त दराज़ी से बाज़ रहेंगे। एक और बात भी है के तेरा मेहल इस ना पायदार दुनिया से कुछ मुद्दत के बाद वीरान हो जाएगा। मगर मेरी झोंपड़ी की हिकायत तेरे अद्ल की शाहिद रहेगी। लिहज़ा मैंने इस बात को पसंद किया और बुढ़िया

की हमसायगी को मंज़ूर कर लिया। उस बुढ़िया की एक गाय भी थी। वो इसे महल के फर्श पर से गुज़ार कर हर सुबह बाहर जंगल में चराने ले जाती थी। और शाम को वापस आती थी। इस आमदोरफ्त से फर्श खराब हो जाता था। एक दिन एक नदीम ने उससे कहा के ऐ बुढ़िया! तू इस हर्कत से बाज़ आ। के शाही महल की खूबसूरती में धब्बा लगता है। उसने जवाब दिया के बादहशाही नामूस पर ज़ुल्म से धब्बा लगता है या अद्ल से। मैं जो कुछ कर रही हूँ बादशाह की नेक नामी के लिए रही हूँ (तालीम-उल-अख़लाक़, सफ़ा 512)

सबक़:- एक ग़रीब को भी दुनिया में रहने का वैसा ही हक़ है जैसा के किसी अमीर को। और मालूम हुआ के आदिल बादशाह अपनी ग़रीब रिआया का हर तरह खयाल रखते हैं। और ये भी मालूम हुआ के अपने पड़ोसियों से चाहे वो ग़रीब हों नेक दिल अफ़राद नेक सलूक करते हैं। और ये भी मालूम हुआ के अद्लो इंसाफ से रहती दुनिया तक नाम रोशन रहता है। चुनाँचे मज़कूरा बाला बुढ़िया से अद्लो इंसाफ करने के बाइस नौशेरवाँ का अद्लो इंसाफ आज तक सुनहरी हर्फों से लिखा हुआ मौजूद है। और ज़बानों पर जारी है।

हिकायत नम्बर(688) एक आबिद

अगली उम्मतों में एक बन्दा-ए-हक़ बीच समुंद्र में एक पहाड़ पर जहाँ इंसान का गुज़र ना था। रात दिन इबादते इलाही में मशग़ूल रहते। रब्बे अज़्ज़ोजल ने इस पहाड़ पर उनके लिए एक अनार का दरख़्त उगाया। और एक शीरीं चश्मा निकाला। अनार खाते और पानी पीते। और इबादत करते। चार सौ बरस इसी तरह गुज़ारे। ज़ाहिर है के जब इंसान बिलकुल तन तनहा ज़िन्दगी बसर करे। और कोई दूसरा ना हो। तो ना झूट बोल सकता है। ना किसी की ग़ीबत कर सकता है। ना चोरी ना कोई और क़सूर कर सकता है। जिसका ताल्लुक़ दूसरे से हो। और अक्सर गुनाह वही हैं। ग़र्ज़ जब उनके नज़अ का वक़्त आया। हज़रत इज़्राईल अलेहिस्सलाम तशरीफ़ लाए। उन्होंने कहा इतनी इजाज़त दीजिए। के मैं वज़ू ताज़ा करके दो रकअत नमाज़ पढ़ लूं जब दूसरी रकअत के दूसरे सज्दे में जाऊँ। रूह क़ब्ज़ कर लेना। उन्होंने फ़रमाया। मैं तुम्हारे लिए इतनी इजाज़त लाया हूँ। उन्होंने वज़ू किया। दो रकअत नमाज़ पढ़ी। दूसरी रकअत के दूसरे सज्दे में इन्तिक़ाल हुआ। बदन उनका सलामत है। अब

तक वैसे ही सज्दे में हैं। जिब्राईले अमीन अलेहिस्सलात वस्सलाम ने हुज़ूरे अक़्दस सल-लल्लाहो ताअला अलेह व सल्लम से अर्ज़ की। हम जब आसमान से उतरते या आसमान को जाते हैं। उन्हें इसी तरह सरसबसजूद देखते हैं। ये बन्दा-ए-खुदा क़यामत के रोज़ जब हाज़िर होंगे। इबादत के सिवा नामा-ए-आमाल में गुनाह तो कोई होगा ही नहीं हिसाब व मीज़ान की क्या हाजत रब्बुल इज़्ज़त इर्शाद फ़रमाएगा। *इज़हबू बिअब्दी इला जन्नाती बिरहमती।* "यानी मेरे बन्दे को जन्नत में मेरी रहमत से ले जाओ" उनके मुंह से निकलेगा। ऐ रब मेरे! बल्के मेरे अमल से। यानी मैंने अमल ही ऐसे किए हैं जिनसे मुसतहिक़ जन्नत हूँ। इर्शाद होगा। लौटाओ और मीज़ान खड़ी करों उसकी चार सौ बरस की इबादत एक पल्ले में और हमारी नअेमतों से जो हम ने उसे चार सौ बरस में दीं। सिर्फ आँख की नअेमत को दूसरे में रखो। वज़न किया जाएगा। उनके चार सौ बरस के आमाल से एक ये नअेमत कहीं ज़्यादा होगी। इर्शाद होगा *इज़हबू बिअब्दी इला नारी बिअदली* "मेरे बन्दे को मेरे जहन्नम में मेरे अद्ल से ले जाओ" इस पर घबरा कर अर्ज़ करेंगे। नहीं ऐ रब मेरे! बल्के तेरी रहमत से। इर्शाद होगा *इज़हबू बिअब्दी इला जन्नती बिरहमती* "मेरे बन्दे को मेरी रहमत से ले जाओ।" (मलफ़ूज़ात अला हज़रत बरेलवी क़ुद्स सरह, जिल्द दोम, सफ़ा 82)

सबक़:- अपने आमाल पर कभी घमंड ना करना चाहिए और हर हाल में अल्लाह की रहमत पर नज़र करनी चाहिए।

हिकायत नम्बर (689) इल्म की बर्कत

एक हदीस में है बाद नमाज़ अस्र शियातीन समुंद्र पर जमा इबलीस का तख़्त बिछता है। शियातीन की कारगुज़ारी पेश होती है। कोई कहता है। उसने इतनी शराबें पिलाईं। कोई कहता है। उसने इतने ज़िना कराए। सब की सुनें। किसी ने कहा। आज उसने फलाँ तालिब इल्म को पढ़ने से बाज़ रखा। सुनते ही तख़्त पर से उछल पड़ा। और उसको गले से लगाया। और कहा अनता। अनता तूने काम किया। तूने काम किया। और शियातीन ये कैफियत देखकर जल गए के उन्होंने इतने बड़े बड़े काम किए। और उसको इतनी शाबाशी दी। इबलीस बोला। तुम्हें नहीं मालूम। जो कुछ तुम ने किया। सब उसी का सदक़ा है। अगर इल्म होता तो वो गुनाह ना करते। बताओ कौन सी जगह है जहाँ सबसे बड़ा आबिद रहता है। मगर वो आलिम नहीं। और

वहाँ एक आलिम भी रहता है। उन्होंने एक मुक़ाम का नाम लिया। सुबह को क़ब्ल तलू आफताब शियातीन को लिए हुए उस मुक़ाम पर पहुँचा। और शियातीन मख़्फी रहे। और ये इंसान की शक्ल बनकर रास्ता पर खड़ा हो गया। आबिद साहब तहज्जुद की नमाज़ के बाद फज्र के वास्ते मस्जिद की तरफ़ तशरीफ़ लाए। रास्ते में इबलीस खड़ा ही था। सलाम अलेकुम व अलेकुम अस्सलाम। हज़रत मुझे एक मसला पूछना है। आबिद साहब ने फ़रमाया। जल्द पूछा। मुझ नमाज़ को जाना है। उसने जैब से एक छोटी सी शीशी किाल कर पूछा। अल्लाह तआला क़ादिर है। के इन समावात व अर्ज़ को इस छोटी सी शीशी में दाख़िल कर दे। आबिद साहब ने सोचा और कहा। कहाँ ज़मीनो आसमान और कहाँ छोटी सी शीशी। बोला। बस यही पूछना था। तशरीफ़ ले जाइये। और शियातीन से कहा। देखो मैंने उसकी राह मार दी। उसको अल्लाह की क़ुद्रत ही पर ईमान नहीं। इबादत किस काम की।

तुलू आफ्ताब के क़रीब आलिम साहब जल्दी करते हुए तशरीफ़ लाए। उसने कहा अस्सलाम अलेकुम व अलेकुम अस्सलाम मुझे एक मसला पूछना है। उन्होंने फ़रमाया। पूछो नमाज़ का वक़्त कम है। उसने वही सवाल किया। फ़रमाया मलऊन! तू इबलीस मालूम होता है। अरे वो क़ादिर है के ये शीशी तो बहुत बड़ी है। एक सूई के नाके के अन्दर अगर चाहे तो करोड़ों आसमान और ज़मीन दाख़िल कर दे *इन्नल्लाहा अला कुल्ली शैइन क़दीर*। आलिम साहब के तशरीफ़ ले जाने के बाद शियातीन से बोला। देखा ये इल्म ही की बर्कत है। (मलफूज़ात, जिल्द सोम, सफ़ा 22)

सबक़:- इल्मे दीन हासिल करना चाहिए। बग़ैर इल्मे दीन के शैतान से बचना बड़ा मुश्किल है।

हिकायत नम्बर (690) दिल की बात

एक साहब औलियाऐ इक्राम रहमत-उल्लाह तआला अलेहिम अजमईन में से थे। आपकी ख़िदमत में बादशाहे वक़्त क़दम बोसी के लिए हाज़िर हुआ। हुज़ूर के पास कुछ सेब नज़्र में आए थे। हुज़ूर ने एक सेब दिया। और कहा खाओ। अर्ज़ किया। हुज़ूर भी नोश फ़रमाएँ। आपने भी खाए। और बादशाह ने भी। उस वक़्त बादशाह के दिल में खयाल आया के ये जो सब में बड़ा अच्छा खुश रंग सेब है। अगर अपने हाथ से उठा कर मुझ को दे देंगे। तो जान लूंगा। के ये वली हैं। आपने वही सेब उठा कर फ़रमाया। हम मिस्र में गए थे

वहाँ एक जगह जल्सा बड़ा भारी था। देखा के एक शख़्स है। उसके पास एक गधा है। उसकी आँखों पर पट्टी बंधी है। एक चीज़ एक शख़्स की दूसरे के पास रख दी जाती है। उस गधे से पूछा जाता है गधा सारी मजलिस में दौरा करता है जिसके पास होती है सामने जाकर सर टेक देता है। ये हिकायत हम ने इसलिए बयान की के अगर ये सेब हम ना दें तो वली ही नहीं और अगर दे दें तो इस गधे से बढ़कर क्या कमाल किया। ये फ़रमा कर सेब बादशाह की तरफ़ फैंक दिया। (मलफ़ूज़ात, जिल्द 4, सफ़ा 10)

सबक़:- दिल की बात बता देना कोई कमाल नहीं। कमाल तो ये है के शरीअत का इत्तिबा किया जाए।

हिकायत नम्बर (691) खोशा-ए-जन्नत

एक दफा हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने नमाज़ पढ़ते हुए अपना हाथ मुबारक आगे बढ़ाया। जैसे के आप कुछ पकड़ना चाहते हैं। फिर आपने अपना हाथ मुबारक रोक लिया। सहाबा-ए-इक्राम ने अर्ज़ किया। या रसूल अल्लाह! हम ने आपको अपना हाथ मुबारक आगे बढ़ाते हुए और फिर रोकते हुए देखा। ये क्या बात थी? हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया।

इन्नी रायतुल जन्नाता फतानावालत उनक़ूदन लो अख़ज़तुहू लाकलतुम मिनहू मा बक़ीतुद्दुनिया "मैंने जन्नत को देखा और जन्नत के एक खोशे को पकड़ा अगर उस खोशे को मैं तोड़ लाता। तो तुम रहती दुनिया तक इस खोशे से खाते रहते" (मुस्लिम शरीफ, जिल्द, सफ़ा 298)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मुख़्तार व मुतसर्रूफ फिलकवान हैं। जन्नत सातों आसमानों के ऊपर वाक़ै है। मगर हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की मुबारक आँखें मदीना मुनव्वरह की ज़मीन से सातवें आसमानों की भी ऊपर की चीज़ को देख लेती हैं। फिर जो शख़्स बग़ैर ऐनक के सात इंच दूर की भी चीज़ ना देख सके। वो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की मिस्ल बने तो किस क़द्र जहालत है। और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मदीना मुनव्वरह में रह कर सातों आसमानों से भी परे की चीज़ को पकड़ सकते हैं। और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलह व सल्लम जन्नत के मालिक हैं। इसी लिए तो आपने जन्नत में हाथ बढ़ाकर जन्नत के खोशे को पकड़ लिया। वरना पराये

घर में कोई हाथ डाल कर तो दिखाए और किसी दूसरे की चीज़ कोई उठा कर तो दिखाए। और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मुख़्तार भी हैं। इसी लिए तो फ़रमाया। के अगर मैं चाहता तो खोशे को तोड़ लाता।

हिकायत नम्बर(692) जन्नत की रफ़ाक़त

हज़रत रबीआ रज़ी अल्लाहो अन्ह हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदकमत में रात के वक़्त रहा करते थे। और हुज़ूर की ख़िदमत किया करते थे। एक रात हज़रत रबीआ ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में वज़ू के लिए पानी हाज़िर किया। तो हुज़ूर सल-लल्लाहो आला अलेह व सल्लम का दरयाऐ करम जोश में आ गया। और हज़रत रबीआ से आपने फ़रमाया। सल माँग। हज़रत रबीआ ने जो देखा के आक़ा का दरयाऐ करम जोश में है। तो अर्ज़ किया। *असअलूका मुराफक़तूका फिल जन्नत* "मैं जन्नत में आपकी रफ़ाक़त आपसे माँगता हूँ।"

यानी या रसूल अल्लाह! जन्नत दीजिए और ना सिर्फ जन्नत बल्के जन्नत में जहाँ आप हों। वहाँ अपने साथ रखिये। हुज़ूर सल-लल्लाहाओ तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया।

ओ ग़ैरू ज़ालिका कुछ और भी?

अर्ज़ किया। नहीं या रसूल अल्लाह! बस यही हाजत है। पूरी कर दीजिए। हुज़ूर ने फ़रमाया। अच्छा तो कसरत सजूद से मेरी एआनत करते रहे यानी नमाज़ पढ़ते रहना। (मिश्कात शरीफ, सफ़ा 84)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लहो तआला अलेह व सल्लम दाता हैं। जभी तो फ़रमाया "माँग" वरना जो दे ना सके वो ऐसा कब कहता है? और ये भी मालूम हुआ के सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान का ये अक़ीदा था के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम सब कुछ अता फ़रमा सकते हैं। हत्ता के जन्नत भी दे सकते हैं। और ना सिर्फ जन्नत बल्के जन्नत का आला मुक़ाम भी दे सकते हैं। जभी तो हुज़ूर से यूं अर्ज़ किया। के मैं जन्नत और जन्नत में आपकी रफ़ाक़त माँगता हूँ गोया सहाबा इक्राम का ईमान था के हुज़ूर जन्नत के मालिक व मुख़्तार हैं जिसे चाहें दे दें। फिर अगर यूं कहा जाए के जिसका नाम मोहम्मद है वो किसी चीज़ का मालिक व मुख़्तार नहीं। तो ये किस क़द्र गुमराही है। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर

सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से जन्नत लेने की ख़्वाहिश हो तो नमाज़ कभी ना छोड़नी चाहिए।

हिकायत नम्बर(693) ग़ज़वा-ए-तबूक में

ग़ज़वा-ए-तबूक में सहाबा इक्राम अलेहिम-उर-रिज़वान से राशन ख़त्म हो गया। तो भूक की शिद्दत में हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से तालिबे दुआ हुए तो हुज़ूर ने फ़रमाया। के जो कुछ भी किसी के पास बचा कुछा हो। मेरे पास ले आओ। चुनाँचे सहाबा इक्राम थोड़ी थोड़ी चीज़ें जो बची कुछी थीं। ले आए। हुज़ूर ने उन थोड़ी थाड़ी चीज़ों पर दुआए बर्कत फ़रमाई। और फिर फ़रमाया जाओ अपने अपने बर्तन ले आओ। और उसमें से भर भर कर लेते जाओ चुनाँचे।

फाखुज़ू फी ओ इय्यतीहि हत्ता मा तराकू फिल असकरी विआअन इल्ला मलाहू

सब सहाबा ने अपने अपने बर्तन भर लिए और लश्कर में जो भी बर्तन था। कोई खाली ना रहा। सब भर लिए गए। और फिर सारे सहाबा ने सैर शिकम होकर खाना खाया। और खाना फिर भी बच गया। (मिश्कात शरीफ, सफ़ा 538)

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ये रहमत व बर्कत है। के आप थोड़े को ज़्यादा कर देते हैं। और ये भी मालूम हुआ के सहाबा इक्राम मुश्किल के वक़्त बारगाहे रिसालत ही में फ़रयाद किया करते हैं। और ये भी मालूम हुआ के थोड़ी थोड़ी चीज़ें सामने रखकर उन पर दुआऐ ख़ैर करनी जैसे के ख़त्म व फातिहा में होता है। जायज़ है। बिदअत हर गिज़ नहीं।

हिकायत नम्बर(694) दूध का पियाला

एक मर्तबा हज़रत अबु हुरेरा रज़ी अल्लाहो अन्ह को बड़े ज़ोर की भूक लगी। और वो हुज़ूर सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम की खि़दमत में हाज़िर हुए। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने एक दूध का पियाला लिया। और हज़रत अबु हुरेरा से फ़रमाया। जाओ असहाब सफा को बुला लाओ। असहाब सफा की तादाद सत्तर थी अबु हुरेरा ने जी में सोचा के वो लोग आ गए तो एक पियाले में से मेरे लिए क्या बचेगा? मगर हुक्म नबव्वी था। इसलिए वो गए और असहाब सफा को बुला लाए। हुज़ूर ने फ़रमाया।

लो ये दूध का पियाला, और उन सबको पिलाओ। चुनाँचे हज़रत अबु हुरेरा ने बारी बारी सबको पिलाना शुरू किया। एक को पिला लेते तो फिर वही पियाला दूसरे के आगे रख देते। वो पी लेता तो आगे कर देते। इसी तरह उस एक पियाले से सब ने सैर होकर दूध पिया। मगर दूध वैसे का वैसा ही रहा। ज़र्रा भी कम ना हुआ। फिर वो पियाला हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने अपने हाथ में लिया। और अबु हुरेरा ने फ़रमाया लो अब तुम पियो। अबु हुरेरा ने पीना शुरू किया। हत्ता के जब आपने पियाला मुंह से हटाया। तो हुज़ूर ने वो पियाला अबु हुरेरा के मुंह से फिर लगाया। और फ़रमाया। और पियो। हज़रत अबु हुरेरा ने और पिया। और फिर जो पियाला मुंह से हटाया। तो हुज़ूर ने फ़रमाया नहीं और पियो। कई बार ऐसा हुआ। आखिर हज़रत अबु हुरेरा ने अर्ज़ किया। या रसूल अल्लाह! अब कोई रास्ता नहीं रहा। (बुखारी शरीफ, सफ़ा 956)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मुतसर्रूफ व मुख़्तार हैं। चाहें तो एक पियाले से सत्तर आदमियों को खिला पिला दें। फिर अगर यूं कहा जाए के "नबी के चाहने से कुछ नहीं होता" तो ये बात किस क़द्र गुमराही व जहालत की बात है।

हिकायत नम्बर(695) घी का मशकीज़ह

एक सहाबिया उम्मे मालिक रज़ी अल्लाहो अन्हा मशकीज़े में घी डाल कर हुज़ूर की खिदमत में पेश किया करती थीं एक रोज़ हुज़ूर ने खुश होकर जो निगाहे करम फ़रमाई। तो वो मशकीज़ह घी का चश्मा बन गया। उम्मे मालिक को जब भी घी की ज़रूरत होती, उसी मशकीज़े से निकाल लेतीं। एक रोज़ उम्मे मालिक ने उस मशकीज़े को निचौड़ लिया। तो ऐसा करने से वो मशकीज़ह खुश्क हो गया। उम्मे मालिक ने हुज़ूर से ये वाक़ेया अर्ज़ किया तो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने फ़रमाया *लो तरकतिहा मा ज़ाला क़ाइमा* "अगर तू ना निचौड़ती तो घी हमेशा रहता" (मुस्लिम शरीफ, सफ़ा: 537)

सबक़:- हमारे हुज़ूर (स॰अ॰स॰) की चश्मे रहमत जिस पर पड़ जाए वो चीज़ हमेशा रहमत बन जाती है। और एक नज़र ऐसी भी होती है के साफ सुथरे दूध पर पड़ जाए तो दूध फट जाए। फिर अगर ऐसा शख़्स उनसे मसावात का दम भरे तो हम अहले नज़र के नज़दीक वो बड़ा ही जाहिल और अंधा है।

हिकायत नम्बर(696) खजूरें

एक रोज़ हज़रत अबु हुरेरा रज़ी अल्लाहो अन्ह तक़रीबन बीस इक्कीस खजूरें लेकर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ की। या रसूल अल्लाह इन खजूरों में दुआए बर्कत फ़रमा दीजिए। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने इकट्ठा किया और दुआ फ़रमा कर फ़रमाया। इन्हें अपने तोशेदान में डाल ले। और जब भी कभी ज़रूरत पड़े हाथ डाल कर निकाल लिया करना। और उसे झाड़ना मत। हज़रत अबु हुरेरा रज़ी अल्लाहो अन्ह ने उन्हें कमर के साथ बाँध लिया। और चौबीस साल से ज़्यादा उस तोशेदान से खजूरें निकाल निकाल कर खाते रहे। मनों खुदा के रास्ते में तक़सीम भी कीं। और लोगों को भी खिलाईं। आख़िर हज़रत उस्मान रज़ी अल्लाहो अन्ह की शहादत के रोज़ वो तोशेदान अबु हुरेरा रज़ी अल्लाहो अन्ह की कमर से टूट कर कहीं गिर गया। (तिरमीज़ी शरीफ, सफ़ा 241-जिल्द 2)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मालिक व मुख़्तार और कायनात के हाकिम हैं। खुदा तआला की अता से आप जो चाहें वो हो जाता है। जिस तरह चन्द एक खजूरें आप की बर्कत से कई मन हो गईं और 24 साल तक खाई जाती रहीं। इसी तरह हम गुनहगारों की थोड़ी नेकियाँ भी सरकारे अब्दर क़रार सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की निगाहे करम से बेशुमार हो जागेंगी। मगर शर्त ये है के सरकार के मुतअल्लिक़ अक़ीदा भी वही हो जो सहाबा इक्राम का था।

हिकायत नम्बर(697) नायब रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम

सनद सही के साथ मरवी है के हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह ने फ़रमाया।

मा ततलअ अलशम्सहती तसलम अला व तजई अलसनत इला व तसल्लम अला व तख़्बरनी बिमा यजरी फीहा। व यजई अलशहरू यसल्लम अला व यख़्बरनी बिमा यजरी फीह। व यजई अलअसबूअ व यसल्लम अला व यख़्बरनी बिमा यजरी फीह। व यजई अलयौम व यसल्लम अला व यख़्बरी बिमा फीह। व इज़्ज़त रब्बी अन अलसअदा व अलशक़िया लयअरिज़ूना अला ऐनी फी अललूह-उल-महफूज़।

इन्ना ग़ाइस फी बहार अलिमल्लाहू व मशाहिदत। इन्ना हुज्जतुल्लाह अलेकुम जमीअकुम अना नायब रसूलुल्लाह(स०अ०स०) ववारसहू फ़िल अर्ज़। (बहुज्जत-उल-असरार शरीफ, सफ़ा 22)

तर्जुमाः- सूर हर रोज़ तलू होते वक़्त मुझ पर सलाम अर्ज़ करता है। और हर नया साल जब आता है तो मुझ पर सलाम अर्ज़ करके जो कुछ साल भर में होने वाला होता है, उसकी ख़बर मुझे दे देता है। और हर महीना जब शुरू होता है तो पहले मुझे सलाम अर्ज़ करता है। और जो कुछ महीने भर में होना होता है उसकी ख़बर मुझे देता है। और हर हफ़्ता जब शुरू होता है तो पहले मुझे सलाम अर्ज़ करता है और जो कुछ हफ़्ते भर में होना होता है। उसकी ख़बर मुझे देता है इसी तरह हर दिन भी मुझे सलाम अर्ज़ करके दिन भर में होने वाले वाक़ेयात की ख़बर देता है। मुझे मेरे रब की इज़्ज़त की क़सम! नेक व बद सब मुझ पर पेश किए जाते हैं और मेरी आँख लोहे महफ़ूज़ में लगी रहती है। मैं अल्लाह के इल्म व मुशाहेदे के समुंद्रों में ग़ौताज़न हूँ। और मैं तुम सब के लिए अल्लाह की हुज्जत हूँ। और मैं रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का नायब हूँ। और ज़मीन में उनका वारिस हूँ।"

सबक़:- मालूम हुआ के हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह को अल्लाह तआला ने बहुत बड़ी शान अता फ़रमाई है और आपको इल्म भी इतना वसी अता फ़रमाया है के साल भर के हर महीने और हर रोज़ में जो जो कुछ होने वाला होता है। वो सब वाक़ेयात हुज़ूर ग़ौस आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह के इल्म में दाखिल होते हैं। और ये भी मालूम हुआ के ये इतना बड़ा वसी इल्म हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के एक नायब का है। तो खुद हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इल्म पाक का अंदाज़ा कौन कर सकता है जिनके सदक़े में हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह को इतना इल्म अता हुआ। फिर अगर कोई शख़्स हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ही के मुतअल्लिक़ यूं कहने लगे के उन्हें तो दीवार पीछे का भी ना था तो वो किस क़द्र जाहिल है।

हिकायत नम्बर(698) चुड़िया की मौत

हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह एक मर्तबा अपने मदरसे में वज़ू फ़रमा रहे थे। के एक चुड़िया ने बीट कर दी। तो वो आपके कपड़े पर पड़ी। हज़रत ने जलाल में आकर ऊपर इस चिड़िया की तरफ़ देखा। आपकी उस जलाल भरी नज़र से चिड़िया मर गई और नीचे गिर गई। उसके बाद हुज़ूर

गौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह ने इस कपड़े को उतार कर बीट वाली जगह को धोया। और वो क़ीमती कपड़ा अपने एक ख़ादिम को देकर फ़रमाया। उसे जाकर बेच दो। और क़ीमत राह खुदा में सदक़ा कर दो। ताके उस चिड़िया की मौत का बदला हो जाए। (बहुज्जत-उल-असरार, सफ़ा 103)

सबक़:- अल्लाह के बन्दों की जलाल भरी नज़रों में खुदाई क़हर पनेहाँ होता है। और उनकी जमाल भरी नज़रों में अल्लाह का फ़ज़्लो करम मौजूद होता है। पस हमें उन अल्लाह वालों का कभी दिल ना दिखाना चाहिए ताके उनके जलाल व अत्ताब के हम मोरिद बन जायें।

हिकायत नम्बर(699) एक सौदागर का क़िस्सा

एक सौदागर जिसका नाम अबु अलमुज़फ़्फ़र था। हज़रत शेख़ हम्माद अलेह अर्रहमत की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। और कहा। क़ाफ़ला तैयार है। मैं मुल्क शाम को जा रहा हूँ। सर दस्त सौ अशर्फ़ियाँ अपने साथ ले जा रहा हूँ। और इतनी क़ीमत का सामान मेरे पास है। दुआ कीजिए के कामयाब लूटों। हज़रत शेख़ हम्माद ने फ़रमाया तो अपना ये सफर मुलतवी कर दो। वरना ज़बरदस्त नुक़्सान उठाओगे। डाकू तुम्हारा सब माल लूट लेंगे। और तुम को क़त्ल भी कर देंगे। सौदागर ये ख़बर सुनकर बड़ा परेशान हुआ। और उसी परेशानी में वापस आ रहा था। के रास्ता में हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह मिल गए। पूछा क्यों परेशान हो? सौदागर ने सारा क़िस्सा सुना दिया। आप ने फ़रमाया। परेशान होने की ज़रूरत नहीं। तुम शौक़ से मुल्क शाम को जाओ। इंशाअल्लाह तुम्हें कोई नुक़्सान ना होगा। और तुम बखैरियत और कामयाब लौटोगे। चुनाँचे सौदागर मुल्क शाम को रवाना हो गया।

शाम मैं उसे बहुत सा नफा हुआ। और वो एक हज़ार अशर्फ़ियों की थेली लिए मुल्क हलब में पहुँचा। और इत्तिफ़ाक़न थेली कहीं रखकर भूल गया। इसी फ़िक्र में नींद ने ग़ल्बा किया। और सो गया तो ख़्वाब में देखा के कुछ डाकूओं ने उसके क़ाफ़ले पर हमला करके सारा सामान लूट लिया है। और उसे भी क़त्ल कर डाला है। ये दहशतनाक ख़्वाब देखकर सौदागर ख़्वाब से चौंका। तो देखा वहाँ कुछ भी ना था। मगर उठा तो याद आया। के अशर्फ़ियों की थेली मैंने फलाँ जगह रखी थी। चुनाँचे झट वहाँ गया तो थेली मिल गई। और खुशी खुशी बग़दाद वापस आया। और अब सोचने लगा के मैं पहले ग़ौसे आज़म को मिलूं या शेख हम्माद को? (रज़ी अल्लाहो अन्हा) इत्तिफ़ाक़न बाज़ार में हज़रत शेख हम्माद मिल गए। और देखकर

फ़रमाने लगे। पहले जाकर ग़ौसे आज़म से मिलूं। के वो मेहबूबे रब्बानी हैं। उन्होंने तुम्हारे लिए सत्तर बार बारगाहे इलाही में दुआ माँगी। तब कहीं जाकर तुम्हारी तक़दीर मोअल्लिक़ बदली है। जिसकी मैंने तुझे खबर दी थी। अल्लाह तआला ने तुम्हारे साथ होने वाले वाक़ेये को ग़ौसे आज़म की दुआ से बैदारी से ख़्वाब में मुनतक़िल कर दिया। ये सुनते ही सौदागर हज़रत ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह के पास आया। जिनके रूहानी तसर्रूफ से वो क़त्लो ग़ारत से बच गया। उसे देखते ही हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने फ़रमाया। वाक़ई मैंने तुम्हारे लिए सत्तर बार दुआ माँगी थी। (बहुज्जत-उल-असरार, सफ़ा 29)

सबक़:- बुज़ुर्गों की दुआओं से बदल जाती हैं तक़दीरें

हिकायत नम्बर (700) जिन्न

एक मर्तबा आप जामअे मनसूर में नमाज़ पढ़ रहे थे के दौराने नमाज़ में बोरिये पर आपको कोई आहट महसूस हुई। और ऐसा मालूम हुआ के कोई अन्दर आया और बोरिये पर क़दम रखा है। मगर नज़र कुछ नहीं आता। आप बदस्तूर नमाज़ पढ़ते रहे। जब रूकू में गए तो क्या देखते हैं के सज्दागाह में एक ज़हरीला और ख़ौफनाक सांप मुंह खोले बैठा है। हुक्मे शरीअत के मुताबिक़ सज्दे में जाते हुए हाथ बढ़ा कर उसे हटा दिया। सज्दा करने के बाद जब क़ाअदे में आए तो सांप आपकी रानों पर से होकर गर्दन पर सवार हो गया। अब भी आपने परवा ना की। और नमाज़ में मशग़ूल रहे। लेकिन सलाम फैरते ही देखा। तो सांप ग़ायब। आपको खयाल भी ना हुआ के क्या वाक़ेया पेश आया है।

दूसरे रोज़ आप उसी मस्जिद में गए। तो देखा एक शख़्स आँखें फाड़े हुए निगाहों से आपकी तरफ़ देख रहा था। आप समझ गए के इस वीराने में और इस हय्यत कज़ाई के साथ सिवाऐ जिन्न के और कोई नहीं हो सकता। आपने ये खयाल किया ही था। के उसने आपको मुख़ातिब करके कहा। के कल नमाज़ में जो सांप आपने देखा था वो मैं ही हूँ। मैं इसी तरह सांप बन कर कई बुज़ुर्गों और वलियों को डरा कर उनका इम्तिहान कर चुका हूँ। मगर मैंने आप जैसे साबित क़दम मुसतक़िल मिज़ाज और बेबाक वली किसी को नहीं देखा। वाक़ई आपका ज़ाहिर व बातिन यक्सां है। ये कह कर उसने उसी वक़्त आपके हाथ पर तौबा की और अहद किया के अब मैं खुदा की इबादत में मशग़ूल रहूंगा। ना किसी को डराऊँगा और ना सताऊँगा। (बहुज्जत-उल-असरार, सफा 84)

सबक़:- गौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह गौसे-उल-अनस वलजिन्न हैं और इंसानों के अलावा जिन्न भी आपके फयूज़ व बर्कात से मुसतफीद हुए।

हिकायत नम्बर(701) ख़ौफनाक सांप

एक रोज़ आपकी मजलिस में उलमा व फुक़रा और अक़ीदतमंदों का हुजूम था। और मसला क़ज़ा व क़द्र पर तक़रीर फ़रमा रहे थे। और लोगों पर कैफ व इसग़राक़ का आलम तारी था। अचानक छत में से एक निहायत ख़ौफनाक और ज़हरीला सांप गिरा। उसके गिरते ही भगदड़ मच गई। और सब पर उसकी हैबत छा गई। लेकिन आपने अपनी जगह से हरकत ना की। खड़े हुए वअज़ फ़रमाते रहे। वो सांप रेंगता हुआ आपके कपड़ों में घुसा। और तमाम जिस्म पर फिर कर गर्दन पर से होता हुआ उतर कर सामने आ खड़ा हुआ। जो लोग वहाँ मौजूद रह गए थे। उन्होंने देखा के वो आपसे कुछ बातें कर रहा था। उसके बाद वो ग़ायब हो गया। लोगों को बड़ी हैरानी हुई। आख़िर आप ही ने उस हैरानी को दूर किया। फ़रमाया। इस सांप ने कहा। के मैं अब तक बहुत से औलिया अल्लाह को आज़मा चुका हूँ। मगर मैंने आप जैसा इसतक़लाल किसी में नहीं पाया। उसके जवाब में मैंने उससे कहा। के मैं चूंके उस वक़्त क़ज़ा व क़द्र बयान कर रहा था। तो मौक़ा देखकर गिरा। मैं तुझ से डरता क्यों? तू भी तो ज़मीन का एक कीड़ा ही है। क़ज़ा व क़द्र ने मुझे मोतहरिक कर रखा है। तेरे गिरने से मेरे क़ौल व फैल में तताबुक़ व तवाज़ुन पैदा हो गया। गोया कुद्रत ने दिखा दिया के मेरा ज़ाहिर व बातिन एक हैं। (बहुज्जत-उल-असरार, सफ़ा 87)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दों के दिल तवक्कल व सकून और इतमीनान के नूर से मुनव्वर होते हैं। और कोई भी दुनयवी हादसा उनके इतमीनान क़ल्ब की दौलत छीन नहीं सकता। यही वो मताअ बे बहा है जिसके लिए इक़्बाल ने लिखा है के।

नहीं मिलता ये गोहर बादशाहों के ख़ज़ीनों में

हिकायत नम्बर(702) अमीर व हाकिम

हज़रत अबु इसहाक़ इब्राहीम रहमत-उल्लाह अलेह से एक दुरवैश ने दरख़्वास्त की। के मैं सफर हज में आपके साथ रहना चाहता हूँ। आपने मंज़ूर फ़रमा लिया। और फ़रमाया। के हम दोनों में से एक अमीर व हाकिम होना चाहिए। ताके सारे काम अच्छी तरह पूरे हों। दुरवैश ने

कहा। फिर आप ही अमीर व हाकिम बन जाइये। आपने फ़रमाया। बहुत अच्छा। अब तुम मेरे मती हो। मैं तुम्हें जो हुक्म करूं। तुम्हें मानना पड़ेगा।

जब एक मंज़िल पर पहुँचे। तो आपने दुरवैश को बैठने का हुक्म दिया। और खुद पानी लेने चले गए। पानी लाकर फिर लकड़ियाँ इकट्ठी करने लगे। और आग जलाई। फिर राह में जो काम भी होता। खुद ही करते। और दुरवैश को बैठे रहने का हुक्म देते। और वो जब अर्ज़ करता के मुझे भी कोई काम करने दीजिए। तो फ़रमाते शर्त हो चुकी के मैं अमीर व हाकिम हूँ। और तुम मतीअ हो। रास्ते में बारिश होने लगी। तो आपने अपना लिबादा उतार कर उस पर डाल दिया और सारी रात लिबादा के दोनों किनारों को दोनों हाथों से पकड़ कर उस पर साया किए रहे। ताके वो बारिश से महफ़ूज़ रहें। वो ये देखकर बड़ा शर्मसार हुआ। मगर अज़रूऐ शर्त बोल ना सका। सुबह हुई तो दुरवैश बोला। के हज़रत आज मैं अीमर व हाकिम बनूंगा। फ़रमाया। बहुत अच्छा फिर जब एक मंज़िल पर पहुँचे। तो आपने सारी ख़िदमत अपने ज़िम्मे ली। दुरवैश ने कहा। मेरे फ़रमान के ख़िलाफ़ कुछ ना कीजिए। तो फ़रमाया। ना फ़रमानी ये है के अमीर व हाकिम को अपनी ख़िदमत के लिए कहा जाए। मतीअ के होते हुए अमीर व हाकिम को किसी तकलीफ़ करने की क्या ज़रूरत है। मक्का मौअज़्ज़मा तक आप इस दुरवैश से यही सलूक फ़रमाते रहे। मक्का मौअज़्ज़मा आ गया। तो दुरवैश आपके हुस्ने सलूक से शर्मिंदा होकर अलग हो गया। आपने फ़रमाया। बेटा! दोस्तों से इसी तरह मोहब्बत रखनी चाहिए। जैसे मैंने तुम से मोहब्बत रखी। (मख़्ज़न अख़लाक़, सफ़ा 302)

सबक़:- खुदा तआला के नेक बन्दे हर हाल में ख़िदमते ख़ल्क़ को अपनाए रहते हैं और उनके दिल में कभी किब्रो ग़रूर पैदा नहीं होता। और ये भी मालूम हुआ के अमीर व हाकिम दरअसल अपनी रिआया का ख़ादिम होता है। और उसके फ़रायज़ में ये बात दाखिल होती है के वो रिआया की तकालीफ़ का इज़ाला करे।

हिकायत नम्बर(703) आग

एक बुर्दबार शख़्स ने एक साधू का इम्तिहान लेना चाहा के देखें ये साधू कितने पानी में है। अगर वाक़ई ये किसी क़ाबिल हुआ तो मैं उसका चैला बन जाऊँगा। चुनाँचे वो इस साधू के पास पहुँचा। देखा तो वो अपनी कुटिया

में बैठा था। इस शख़्स ने कहा। महाराज! थोड़ी सी आग दो। साधू ने कहा। भाई! आग मेरी कुटिया में नहीं है।" दरअसल आग थी भी नहीं। लेकिन उस शख़्स का मक़्सूद तो कुछ और था। इसलिए उसने फिर कहा। के महाराज! आग थोड़ी सी ही दे दीजिए। तब साधू ने मुंह बनाया और ग़ज़बनाक होकर कहा। के चला जा कैसा आदमी है। हम कह रहे हैं के आग नहीं है। और ये मानता ही नहीं और मांगने चला जाता है।" इस पर उस शख़्स ने कहा के महाराज! धुआँ तो उठता है। थोड़ी ही दे दीजिए। अब तो साधू को इस क़द्र गुस्सा आया के मारे ग़ज़ब के आँखें सुर्ख हो गईं। और सोंटा उठा कर मारने को दौड़ा। उस शख़्स ने हाथ जोड़े और कहने लगा। महाराज! अब तो आग अच्छी तरह जलने लगी। माफ कीजिए। साधू ने कहा। तू मुझ से बार बार आग क्यों माँगता है। उसने कहा। महाराज! मैंने आपकी खाकसारी की जाँच की थी। जो गुस्सा आपको पहले आया था। वो आग का सुलगना और धुएँ का उठना था। और जो गुस्सा बाद में पैदा हुआ वो गोया आग का पूरे तौर पर भड़क उठना था। ये आग आपके दिल से पैदा हुई। और मुंह के राह निकली। ये आग पहले आपको और फिर दूसरे को जलाती है। अगर आप में खाकसारी होती तो ये आग कभी पैदा ना होती जैसे के खाक में आग नहीं लगती। (मख्ज़न अख़लाक़, सफ़ा 334)

सबक़:- गुस्सा एक ऐसी ख़तरनाक आग है जिससे आदमी खुद भी जल जाता है और दूसरों को भी जला देता है। अल्लाह के नेक बन्दों में खाकसारी व तवाज़ौ होती है। वो कुछ भी हो जाए गुस्से में नहीं आते और गुस्सा आ भी जाए। तो उसे पी जाते हैं।

हिकायत नम्बर(704) चीस्त दुनिया

एक शख़्स ने घर के कारोबार व मसारिफ़ से तंग आकर इरादा किया के दुनिया को तर्क कर दे। एक बीवी थी। उस बिचारी को तनहा छोड़ कर खुद किसी जंगल में निकल गया। और किसी फक़ीर का चैला बन गया। गले में कफनी डाल कर हाथ में कासा लेकर दर बदर भीक माँगने लगा। एक दिन फिरता फिराता उसी बस्ती में आ निकला। जहाँ उसकी बीवी रहती थी। हस्बे आदत सदा की। भला हो माई कुछ फक़ीर को मिल जाए। माई ने उस बेवफा की आवाज़ पहचान ली झांक कर देखा तो वही ज़ात शरीफ हैं। खैर उनको थोड़ा सा आटा दिया। और कहा। शाह जी! गो तुम्हारा हमारा मियाँ बीवी का रिश्ता तो बाक़ी ना रहा। लेकिन लाओ तुम्हारी रोटी पका

दें। कहा, अच्छा। मगर आटा, दाल, नमक, मिर्च, और लौटा, तवा, चूलहा, कुछ लकड़ियाँ सब ज़रूरी अशिया फक़ीर की झोली में मौजूद हैं ये सामान लो और पका दो। तब उस औरत ने ज़ोर से एक दोहत्तड़ मारी और कहा के कमबख़्त! सारा सामान दुनिया तो अपनी बग़ल में लिए फिरता है। क्या जोरू ही दुनिया होती है के मुझ ग़रीब को छोड़कर तारिक-उहुनिया बन गया। (मख़्ज़न अखलाक़, सफ़ा 415)

सबक़:- मालो दौलत, बीवी बच्चे और दुनयवी सामान ये दुनिया हर गिज़ नहीं है। बल्के खुदा तआला को भूल जाना ये दुनिया है। जो शख़्स लाखों का मालिक हो और खुदा याद भी हो। वो दुनियादार नहीं है। और जो शख़्स मुफलिफ व क़िलाश हो। और खुदा को भूला हुआ हो। वो दुनियादार है।

चीस्त दुनिया अज़ खुदा ग़ाफिल बुदन
ने क़माश व नक़रह व फ़रज़न्द वज़न

हिकायत नम्बर(705) क़ैद

एक रंद मशरिब फक़ीर हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मोहद्दिस देहलवी रहमत-उल्लाह अलेह की ख़िदमत में आया। और कहा। मोलवी बाबा! शराब पिलवा। शाह साहब ने एक रूपया उसकी नज़्र किया। और फ़रमाया जो चाहो सूखा खाओ पियो। तुम को इख़्तियार है। वो बोला। के हम ने आपका बड़ा नाम सुना है। लेकिन आप तो क़ैद में हैं। शाह साहब ने फ़रमाया के शाह जी! क्या आप क़ैद में नहीं हैं? कहा के नहीं! आपने फ़रमाया। के तुम अगर किसी रोश की क़ैद में नहीं हो तो आज गुस्ल करो। और जब्बा पहन और अमामा बाँधकर मस्जिद में चलो। और नमाज़ पढ़ो। वरना जिसे तुम रंदी की क़ैद में हो। इसी तरह हम शरीअत ग़रा की क़ैद में पाबंद हैं। तुम्हारी आज़ादी एक खयाल खाम है। ये सुनकर वो चुप हो गया। और शाह साहब के क़दम पकड़ लिए। के दर हक़ीक़त मेरा खयाल ग़लत था। जो आज़ादी का दम भरते थे। और आईंदा के लिए रंदी मशरिब से तायब हो गया। (मख़्ज़न अखलाक़, सफ़ा 422)

सबक़:- जो लोग उल्मा इक्राम के खिलाफ हैं और कहते हैं के उल्मा तंग नज़र हैं और आज़ाद खयाली के दुश्मन हैं। और यूं कहते हैं के हम किसी मज़हब से मुतअल्लिक़ नहीं। हम आज़ाद खयाल हैं। ऐसे लोग बड़े नादान हैं। और नहीं जानते के उनका आज़ाद खयाल होना महज़ एक वहम ही है। और वो खुद भी आज़ाद खयाली की क़ैद में हैं। किसी मज़हब से मुतअल्लिक़

ना होकर ला मज़हबी इख़्तियार कर लेना भी तो एक मज़हब है। यानी जिस तरह दूसरे मज़ाहिब हैं। इसी तरह ला मज़हबी भी एक मज़हब है तो जो किसी मज़हब से मुतअल्लिक़ नहीं। वो ला मज़हब तो है ही फिर वो कैसे कह सकता है के मैं किसी मज़हब से मुतअल्लिक़ नहीं हूँ। मज़हबी आदमी नहीं तो ला मज़हबी आदमी सही। कुछ तो है। मज़हबी आदमी मज़हब की क़ैद में है। और लामज़हबी आदमी इलहाद की क़ैद में है। पस उल्मा इक्राम के मुख़ालफीन अपने आप को आज़ाद नहीं कह सकते। इसलिए के उल्मा अगर शरीअत की क़ैद में हैं तो "आज़ाद खयाल" अफ़्राद यूरोप की क़ैद में हैं।

हिकायत नम्बर(706) सच्ची बात

हज्जाज ने एक दिन खुत्बा पढ़ा। और बहुत लम्बा कर दिया। तो लोगों में से एक शख़्स खड़ा हुआ। और कहने लगा। ऐ हज्जाज! नमाज़ पढ़ो, क्योंके वक़्त इन्तिज़ार नहीं करेगा। और खुदा तुझे मअज़ूर नहीं रखेगा। हज्जाज सुनकर ग़ुस्से में आ गया। और उसे क़ैद करने का हुक्म दे दिया। चुनाँचे वो क़ैद कर लिया गया। उस क़ौम के चन्द लोग हज्जाज के पास आए। और कहा। के वो क़ैदी को छोड़ दे। इसलिए के वो क़ैदी एक दीवाना आदमी है। हज्जाज ने कहा। के अगर वो दीवांगी का इक़्रार कर ले तो मैं उसे छोड़ दूंगा। चुनाँचे वो लोग फिर उस क़ैदी के पास पहुँचे और उससे कहा। के वो अपनी दीवांगी का इक़्रार कर ले। और कह दे के मैं दीवाना हूँ। ताके वो इस क़ैद से रिहा हो जाए। उसने कहा। मआज़ अल्लाह! मैं तो हर गिज़ ना कहूंगा। के खुदा ने मुझे किसी मर्ज़ में मुबतला किया है। हालाँके उसने मुझे तनदुरूस्ती अता की है। आख़िर ये बात हज्जाज को पहुँची। तो उसने उसकी रास्त गोई के बाइस उसे माफ कर दिया। और छोड़ दिया। (मख़्ज़न अख़लाक़, सफ़ा 425)

सबक़:- अल्लाह के नेक बन्दे कभी झूट नहीं बोलते और हमेशा सच ही बोलते हैं। और ज़ालिम से ज़ालिम बादशाह भी हो। तो उसके सामने भी सच्ची बात कहने से नहीं झिजकते।

हिकायत नम्बर(707) तीन रूक़्क़े

पुराने ज़माने के नेक बादशाहों में से एक नेक बादशाह ने अपने हुक्म से तीन रूक़्क़े लिखवाए। और वो तीनों रूक़्क़े अपने एक ख़ास ग़ुलाम के सपुर्द किए। और कहा के किसी वक़्त किसी मामले में हुक्म करते वक़्त अगर मिज़ाज तग़य्युर पज़ीर हो जाए और ग़ुस्सा व ग़ज़ब का असर मेरी आँखों और

चेहरे पर ज़ाहिर होने लगे तो क़ब्ल उसके के मैं हुक्म करूं। पहला रूक़ा मुझे दिखलाया जाए। फिर अगर देखो के आतिश ग़ज़ब सर्द नहीं हुई। तो उसके बाद ही दूसरा रूक़ा दिखलाओ। और अगर ज़रूरत पड़े तो तीसरा रूक़ा भी नज़र से गुज़ार देना चाहिए।

मज़मून रूक़ा अव्वल:- ताम्मुल और अपने इरादे की बाग को नफ़्से अम्मारा के क़ब्ज़ा व तसर्रूफ में ना दे। क्योंके मख़लूक़ आजिज़ और ख़ालिक़ क़वी तर है। जिसने तुझ को नैस्त से हस्त किया।

मज़मून रूक़ा दोम:- ज़ेर दस्तों के साथ जो के वदिअत परवरदिगार हैं। शिताब ज़दगी से मामला ना कर। और उन लोगों से जो तेरे मग़लूब हैं, रहम करता के वो जो तुझ पर ग़ालिब है, उसके अवज़ तुझ पर रहम करे।

मज़मून रूक़ा सोम:- इस शिताब कारी में जो तू हुक्म करे, शरअे से तजावुज़ ना कर और इंसाफ से जो के दीनदारी का जज़ूआज़म है। दरगुज़र ना कर। (मख़्ज़न अख़लाक़, सफ़ा 430)

सबक़:- नेक और खुदा तरस हाकिम कभी ज़ुल्मो सितम नहीं करते। और हमेशा इंसाफ से काम लेते हैं। और खुदा से हर वक़्त डरते रहते हैं।

हिकायत नम्बर(708) एत्राफ

हज़रत सुलतान मेहमूद ग़ज़नवी अलेह अर्रहमा के पास एक क़ीमती जाम था। एक रोज़ बादशाह ने अराकीने दौलत को हुक्म दिया के इस जाम को तोड़ दो। सब ने उज़्र किया के हुज़ूर! ऐसी क़ीमती चीज़ को तोड़ना मुनासिब नहीं। सुलतान ने फिर अयाज़ को हुक्म दिया के इस जाम को तोड़ दो। अयाज़ ने फौरन इस जाम के टुकड़े कर दिए। अहले दरबार ने अयाज़ को मलामत की। के तूने ये क्या ग़ज़ब किया के एक क़ीमती जाम को तोड़ डाला। अयाज़ ने जवाब दिया के मैंने तो एक जाम ही को तोड़ा है। मुज्रिम तुम हो। जिन्होंने शाही फ़रमान को तोड़ा है। बादशाह ने फिर मसनुई नाराज़गी से पूछा के अयाज़! तुम ने ये जाम क्यों तोड़ा। जब के सारे अहले दरबार ने ऐसी हरकत नहीं की। अयाज़ ने झट हाथ जोड़कर अर्ज़ की। के हुज़ूर! क़सूर हो गया। माफ फ़रमाईये। मैं अपनी ग़लती को तसलीम करता हूँ। बादशाह ने अहले दरबार से मुख़ातिब होकर कहा। देखा यही है वो ख़ल्के अयाज़ जिसकी बदौलत वो मुझे मंज़ूर नज़र है। देख लो उसने इस जाम तोड़ने के वाक़्ये को मेरी तरफ़ मनसूब नहीं किया। बल्के उसे अपनी ग़लती क़रार दिया है। (मख़्ज़न अख़लाक़, सफ़ा 428)

सबक़:- नेक और फ़रमाँबर्दार बन्दे अपनी लग़ज़िशों की निस्बत कभी अल्लाह तआला की तरफ़ नहीं करते और हमेशा अपनी ही लग़ज़िश का एत्राफ करते हैं। देख लीजिए। शैतान ने हज़रत आदम अलेहिस्सलाम को सज्दा ना किया तो रब्बे तआला ने जब पूछा के तूने आदम को सज्दा क्यों नहीं किया? तो उसने जवाब दिया *"फबिमा अग़वैतनी"* यानी ऐ अल्लाह! ये काम तू ही ने मुझ से कराया है। मगर जब हज़रत आदम अलेहिस्सलाम से दरयाफ़्त फ़रमाया के ऐ आदम! तुम शज्र ममनूअ के पास क्यों गए? तो हज़रत आदम अलेहिस्सलाम ने अर्ज़ किया *रब्बना ज़लमना अनफुसाना* यानी ऐ रब हमारे! ये हमारी ही लग़ज़िश है। हम ने खुद अपनी जानों पर ज़ुल्म किया। खुदा तआला को ये एत्राफ पसंद आ गया। और हज़रत आदम अलेहिस्सलाम पर खुदा खुश हो गया। मालूम हुआ के जो लोग बुरे काम करके यूं कह दिया करते हैं के जी उसमें हमारा क्या क़सूर! ये तो अल्लाह ही को ऐसा मंज़ूर था। और अल्लाह ही ने ये काम कराया(मआज़ अल्लाह) वो लोग बड़े नादान और गुनहगार हैं। हमेशा अपनी ग़लती का एत्राफ करना चाहिए।

हिकायत नम्बर(709) अशर्फियों की थेली

दो शख़्स इकट्ठे सफर कर रहे थे। चलते हुए रास्ते में उनमें से एक ने एक अशर्फियों की थेली रास्ते में पड़ी हुई पाई। वो थेली को उठा कर अपने साथी से कहने लगा "देखो भाई! मैंने ये थेली पाई है।" दूसरा बोला। ये तुम ने क्या कहा। के मैंने पाई, यूं कहो के "हमने पाई।" इस वास्ते के हम तुम दोनों साथ हैं। ये हम दोनों का हक़ है। पहले ने कहा। मैं ये बात क्यों कहूं। जबके थेली मिली मुझी को है। ग़र्ज़ थेली पर लड़ते झगड़ते चले जा रहे थे। इतने में पीछे से कुछ लोगों की आहट सी मालूम हुई। कान लगाकर सुना तो वो लोग ये कहते हुए चले आ रहे थे के थेली के चोर वो दोनों आगे जाते हैं। ये सुनकर वो थेली पाने वाला अपने साथी से कहने लगा। क्यों भई! अब क्या करें? "अब तो हम मारे गए" दूसरा बोला। ये तुम ने क्या कहा। के "हम मारे गए" यूं कहो के "मैं मारा गया" जब तुम ने थेली पाने में मुझ को शरीक नहीं किया तो अब आफत में भी मैं तुम्हारा शरीक नहीं हूँ।" (मख़्ज़न अख़लाक़, सफ़ा 431)

सबक़:- जो लोग फायदे में किसी दूसरे को शरीक नहीं करते। मुसीबत में भी उनका कोई शरीक नहीं होता।

हिकायत नम्बर (710) नेक नाम

एक बादशाह की मजलिस में किसी बुज़ुर्ग का ज़िक्रे खैर हुआ। और लोगों ने उस बुज़ुर्ग की बड़ी तारीफ की। बादशाह का इश्तियाक़ बढ़ा। और उसने चाहा के वो इस बुज़ुर्ग से मुलाक़ात करे। चुनाँचे उसने अपना एक ख़ास आदमी भेज कर उस बुज़ुर्ग को अपने पास बुलाया। वो बुज़ुर्ग जब मजलिस शाही में तशरीफ़ लाए तो आते ही फ़रमाया "बादशाह की हज़ारों साल की उम्र हो जियो" बादशाह ने कहा आपने अपने पहले कलाम ही में अपनी हिमाक़त ज़ाहिर कर दी। जो आप जैसे बुज़ुर्ग की शायाने शान ना थी। भला कोई आदमी हज़ारों साल भी जी सकता है? उस बुज़ुर्ग ने फ़रमाया के आदमी की हयात बक़ाऐ बदन ही पर मौक़ूफ नहीं। जो आदमी हकूमत पाकर अद्ल व इंसाफ और खुदा तरसी से काम ले। और अच्छे काम करे। वो आदमी नेक नाम बनकर हमेशा के लिए ज़िन्दा हो जाता है। मेरी मुराद यही थी के अद्लो इंसाफ की बदौलत आपका नाम हज़ारों साल तक सफ़ा दहर पर क़ायम रहे। (मख़्ज़न अख़लाक़, सफ़ा 436)

सबक़:- अद्लो इंसाफ और खुदा तरसी से काम लेने से उम्र भी बढ़ती है। और इंसान मर कर भी ज़िन्दा रहता है। पस हमेशा अद्लो इंसाफ और अच्छे काम करने चाहियें और ज़ुल्मो सितम और बुरे कामों से बाज़ रहना चाहिए।

हिकायत नम्बर (711) फ़साहत व हाज़िर जवाबी

हज्जाज इब्ने यूसुफ़ बड़ा जाबिर और स[illegible]गीर हाकिम और अरबी ज़बान का बड़ा फाज़िल और ज़बरदस्त खतीब भी था। एक शायर क़बउस्सरा नामी अंगूरों के मौसम में अपने दोस्तों के साथ एक बाग़ में गया। सारे दोस्त आपस में गुफ़्तगू करने लगे। तो असना-ए-गुफ़्तगू में हज्जाज का भी ज़िक्र छिड़ गया। क़बउस्सरा ने कहा।

अल्लाहुम्मा सव्विद वजहू

वक़्ताआ उनक़ाहू वसक़िनी मिन दमीही

(तर्जुमा) "ऐ अल्लाह! उसका मुंह काला कर और उसकी गर्दन काट। और उसका खून मुझे पिला"

जब ये ख़बर हज्जाज तक पहुँची तो उसी वक़्त उसे हाज़िर करने का हुक्म दिया। जब वो हज्जाज के सामने आया और उसके ग़ज़बो जलाल को

देखा तो कहने लगा। के ऐ अमीर! हक़ीक़त ये है के मैंने बाग़ में जाकर देखा। के अंगूर पकने के क़रीब हैं। तो मैंने अल्लाह से दुआ की। के "ऐ अल्लाह! उसका मुंह काला कर। यानी अंगूर पक कर सियाह हो जायें। और उसकी गर्दन काट। यानी अंगूर का खोशा दरख़्त से जुदा हो। और उसका खून पिला। यानी अंगूर का शीरा मुझे पिला।" मेरा मतलब तो ये था। मगर दुश्मनों ने मेरी अदावत में आकर उसके उलटे मअनी मुराद लिए। हज्जाज इन मअनों में उससे झगड़ता रहा। मगर वो अपनी फ़ुसाहत व बलाग़त से ग़ालिब आता रहा। हज्जाज ने तंग आकर कहा।

लहमिलका अला अदहमी "मैं तुझे बेड़ियाँ पहनाऊँगा।

"अदहम" के मअनी लोहे की बेड़ी भी हैं और सिया घोड़े भी। क़बउस्सरा ने उसका ये हुक्म सुनकर कहा। आप से यही उम्मीद है के आप मुझे सियाह घोड़े पर बिठायेंगे। हज्जाज ने कहा "उरदतुल हदीद" मेरी मुराद लोहा (हदीद) है। क़बउस्सरा ने ये सुनकर कहा।

"*अन यकुन हदीदा खैर मिन बलीद*" अगर घोड़ा तेज़ हो तो सुस्त से बेहतर है।"

"हदीद" के मअनी लोहा भी और तेज़ भी हैं।

हज्जाज उसकी फ़ुसाहत व हाज़िर जवाबी आजिज़ आ गया। और उसे माफ कर दिया। (तालीम-उल-अख़लाक़, सफ़ा 407)

सबक़:- अरबी ज़बान बड़ी जामअे है। और अरब के फ़ुसहा बड़े बा कमाल होते हैं। और ये भी मालूम हुआ के इल्म बड़ी कारआमद चीज़ है। उससे आदमी बड़ी बड़ी मुसीबतों से बच जाता है।

हिकायत नम्बर (712) नंगा शैतान

शेख़ अबु अलक़ासिम जुनैद रज़ी अल्लाहो अन्ह फ़रमाते हैं। मैंने इबलीस को ख़्वाब में नंगा देखा। (खुदा की पनाह उससे) मैंने उससे कहा। तुझे इंसानों से शर्म नहीं आती। कहा ये लोग तुम्हारे नज़दीक इंसान हैं। मैंने का हाँ। इबलीस ने कहा। अगर ये इंसान होते तो जैसे लड़के गोली के साथ खेलते हैं। मैं उनके साथ ना खेलता। हाँ इंसान उनके सिवा और हैं। मैंने पूछा वो कौन हैं? इबलीस बोला। मस्जिद शोनीज़िया में चन्द लोग हैं जिनकी आदत व परहैज़गारी से में आजिज़ हूँ मैंने बड़ी कोशिश की। मगर उन पर क़ाबू ना पा सका।

हज़रत जुनैद फ़रमाते हैं के मैं ख़्वाब से बेदार हुआ तो मस्जिद शोनीज़िया में गया। वहाँ तीन मर्द नजर आए। अपने सर गडरियों में डाले

और सर झुकाए बैठे थे। जब मेरी आहट हुई तो उनमें से एक ने गडरी से सर निकाला। और कहा।

"ऐ जुनैद! शैतान ख़बीस की बात से धोका ना खाना। ये कहकर फिर मुंह छुपा लिया।" (रयाज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 6)

सबक़:- उरयानी और नंगा पन शैतानी फैल है। और ये भी मालूम हुआ के शैतान अल्लाह के मक़्बूलों पर क़ाबू नहीं पा सकता। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के मक़्बूलों पर कोई चीज़ मख़्फ़ी नहीं रहती। फिर सब अल्लाह वालों के आक़ा मौला और सरदार हुज़ूर मुख़्तार सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से कोई बात किस तरह ग़ायब रह सकती है।

हिकायत नम्बर(713) इम्तिहान

हज़रत इब्राहीम ख़्वास रज़ी अल्लाहो अन्ह फ़रमाते हैं। मैं बग़दाद में था। वहाँ फुक़रा की एक जमात रहती थी। एक रोज़ एक जवान होशियार, अक़्लमंद, खूबसूरत, खुश अख़्लाक़ आया। मैंने अपने दोस्तों और साथियों से कहा। ये जवान यहूदी मालूम होता है। मेरे साथियों को ये बात बुरी लगी। मैं बाहर आया तो वो जवान भी बाहर आ गया। लेकिन फिर अंदर चला गया। और उन मेरे साथियों से पूछा के ये बड़े साहब मेरे मुतअल्लिक़ तुम से क्या कह रहे थे। उन्होंने उसके बताने से इजतिनाब किया। लेकिन जब उसने इसरार किया तो उन्होंने कह दिया के हमारे शेख तुम्हें यहूदी बता रहे थे। इब्राहीम ख़्वास फ़रमाते हैं के ये बात सुनते ही वा जवान मेरे क़दमों में गिर पड़ा। और मुसलमान हो गया। और कहने लगा के मैं इम्तिहान ही की नीयत से आया था। और ये सोच कर आया था के अगर ये लोग सच्चे हैं तो उनमें से कोई मुझे ज़रूर पहचान लेगा। चुनाँचे शेख की निगाह ने मुझे ताड़ लिया। (रियाज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 8)

सबक़:- जो लोग अल्लाह को पहचान लेते हैं और ज़ुमरा-ए-आरफ़ीन में आ जाते हैं फिर वा हर नेक व बद और हर ख़ैरो शर को भी पहचानने लगते हैं। और उनके इल्म व इर्फ़ान से कोई चीज़ बाहर नहीं रहती।

हिकायत नम्बर(714) तक़्वा

हज़रत इब्राहीम इब्ने अदहम रहमत-उल्लाह अलेह ने एक रोज़ एक बाग़ में नहर के अन्दर सेब बहते हुए देखा। और ये समझ कर के उसकी क्या क़ीमत हो सकती है। उठाया और खा लिया। खा लेने के

बाद आप मुतफक्किर हुए और सोचने लगे के कहीं ये सेब खा लेना ना जायज़ और हराम ना हो। खुदा जाने ये सेब किस का था। और कैसा था। जो मैंने खा लिया। क़यामत के रोज़ अगर उसकी बाज़ पुर्स हो गई तो क्या जवाब दूंगा? इसी फिक्र में बाग़ के मालिक के घर पहुँचे। और दरावाज़ा खटखटाया। एक लोंडी बाहर निकली। हज़रत इब्राहीम कहने लगे। मैं बाग़ के मालिक से मिलना चाहता हूँ। लोंडी ने बताया के बाग़ की मालिक एक औरत है। हज़रत इब्राहीम ने फ़रमाया। उससे कह दो। मैं उससे मिलना चाहता हूँ। चुनाँचे बाग़ की मालिका बाहर निकली। और हज़रत इब्राहीम से सारा क़िस्सा सुनकर कहने लगी। इस बाग़ का आधा हिस्सा मेरा है। और आधा बादशाह का। मैं अपना हक़ तो माफ करती हूँ। और बादशाह के हक़ की मैं ज़िम्मेदार नहीं। बादशाह बलख़ में था। हज़रत इब्राहीम आधा हिस्सा बख़्शवा कर बाक़ी के आधे हिस्से को बख़्शवाने के लिए बलख़ पहुँचे। और बादशाह से भी माफ करा के दम लिया। (रिवायात, सफ़ा 308)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दे बड़े ही मुत्तक़ी और परहैज़गार होते हैं। वो पराई चीज़ पर कभी क़ब्ज़ा नहीं करते। और हराम, ना जायज़ चीज़ के इस्तेमाल से हमेशा बचते हैं। मगर आह! आज कल तो ये आलम है के

कहाँ का हलाल और कहाँ का हराम
जो साहब खिलाए वो चट कीजिए

हिकायत नम्बर (715) फिज़ूल खर्ची

एक फिज़ूल खर्च अमीर आदमी से एक भिकारी ने सवाल किया "खुदा के नाम पर एक दीनार मुझे अता कीजिए" अमीर आदमी ने हैरत के साथ सायल से पूछा। के तुम ने इतना ज़्यादा मुझ से क्यों माँगा। जब के दूसरों से तुम बहुत कम तलब करते हो।

भिकारी ने जवाद दिया। बात ये है जनाब! दूसरे लोगों से मुझे उम्मीद है के फिर दोबारा भी उनसे मुझ कुछ ना कुछ मिलेगा। लेकिन आप जिस तर्ज़ से खर्च कर रहे हैं, उसके पेशे नज़र आईंदा आपसे भीक मिलने की तवक्क़ो नहीं है। क्योंके आप खुद मुफलिस हो चुके होंगे। इसलिए इसी वक़्त जितना मिल जाए ग़नीमत है। फिज़ूल खर्च ये बात सुनकर बड़ा मुतास्सिर हुआ। और फिर एहतियात से खर्च करने लगा। (रिवायात, सफ़ा 353)

सबक़:- इंसान को बड़ी एहतियात से खर्च करना चाहिए। और

फिज़ूल खर्ची से बचना चाहिए। वरना फिज़ूल खर्ची के हाथों मुफलिस और भिकारी बनना पड़ता है।

हिकायत नम्बर(716) इसतक़लाल

पुराने ज़माने में एक आदमी था। जो एक शहर से दूसरे शहर का चक्कर लगाया करता था। उसके पास एक मोटा ताज़ा बैल था। इस बैल को वो अपने कांधे पर लिए घूमा करता था। लोग उसकी कुव्वत का ये कमाल देखते तो हैरान रह जाते थे। वो सोचा करते थे ये बला की कुव्वत इस मामूली शख़्स में कहाँ से आ गई। ये क्या खाता है? कहाँ से ये कुव्वत लाता है? एक मर्तबा लोगों में से एक ने ये कमाल देखकर उससे पूछा। के तुम ने इतनी ज़बरदस्त क़ुव्वत व ताक़त कहाँ से और कैसे हासिल की? उसने जवाब दिया। इस बैल को जब ये ज़रा सा बछड़ा था। मैं रोज़ अपने कंधे पर उठाने का आदी हूँ। कोई दिन भी ऐसा नहीं गुज़रा के मैं उसे अपने कंधे पर ना उठाता हूँ। इस मश्क़ और मदावमत व इसतक़लाल का नतीजा ये हुआ के जैसे जैसे उसका वज़न बढ़ता गया। मेरी कुव्वत व ताक़त भी बढ़ती गई। यहाँ तक के ये अब अगरचै पूरा सांड बन चुका है मगर इसे अपने कांधे पर उठा लेने में मुझे ज़रा भी तकलीफ नहीं होती। (रिवायात, सफ़ा 55)

सबक़:- जो इंसान हिम्मत व मदावमत व इसतक़लाल से काम लेता है वो कामयाबी से हमकिनार हो जाता है और इसतक़लाल व मदावमत से बड़ी बड़ी मुश्किलें हल हो जाती हैं। और कुव्वते बर्दाश्त व तहम्मुल में इज़ाफा होता है। पस हमें भी हिम्मत व इसतक़लाल और मदावमत से काम लेना चाहिए।

हिकायत नम्बर(717) सिद्दीके़ अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह

हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह फ़रमाते हैं के एक मर्तबा मुशरिकीने मक्का ने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम पर हमला करके हुज़ूर को तकलीफ पहुँचाई और कहने लगे के तू ही एक खुदा बताता है। खुदा की क़सम किसी को मुशरिकीने मक्का से मुक़ाबला करने की जुर्रात ना हुई मगर अबु बक्र सिद्दीक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह आगे बढ़े। और मुशरिकीन को मार मार कर हटाने लगे और धक्का देकर गिराने लगे। और फ़रमाते जाते थे। अफसोस तुम ऐसे शख़्स को क़त्ल करना चाहते हो जो कहता है, मेरा परवरदिगार एक है। फिर हज़रत अली चादर उठाकर रोने लगे। हत्ता के

आपकी दाढ़ी मुबारक तर हो गई। फिर फ़रमाया। खुदा ताअला तुम्हें हिदायत दे। ये तो बतलाओ के मोमिन आले फिरऔन अच्छे थे या अबु बक्र अच्छे हैं। लोग खामोश रहे। तो खुद आप ही ने जवाब दिया। तुम क्यों नहीं जवाब देते। अल्लाह की क़सम! हज़रत अबु बक्र की एक घड़ी उनके हज़ार घंटों से बेहतर है। क्योंके वो अपने ईमान को छुपाते थे और अबु बक्र ने अपने ईमान का अलल एलान इज़हार किया। (तारीख़-उल-खुलफा, हज़रत अबु बक्र की शुजाअत के बयान में, सफ़ा 34)

सबक़:- हज़रत अबु बक्र सिद्दीक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह बड़े दिलैर और बहादुर थे। और आपकी हिम्मत व जुर्रात का इक़रार हज़रत शेरे खुदा रज़ी अल्लाहो अन्ह को भी है। और ये भी मालूम हुआ के हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह को हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से बड़ी मोहब्बत थी। और ये भी मालूम हुआ के अपने ईमान को ना छुपाना और उसका एलान करना बेहतर और हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह के नज़दीक़ फज़ीलत का मौजिब है।

हिकायत नम्बर(718) जमा क़ुरआन

मसीलमा कज़्ज़ाब की जंग के बाद हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ी अल्लाहो अन्ह को बुला भेजा। हज़रत ज़ैद जिस वक़्त सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह के पहुँचे तो उस वक़्त हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह भी सिद्दीक़े अक्बर के पास बैठे थे। सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने हज़रत ज़ैद से फ़रमाया। के ये उमर फारूक़े आज़म मुझ से कहते थे के जंग यमामा में बहुत से मुसलमान शहीद हो गए हैं। मुझे डर है के इसी तरह अगर मुसलमान शहीद होते रहे तो हाफिज़ों के साथ क़ुरआन शरीफ भी ना उठ जाए। इसलिए मैं मुनासिब समझता हूँ के क़ुरआन शरीफ को जमा कर लिया जाए। मैंने उन्हें ये जवाब दिया था के *कैफा तफ़्अल शैअन लम यफ़्अलहू रसूलुल्लाही सल-लल्लाहो तआला अलेही व सल्लम* यानी "वो काम कैसे करोगे जो काम रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने नहीं किया।"

मगर उमर फारूक़ ने ये जवाब दिया के "वल्लाह ये काम नेक है" (यानी अगरचे ये काम रसूले करीम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने नहीं किया। मगर काम अच्छा है) इस बात पर वो बराबर इसरार करते रहे।

हत्ता के मेरा भी सीना खुल गया। और मैं भी उसकी अहमियत को समझ गया।

(ऐ ज़ैद) तुम जवान और अक़लमंद आदमी हो। तुम कातिब वही भी रह चुके हो। लिहाज़ा तुम तलाश करके क़ुरआन शरीफ को एक जगह जमा कर दो। हज़रत ज़ैद को ये हुक्म बहुत शाक़ गुज़रा। और वो भी यही फ़रमाने लगे के

कैफा तफ़्अलूना शैअन लम यफ़्अलहू रसूलुल्लाही सल-लल्लाहो तआला अलेही व सल्लम। आप वो काम कैसे करेंगे जो काम रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने नहीं किया। हज़रत अबु बक्र रज़ी अल्लाहो ने भी वही जवाब दिया के "खुदा की क़सम ये काम अच्छा है।" मगर हज़रत ज़ैद को इसमें ताम्मुल ही रहा। हत्ता के ज़ैद का भी सीना खुल गया। और वो भी जमा क़ुरआन की अहमियत को समझ गए। फिर हज़रत ज़ैद ने काग़ज़ के परचों और ऊँट बकरियों के शानों की हड्डियों, दरख़्तों के पत्तों और हाफिज़ों के सीनों से क़ुरआन शरीफ को हासिल किया। और जमा करके हज़रत सिद्दीक़े अक्बर की ख़िदमत में पेश कर दिया। (बुखारी शरीफ, बाब जमा अलक़ुरआन, सफ़ा 745)

सबक़:- हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह ने क़ुरआने पाक को जमा फ़रमा कर उम्मत पर बहुत बड़ा एहसान फ़रमाया है। सारी उम्मत आपके इस एहसान के ज़ेर बार है। और ये भी मालूम हुआ के आज कल जो लोग कई नेक कामों को बिदअत कह देते हैं के ये काम रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने नहीं किया था। और इसी लिए सिद्दीक़े अक्बर और हज़रत ज़ैद ने भी पहले यूं फ़रमाया था। के वो काम कैसे करें। जो रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने नहीं किया। मगर जब अनशराह सदर हो गया। तो जवाब ये था के काम अच्छा है। अगरचै रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने नहीं किया। "जमा क़ुरआन" बावजूद इसके के रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम से साबित ना था। मगर [illegible] अच्छा समझ कर सहाबा इक्राम ने कर लिया। और किसी ने इस पर बिदअत का फतवा ना लगाया। इसी तरह आज भी अगर कोई मुसलमान जलूस मीलाद शरीफ निकाले। या मेहफिल मीलाद शरीफ और ग्यारहवीं शरीफ का इनेक़ाद करे। या कोई और नेक काम करे और उस पर कोई शख़्स यूं कहे के मरवजा हय्यत से इन कामों को रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने नहीं किया। तो उसके इस ज़ौम का हम ये भी जवाब

दे सकते हैं के।

वल्लाही हाज़ा ख़ैरन "खुदा की क़सम ये काम अच्छा है।"

फिर भी अगर कोई ना माने तो समझ लीजिए के इनशराह सदर उसके नसीब ही में नहीं।

हिकायत नम्बर(719) माफी-उल-अरहाम का इल्म

हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाहो अन्ह का वक़्त विसाल शरीफ आया। तो आपने हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ी अल्लाहो अन्हा से फ़रमाया। बेटी! मैं तुझे हर हाल में खुश देखना चाहता हूँ। तेरी ग़ुर्बत से मुझे रंज पहुँचता है। और खुशहाली से राहत। मेरे मरने के बाद मेरा तर्का तेरे जो दूसरे भाई और बहनें हैं, उन पर क़ुरआन की रू से तक़सीम करना। हज़रत आयशा ने अर्ज़ किया। अब्बा जान! ऐसा ही होगा। मगर तो एक ही बहन असमा है। दूसरी बहन है ही कब? फ़रमाया। तुम्हारी सोतैली माँ हबीबा हामला है। उसके पेट में लड़की है पस मैं उसकी भी तुम्हें वसीयत करता हूँ। चुनाँचे आपके बाद उम्मे कुलसुम पैदा हुईं। (तारीख़-उल-खुलफा, सफ़ा 79 सिद्दीक़े अक्बर की वफात के बयान में)

सबक़:- सिद्दीक़े अक्बर रज़ी अल्लाह अन्ह जो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के ग़ुलाम हैं। उनकी ये शान है के खुदा तआला की अता से वो माफी-उल-अरहाम का भी इल्म रखते हैं। फिर जो उनके आक़ा व मौला सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम हैं और जिनके सदक़े में उन्हें ये शान मिली। उनकी नज़र से माफी-उल-अरहाम ये कोई और चीज़ केसे ग़ायब रह सकती है। फिर किस क़द्र बेख़बर हैं वो लोग जो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के लिए भी यूं लिख और कह देते हैं के उन्हें दीवार के पीछे का भी इल्म ना था। (मआज़ अल्लाह)

हिकायत नम्बर(720) चोरी

हज़रत अहमद हर्ब रहमत-उल्लाह अलेह के पड़ोस में एक शख़्स के हाँ चोरी हो गई। आप अपने दोस्तों के साथ उसकी ग़मख़्वारी को तशरीफ़ ले गए। पड़ोसी ने बड़ी खंदा पैशानी से उनका इसतक़बाल किया। हज़रत अहमद हर्ब ने बताया के हम तुम्हारी चोरी हो जाने का अफसोस करने आए हैं। पड़ोसी बोला। मैं तो अल्लाह का शुक्र अदा कर रहा हूँ। और मुझ पर उसके

तीन शुक्र वाजिब हो गए हैं। एक ये के दूसरों ने मेरा माल चुराया है। मैंने नहीं। दूसरे ये क अभी आधा माल मेरे पास मौजूद है। तीसरे ये के मेरी दुनिया को ज़रर पहुँचा है। और दीन मेरे पास है। (मख़्ज़न अखलाक़, सफ़ा 238)

सबक़:- अल्लाह के बन्दे इबतला में भी अल्लाह का शुक्र ही अदा करते हैं। और कभी उसका शिकवा नहीं करते। और ये भी मालूम हुआ के सबसे बड़ी दौलत दीन है। ये सलामत है। तो कुछ ग़म ना होना चाहिए। बक़ौल शायर...

कुछ रहे या ना रहे पर ये दुआ है के अमीर!
नज़े के वक़्त सलामत मिरा ईमान रहे

हिकायत नम्बर(721) दुनिया की तमसील

एक शख़्स ने ख़्वाब में देखा के वो किसी जंगल में चला जाता है। उसने देखा के मेरे पीछे एक शेर आ रहा है। ये भागा जब थक गया तो देखा के आगे एक बड़ा गहरा गढ़ा है। उसने जान बचाने के लिए गढ़े में कूदना चाहा। मगर गढ़े के अन्दर झांका। तो उसमें एक अज़दहा मुंह खोले बैठा था। अब ये घबराया के क्या करे। पीछे शेर है। और आगे अज़दहा। अचानक उसे एक दरख़्त की टहनी नज़र आई। ये उससे लटक गया। मगर जब हाथ टहनी को डाल कर लटक चुका तो उसने देखा के उस टहनी को दो सियाह और सफेद चूहे जड़ से काट रहे हैं। अब तो ये बहुत डरा के थोड़ी देर में ये टहनी कट जाएगी। और मैं गिर जाऊँगा। और शेर व अज़दहा का लुक़मा बन जाऊँगा। इत्तिफाक़न दरख़्त पर उसे शहद का एक छत्ता नज़र पड़ा। और ये उस शहद के पीने में मशग़ूल हो गया। ना शेर का खयाल रहा ना अज़दहा का। और ना चूहों का डर। अचानक वो टहनी जड़ से कट गई। और ये गिर पड़ा। और शेर ने फाड़कर गढ़े में गिरा दिया। और अज़दहे ने उसे निगल लिया। (मख़्ज़न अखलाक़, सफ़ा 383)

सबक़:- जंगल से मुराद दुनिया है। और शेर मौत है। जो पीछे लगी हुई है। और गढ़ा क़ब्र है जो आगे है। और अज़दहा बुरे अमल हैं। जो क़ब्र में डसेंगे। और दो चूहे सफेद और सियाह। दिन और रात हैं और दरख़्त उम्र है। जिसे वो काट रहे हैं। और शहद का छत्ता दुनिया की फानी लज़्ज़ात हैं। जिनमें मशग़ूल होकर इंसान मौत, क़ब्र और सज़ाऐ आमाल बद से ग़ाफिल हो जाता है। फिर अचानक मौत आ जाती है। और बजुज़ नदामत व हसरत के कुछ हासिल नहीं होता।

हिकायत नम्बर(722) आईनूनी या इबादल्लाही

माहाना फैज़-उल-इस्लाम रावलपिंडी ने अपनी मार्च 63ई० की इशाअत में "उल्मा-ए-अमृतसर" के ज़ेरे उनवान "मौलाना नूर अहमद साहब पसरवरी सुम्मा अमृतसरी" के हालात लिखते हुए मौलाना का एक अपना बयान कर्दा ये वाक़ेया भी लिखा है।

"मैंने एक दफा मकका से पैदल चल कर दरबारे नबव्वी में हाज़री का शर्फ हासिल किया।" असनाऐ सफर एक रात ऐसी आई के क़याम के लिए कोई मंज़िल ना थी। इसलिए बड़ी परेशानी हुई। मअन मुझे याद आया के हज़रत रसूले खुदा सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की हदीस है के सफर में राह भूल जाओ तो बुलंद आवाज़ से *या इबादल्लाही आईनूनी* "ऐ अल्लाह के बन्दों मेरी मदद करो।" पुकारा करो। मैंने उस पर अमल करते हुए तीन बार पुकारा। और फिर एक बार चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई। तो क़रीब ही एक झोंपड़ी नज़र आई। और मैं इस तरफ़ चला। जब क़रीब पहुँचा तो देखा के चन्द बच्चे झोंपड़ी के बाहर खेल रहे हैं। और ये बच्चे मुझे देखते ही पुकार उठे। "*जाआ ज़ीफुल्लाह*" अल्लाह का मेहमान आया।

बच्चों की आवाज़ सुनते ही अन्दर से एक मर्द निकला। और उसने मेरी बड़ी ख़ातिर व मदारात की। खाना खिलाय। और रात बसर करने के लिए बिस्तर वग़ैरा दिया। और सुबह को मुझे रास्ते पर डाल दिया।

मौलाना फ़रमाते हैं के मैंने उससे क़ब्ल यानी *आईनूनी या इबादल्लाही* पुकारने से क़ब्ल बक़ायमी होश व हवास इस इलाक़े में कोई झोंपड़ी ना देखी थी।"

सबक़:- हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का इर्शादे बरहक़ है और आपके इर्शाद के मुताबिक़ इस क़िस्म की मुश्किल के वक़्त अल्लाह के बन्दों को मदद के लिए पुकारना हर गिज़ शिर्क नहीं है। वरना हुज़ूर ऐसी तालीम क्यों देते और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की अहादीस मुबारका के लिए गहरी मोहब्बत और सच्ची अक़ीदत दरकार है और अगर मोहब्बत व अक़ीदत ही में ज़ौफ हो तो फिर ऐसी अहादीस मुबारका भी ज़ईफ नज़र आने लगती हैं।

हिकायत नम्बर(723) सबके हाजत रवा सलामुन अलेक

शबे मैराज हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जब

सिद्रत-उल-मुनतहा तक पहुँचे तो जिब्राईले अमीन वहाँ रूक गए। और अर्ज़ की। या रसूल अल्लाह! अब मैं यहाँ से बाल भर भी आगे नहीं बढ़ सकता। अगर मैं यहाँ से आगे बढ़ूँगा तो नूरानियत से जल जाऊँगा। हुज़ूर ने फ़रमाया। अच्छा ऐ जिब्राईल!

हल लका मिन हाजाती तेरी कोई हाजत है?

अर्ज़ किया।

सलिल्लाहा अन अबसुता जनाहिया अलस्सिराती लीउम्मूतिका हत्ता यजूज़ू व अलेही यानी अल्लाह से मेरे लिए सवाल कीजिए के क़यामत के रोज़ आपकी उम्मत के लिए मैं पुल सिरात पर अपने पर बिछा दूंगा। ताके आपकी उम्मत आसानी से ऊपर से गुज़र जाए। (मवाहिब लुदनिया, सफ़ा 29, जिल्द 2)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जिब्राईले अमीन के भी हाजत रवा हैं। और आपने खुद उससे फ़रमाया। के कोई हाजत हे। तो पेश करो। फिर जिब्राईल ने भी ये नहीं कहा के हुज़ूर मेरी जो हाजत होगी मैं अपने अल्लाह से खुद कह लूंगा। नहीं जिब्राईल ने अपनी हाजत हुज़ूर की बारगाह में पेश की। और अल्लाह से जो माँगा हुज़ूर के वसीले से माँगा। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ग़ुलामी अल्लाह का बहुत बड़ा ईनाम है। इस निसबत से हम जिब्राईल की नज़रों में भी मेहबूब बन गए हैं। देखिये जिब्राईल ने अगर अपनी हाजत पेश की तो ये के मैं पुल सिरात पर अपने पर बिछा देने चाहता हूँ। ताके हुज़ूर की उम्मत को आसानी हो जाए। फसल-लल्लाहो अलेही व सल्लम।

हिकायत नम्बर(724) हलवान का पहाड़

हज़रत फारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह के ज़माना-ए-खिलाफत में हज़रत नज़ला बिन मुआविया रज़ी अल्लाहो अन्ह अपने साथियों समेत हलवान में मसरूफ जिहाद थे। इसी असना में एक पहाड़ पर नमाज़े मग़रिब का वक़्त हो गया। और हज़रत नज़ला ने वहीं अज़ान देना शुरू की। जब आपने कहा।

अल्लाहू अक्बर अल्लाहू अक्बर तो उस पहाड़ में से एक ग़ैबी आवाज़ आई।

कब्बरता कबीरन या नज़लतू "इखलास का कलमा है ऐ नज़ला!"

फिर जब कहा *अशहदअन लाइलाहा इल्लल्लाह*.....तो आवाज़ आई:

कलीमतुलइखलास या नज़लतू "इख़लास का कलमा है ऐ नज़ला!"

फिर जब कहा *अशहदअन्ना मोहम्मदर्रसूल अल्लाह*........ तो आवाज़ आई:-

हुवल्लज़ी बश्शरना बिही ईसबना मरियमू

"यही वो ज़ाते पाक है जिसकी बशारत हमें ईसा अलेहिस्सलाम ने दी।"

फिर जब कहा *हय्या अलस्सलाह*....... तो आवाज़ आई:-

तूबा लिमन मशिया इलेहा व ज़बा अलेहा

"बशारत हो उसे जो नमाज़ पढ़ने गया और हमेशा पढ़ता रहा।"

फिर जब कहा *हय्या अलल फलाह*...... तो आवाज़ आई:-

क़द अफलाहा मन अहाबाबा मुहम्मदन "निजात पा गया वो शख़्स जिसने मोहम्मद(स०अ०स०) को माल लिया" फिर जब कहा *अल्लाहो अक्बर अल्लाहो अक्बर ला इलाहा इल्लल्लाहू*..... तो आवाज़ आई:

अख़लासतल इख़लासा कुल्लहू या नज़लता "तुम ने पूरा पूरा इख़लास बयान कर दिया ऐ नज़ला!"

हज़रत नज़ला अज़ान से फारिग़ हुए तो आपने आवाज़ दी के ऐ ग़ैब से आवाज़ देने वाले तो फरिश्ते है या जिन्न है। या कोई अल्लाह का मक़्बूल इंसान। तो कौन है? तूने हमें अपनी आवाज़ तो सुना दी। अब अपनी सूरत भी दिखा दे। देख हम अल्लाह और उसके रसूल के और हज़रत उमर के वफ़्द हैं। हमारी बात माल और सामने आ।

इतने में पहाड़ फटा। और उसमें से एक सफेद रेश और सफेद बुज़ुर्ग निकले। और कहने लगे। अस्सलाम अलेकुम व रहमत-उल्लाह। हज़रत नज़ला और उनके साथियों ने व अलेकुम अस्सलाम कहा। और पूछा आप कौन हैं? फ़रमाया मैं हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम का वसी हूँ। मेरा नाम ज़रीब बिन बरग़ला है। हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम ने मुझ इस पहाड़ पर ठहराया है। और मेरे लिए लम्बी उम्र की दुआ फ़रमाई है और दुआ फ़रमाई है के मैं उनके आसमान से नाज़िल होने तक ज़िन्दा रहूँ। चुनाँचे मैं आज तक ज़िन्दा हूँ। ऐ असहाब मोहम्मद! (स०अ०स०) मैं हुज़ूर मोहम्मद मुसतफा(स०अ०स०) से तो मुलाक़ात कर नहीं सका। अब ये हज़रत उमर का दौरे ख़िलाफत है। उमर फारूक़ को मेरा सलाम कहना। (कंज़ुल आमाल, बरहाशिया मसनद इमाम अहमद, सफ़ा 247 जिल्द 2)

सबक़:- सहाबा इक्राम की बहुत बड़ी शान है। बिलखसूस हज़रत उमर फारूक़ रज़ी अल्लाहो अन्ह की तो इतनी बड़ी शान है। के हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम के हवारी भी उनपर सलाम भेजते हैं। और ये भी मालूम हुआ

के हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम की दुआ से उनके एक ग़ुलाम को तवील उम्र मिल गई। फिर खुद उनका तवली उम्र पाना क्यों मुमकिन नहीं। और ये भी मालूम हुआ के हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम आसमान पर ज़िन्दा मौजूद हैं। और वो आसमान से नज़ूल फ़रमायेंगे। और ये भी मालूम हुआ के अहले इस्लाम घरों में हों। जंगलों में या पहाड़ों पर, और हालते अमन में हों या जंग में। नमाज़ को वो किसी हाल में नहीं छोड़ते।

हिकायत नम्बर (725) अमीन भिकारी

एक फक़ीर मिस्र की जामअे मस्जिद के दरवाज़े पर बैठा भीक माँग रहा था। कुछ रईस लोग वहाँ से गुज़रे। उसने उनसे सवाल किया। मगर किसी ने कुछ ना दिया। उन लोगों में से एक रईस की जैब से दीनारों भरी थेली गिर पड़ी। इस थेली में पाँच सौ दीनार थे। उनके जाने के बाद फक़ीर की नज़र पड़ी। तो उसने वो थेली उठा ली। ओर हिफाज़त के साथ रख ली। इतने में दीनारों का मालिक घबराया हुआ आया। और पूछा। मेरी थेली कहीं गिर पड़ी है। तुम ने तो नहीं देखी? फक़ीर ने कहा। वो थेली मुझे मिली है। और मेरे पास है फिर उसने थेली निकाल कर पेश कर दी। वो शख़्स बड़ा खुश हुआ और कहा अब मैं तुझे पंद्रह दीनार दूंगा। फक़ीर बोला। मैं कुछ नहीं लूंगा। इसलिए के मैंने पहले आपसे एक चीज़ बतौर एहसान के माँगी थी मगर अब नहीं लूंगा। क्यों अब अगर कुछ क़बूल करूंगा तो उसके मअनी ये हुए के दीन देकर दुनिया ले लूं। (हिकायत व रिवायात, सफ़ा 328)

सबक़:- पहले ज़माने के भिकारी भी बड़े अमीर होते थे। मगर आज कल ये रोशन आम है के "राम राम जपना पराया माल अपना" या (बज़बान पंजाबी) लबी चीज़ खुदा दी। ना ढेले दी ना पादी।

हिकायत नम्बर (726) ज़हरीला सांप

हज़रत अबु अलसायब रज़ी अल्लाहो अन्ह ने फ़रमाया। के एक नोजवान सहाबी की नई नई शादी हुई। एक दफा वो अपने घर आए। तो देखा। के उनकी दुलहन दरवाज़े में खड़ी है। ये देखकर उनको ग़ैरत आई। और दुलहन को मारने के लिए नेज़ह उठा लिया। दुलहन ने का। मुझे मारो नहीं। पहले अन्दर चल कर देखो। के किस चीज़ ने मुझे बाहर खड़े होने पर मजबूर किया है? चुनाचे वो सहाबी अन्दर गए। तो देखा। के एक बहुत बड़ा सांप कुंडली मारे बिछोने पर बैठा है। आपने वो नेज़ह उस सांप को मारा। और सांप नेज़े में

पिरो लिया। सांप ने तड़प कर उन पर हमला करके डस लिया। सहाबी का इसी वक़्त इन्तिक़ाल हो गया। और वो सांप भी मर गया। (मिश्कात शरीफ़, सफ़ा 352)

सबक़:- सहाबा इक्राम बड़े ग़ैरत मंद थे। के बीवी को महेज़ दरवाज़े में खड़े देखकर ये नोजवान सहाबी ग़ैरत में आ गए। और बे क़रार हो गए। मगर आज कल के बअज़ मुसलमान अपनी औरतों को थैट्रों, कलबों में ले जाते हुए भी नहीं शर्माते। और पराये मर्दों से खुद ही अपनी औरतों का हाथ मिलाकर खुश होते हैं। और फख्र करते हैं। मुसलमानों को अपने इसलाफ के नक़्शे क़दम पर चलना चाहिए।। और औरतों को पर्दे में रखना चाहिए।

हिकायत नम्बर(727) अबु अलमआली की हिकायत

मशायख़ अेज़ा की एक जमात ने मुतअद्दिद इसनाद के साथ रिवायात किया है। के अबु अलमआली मोहम्मद बिन अहमद बग़दादी एक मर्तबा हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह की मजलिसे वअज़ में हाज़िर हुए। हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह एक बहुत बड़े मजमअे में वअज़ फ़रमा रहे थे। ये भी आकर बैठ गए। थोड़ी देर के बाद अबु अलमआली को रफ़अे हाजत की ज़रूरत लाहक़ हुई और इतने बड़े मजमअे में से निकलने की कोई सूरत नज़र ना आई। ये बड़े परेशान हुए। और उसी परेशानी के आलम में हुज़ूर ग़ौसे आज़म की तरफ़ देखने लगे। हुज़ूर ग़ौसे आज़म मिंबर से नीचे उतरे। और सफ़ा शान से उतरे के मिंबर पर भी ग़ौसे आज़म तशरीफ़ फ़रमा रहे। और उनके पास भी तशरीफ़ ले आए। मगर उनके पास तशरीफ़ लाते हुए दूसरा कोई ना देख सका। अबु अलमआली के पास पहुँच कर आपने अपने रूमाल से उनका सर ढांप दिया।

अबु अलमआली ने देखा के वो एक वसी सहरा में हैं जिसमें एक नहर के पास एक दरख़्त है। अबु अलमआली ने अपनी कुंजियाँ उस दरख़्त पर लटका दीं और कज़ाऐ हाजत के बाद नहर से वज़ू करके दो रकअत नफिल पढ़े। और जब सलाम फैरा तो हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने उनके सर से रूमाल उठा लिया। और उन्होंने देखा के वो बदस्तूर उसी मजलिस वअज़ में हैं। और हुज़ूर ग़ौसे आज़म बदस्तूर वअज़ फ़रमा रहे हैं। गोया मिंबर से उतरे ही नहीं। अबु अलमआला ने ग़ौर किया। तो वज़ू के पानी से आज़ा तर थे। हाजत भी मरफ़ूअ थी। मगर कुंजियाँ ना मिलीं। एक मुद्दत के बाद वो एक क़ाफ़ले के हमराह बिलादे अजम की तरफ़ निकले। बग़दाद से चौदह दिन के सफर के

बाद क़ाफ़ला उसी सहरा में पहुँचा। अबु अलमआली ने देखा के वही नहर है और वही दरख़्त। और दरख़्त पर उनकी कुंजियाँ भी लटक रही हैं। क़ाफ़ला जब वापस आया तो अबु अलमआली हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह की ख़िदमत में हाज़िर हुए। ताके वो सारा माजरा कह सुनायें। मगर हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने उनका कान पकड़ कर फ़रमाया।

"अबु अलमआली! मेरी ज़िन्दगी में इसका ज़िक्र किसी से ना करना।" (नष्र-उल-मुहासिन-उल-इमाम याफ़ई बर हाशिया जामअे-उल-करामात-उल-जहानी, जिल्द अव्वल, सफ़ा 57)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दों बिलख़ुसूस हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़ी अलाह अन्हुम को अल्लाह तआला ने बड़ी बड़ी ताक़तें अता फ़रमाई हैं। और ये पाक लोग बड़े बड़े तसर्रूफ़ात के मालिक हैं और ये अल्लाह वालों की करामात हैं जो बरहक़ हैं। करामात का इंकार अल्लाह की दीन व अता और उसकी बे पनाह कुद्रत का इंकार है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह के मक़्बूल बन्दे एक वक़्त में मुतअद्दिद मुक़ामात पर भी हो सकते हैं। और ये भी मालूम हुआ। के ग़ौसे आज़म रज़ी अल्लाहो अन्ह को अल्लाह तआला ने तकालीफ़ व मुश्किलात के रफ़े व हल की ताक़त बख़्शी है। हम अगर उनकी तरफ़ क़ज़ाऐ हाजात के लिए रूजू करें। तो ये हर गिज़ शिर्क नहीं है।

हिकायत नम्बर (728) क़ज़ीब की हिकायत

हज़रत क़ज़ीब-उल-बान रहमत-उल्लाह अलेह से क़ाज़ी-ए-मवस्सिल दुश्मनी रखता था। और उसका इरादा था के वो हाकिमे वक़्त से उनकी कोई शिकायत करके उन्हें शहर मवस्सिल से निकलवा दे। क़ाज़ी-ए-मवस्सिल का बयान है के मेरे इस इरादे की अल्लाह के सिवा किसी को ख़बर ना थी। एक रोज़ हज़रत क़ज़ीब मवस्सिल के एक कूचे से गुज़र रहे थे। और दूसरी तरफ़ से क़ाज़ी-ए-मवस्सिल भी आ रहे थे। क़ाज़ी-ए-मवस्सिल कहते हैं। के मैंने दिल में कहा के अगर इस वक़्त मेरे साथ कोई दूसरा भी होता तो मैं उससे कहता के उसे पकड़ कर हाकिमे वक़्त के पास ले चलो। क़ाज़ी-ए-मवस्सिल ने इतना सोचा ही था के वो क्या देखता है के हज़रत क़ज़ीब ने एक क़दम उठाया तो एक कुर्दी की शक्ल में थे। फिर एक क़दम उठाया तो एक फ़ुक़िहा की शक्ल में नमूदार हुए। फिर आपने क़ाज़ी-ए-मवस्सिल से फ़रमाया। के क़ाज़ी साहब! आपने चार सूरतें देखीं हैं। उनमें से क़ज़ीब कौन सा है। जिसको तुम हाकिम से कहकर निकलवाना चाहते हो? ये सुनकर क़ाज़ी-ए-मवस्सिल

बे इख़्तियार आपके हाथ चूमने लगा। और उनकी दुश्मनी से तौबा की। (बहुज्जत-उल-असरार, सफ़ा 197)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दे आम इंसानों की मिस्ल नहीं होते। वो बड़ी शान के मालिक होते हैं। और खुदा तआला ने उन्हें बड़े बड़े इख़्तियारात व तसर्रूफात अता फ़रमाए हैं। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों की नज़र से दिल के भैद भी छुपे नहीं रहते। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों से दुश्मनी कोई नई बात नहीं ये पहले से चली आई है। खुश क़िस्मत हैं। वो लोग जो इस बुरी बात से तौबा कर लेते हैं।

हिकायत नम्बर(729) हज़रत अबु अब्दुल्लाह मोहम्मद क़ुरशी रहमत-उल्लाह अलेह

हज़रत अबु अब्दुल्लाह मोहम्मद क़ुरशी एक बहुत बड़े वली अल्लाह थे। और नाबीना थे। उनके एक मुरीद ने एक मर्तबा अपनी लड़की से दरयाफ़्त किया के आज घर में क्या पके। तो लड़की बोली। के आप मेरी आरज़ू पूरी ना कर सकेंगे। बाप ने कहा ज़रूर करूंगा। तुम कहो तो सही। लड़की बोली। तो मेरी आरज़ू है के मेरा निकाह अबु अब्दुल्लाह मोहम्मद क़ुरशी से कर दीजिए। बाप हज़ूर क़ुरशी की ख़िदमत में आया। और अपनी लड़की की आरज़ू ज़िक्र किया। हज़रत ने फ़रमाया। क़ाज़ी को बुला लाओ। चुनाँचे क़ाज़ी साहब आए। जिन्होंने निकाल पढ़ा दिया। और बाप ने लड़की को आरास्ता करके हज़रत शेख़ की खिदमत में हाज़िर कर दिया। जब औरतें निकल गईं तो हज़रत क़ुरशी ग़ुस्ल खाने में दाखिल हुए। और निकले। तो एक बेरेश खूबसूरत नोजवान तनदुरूस्त आँखें वाले उम्दा कपड़े पहने हुए ज़ाहिर हुए। लड़की ने हया के मारे अपना मुंह ढांप लिया। आपने फ़रमाया। ऐसा ना कर। मैं ही क़ुरशी हूँ। वो बोली के तू क़ुरशी नहीं। आपने खुदा की क़सम खाकर फ़रमाया। मैं ही क़ुरशी हूँ। लड़की ने पूछा के ये क्या माजरा है? तो फ़रमाया के मैं तेरे साथ इस हाल पर रहूंगा। और ग़ैरों के सामने इस हालत पर नज़र आऊँगा। लेकिन मेरी ज़िन्दगी में इस मामले की ख़बर किसी को ना देना। लड़की ने कहा। ऐसा ही करूंगी। (तबक़ात कुब्रा शैरानी, सफ़ा 135, जुज़ अव्वल)

सबक़:- अल्लाह वाले अपनी शानों को मख़लूक़ की नज़रों से छुपा कर रहते हैं। और खुदा तआला ने उन्हें बड़े बड़े तसर्रूफात पर क़ुद्रत

अता फ़रमाई है। और ये भी मालूम हुआ के किसी अल्लाह के मक्बूल की ज़ाहिरी हालत को देखकर उसे कभी हिक़ारत की नज़र से ना देखना चाहिए। के *"रब्बा अशअता अग़बरा"* हदीसे पाक के मुताबिक़ बअज़ सादा और दुनयवी जाह व जलाल से खाली मरदाने हक़ हक़ीक़त में बहुत पहुँचे हुए होते हैं। और ये भी मालूम हुआ के अच्छी और नेक औरतें हमेशा दीन और तक़्वे को पसंद करती हैं। और अपना शौहर ऐसा चाहती हैं जो खुदा के अहकाम का पाबंद और शरीअत पर चलने वाला है।

हिकायत नम्बर(730) सच्चा मुसलमान

एक ताजिर का इन्तिक़ाल हो गया। उसने बहुत सी दौलत अपने पीछे छोड़ी। उसका एक ही लड़का था। जो उसका वारिस था। मगर वो मुद्दत से मफ़्कूद-उल-ख़बर था। और उसका कोई पता ना था के वो कहाँ है। और इसी वजह से किसी की शक्ल व सूरत भी याद ना रही थी। कुछ मुद्दत के बाद तीन लड़कों ने ये दावा किया के वही मरहूम ताजिर के बेटे हैं यानी उनमें से हर एक का ये दावा था के ताजिर का लड़का मैं हूँ। ये तीनों क़ाज़ी के पास आए। और अपना दावा पेश किया। क़ज़ी ने मरहूम ताजिर की एक तसवीर मंगवाई। और कहा के जो लड़का उस तसवीर पर बंदूक़ का ठीक निशाना लगाएगा। वही वारिस होगा। तीनों में से दो लड़के तो निशाना लगाने को तैयार हो गए। मगर तीसरा परेशान हो गया। चहरे पर परेशानी के आसार ज़ाहिर हो गए। और आँखों से आँसू बहने लगे। और बोला के ना मुमकिन है के मैं अपने बाप की तसवीर को निशाना बनाऊँ। मुझे परवाह नहीं। मुझे कुछ मिले या ना मिले। मगर मैं ऐसा नहीं करूंगा। क़ाज़ी ने फैसला दे दिया के अपने बाप का हक़ीक़ी बेटा यही है। और यही मीरास का हक़्दार है। (हिकायत व रिवायात, सफ़ा 357)

सबक़:- मुसलमान होने के मुद्दई तो सब हैं। मगर जो लोग इस्लाम को अपना तख़्तता मश्क़ नहीं बनाते और इस पर इलहादो ज़ंदक़ा के तीर नहीं बरसाते। असल में वही सच्चे मुसलमान और जन्नत के जायज़ वारिस हैं

हिकायत नम्बर(731) पनाह

बादशाह बहराम एक मर्तबा शिकार के लिए निकला। और एक हिरन को देखकर उसके पीछे घोड़ा दौड़ा दिया। हिरन जान बचाने के लिए इधर उधर भागा। और ये भी उसको तआक्क़ुब करने लगा। हिरन पर

से प्यास का ग़ल्बा हुआ। और बेताक़ती से एक आराबी के ख़ैमे में घुस गया। जिसका नाम क़बीसा था उसने इसे पकड़कर रस्सी से बाँध दिया। बहराम भी ख़ैमे तक पहुँच गया। और क़बीसा से कहा के ऐ आराबी! मेरा शिकार तेरे ख़ैमे में है। उसे बाहर निकाल दो। क़बीसा ने ना पहचाना के ये कौन है और जवाद दिया के ऐ खूबसूरत सवार! के ये बात मुरव्वत से बईद है के जिस जानवर ने मेरी पनाह ली है। मैं उसे किसी के हवाले कर दूं। ताके वो उसे मार डाले। बहराम ने सख़्ती शुरू की। क़बीसा ने कहा। झगड़ा ना बढ़ा। जब तक तू अपने तीर से मेरा सीना छेद देगा। और मुझे क़त्ल ना कर देगा। तेरा हाथ इस हिरन की गर्दन तक नहीं पहुँच सकता। और जब तू मुझे क़त्ल कर देगा तो भी मेरे क़बीले वाले हिरन तेरे हवाले नहीं करेंगे। अपनी जान पर रहम करो। और हिरन का खयाल छोड़ दे। हाँ हिरन के अवज़ अगर तू मेरा ताज़ी घोड़ा जो ख़ैमे के दरवाज़े पर बंधा है ज़ीन व लगाम मतलन समेत लेना पसंद करे। तो इसे ले जा। मगर हिरन जो मेरी पनाह में आ चुका हैं वो मैं तुम्हारे हवाले नहीं कर सकता। बहराम को ये हिकायत बड़ी पसंद आई। और बाग मोड़ कर वापस चला गया। (अख़लाक़ मोहसिनी तालीम-उल-अख़लाक़, सफ़ा 486)

सबक़:- किसी बे यारो मददगार मज़लूम की मदद हिमायत करना बहुत बड़ी जवांमर्दी है। और अगर कोई जानवर भी किसी की पानह में आ जाए तो जवांमर्दी व इंसानियत ये है के उसकी मदद की जाए।

हिकायत नम्बर (732) लुत्फ व नर्मी

एक बादशाह बड़ा नर्म मिज़ाज और लुत्फ खू था। एक दिन शाही बावर्ची को एक ख़ास खाना तैयार करने का हुक्म दिया। चुनाँचे जब वो पका कर दूसरे खानों के साथ लाया। और बादशाह के आगे दसतरख़्वान पर रखा तो बादशाह ने पहले अपने फ़रमाईशी खाने पर नज़र डाली। तो उसमें मक्खि नज़र आई। उसे निकाल कर दूर किया। दूसरे लुक़मे में भी एक मक्खि देखी। तो उस खाने से हाथ खींच कर दूसरा खाना नोश जान किया। जब खा चुका तो बावर्ची को बुलाया। और कहा के तूने जो खाना पकाया बहुत लज़ीज़ था। कल भी वही तैयार करना। मगर शर्त ये है के उसमें मक्खियाँ ना डालना। हाज़ीन इस कलाम पर बड़े मुतज्जिब हुए के बादशाह ने कैसे नर्म व लुत्फ तरीक़ से बावर्ची को शर्मिंदा किया और अदब सिखाया है। (तालीम-उल-अख़लाक़, सफ़ा 487)

सबक़:- लुत्फ व नर्मी से अगर काम लिया जाए तो वो तलवार व

नेज़े से भी ज़्यादा काट करती है। मगर जो मौक़ा सख़्ती का हो वहाँ सख़्ती ही काम देती हें मसलन ग़द्दारों और सरकशों का सामना हो तो फिर *अलहदीद यक़्तअ बिलहदीद* "लोहा लोहे से काटा जाता है" के मुताबिक़ सख़्ती ही से काम लेना पड़ता है।

हिकायत नम्बर(733) सब्कत्गीन बाशाह

सब्क़त्गीन एक ग़ुलाम था। और उसके पास सिर्फ़ एक घोड़ा था। उस पर चढ़कर वो जंगल में जाया करता था। और अगर कोई शिकार हाथ आ जाता तो उसी पर गुज़ारा कर लेता। एक दफा उसने एक हिरनी देखी। जो अपने बच्चे के साथ चर रही थी। सब्कत्गीनन ने उसके पीछे घोड़ा दौड़ा दिया। हिरनी तो पकड़ी जा ना सकी। मगर उसका बच्चा जो माँ के साथ भाग ना सका हाथ आ गया। सब्कत्गीन ने उसे बाँध कर ज़ीन के आगे रख लिया। और शहर की जानिब चल पड़ा। हिरनी बच्चे को देखकर मुड़ी और सब्कत्गीन के पीछे दौड़ने लगी। और फ़रयाद करने लगी उसे उसकी हालत पर रहम आया। और बच्चे को खेल कर छोड़ दिया। हिरनी ने दौड़ कर बच्चे को ले लिया। और आसमान की तरफ़ मुंह कर के दुआएँ देने लगी। बे ज़बानों की ज़बानें जानने वाले खुदा तआला को सब्कत्गीन का ये रहमदिलाना काम पसंद आया। रात उसे ख़्वाब में हुज़ूर रहमतुललिल आलमीन सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़ियारत नसीब हुई। तो आपने फ़रमाया के तूने जो एक बे ज़बान पर रहम किया है। उस पर हम बहुत खुश हुए हैं। उसके अवज़ अल्लाह तअला तुझे बादशाही अता फ़रमाएगा। और याद रखना। जिस तरह तूने इस जानवर पर रहम किया है। इसी तरह अपनी नोय्यत पर भी नज़रे करम किया करना। और ज़ुल्मो सितम ना करना। (तालीम-उल-अख़लाक़ 489)

सबक़:- अल्लाह तआला को मख़लूक़ पर रहम करना बड़ा पसंद है। इसीलिए हुज़ूर रहमतुललिल आलमीन(स०अ०स) को उसने सारे जहानों के लिए रहमत बना कर भेजा है। और ये भी मालूम हुआ के एक जानवर पर रहम करने से अल्लाह तआला और उसके हबीब सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम जब इस क़द्र खुश होते तो किसी इंसान पर ज़ुल्म करने से वो क्यों नाराज़ ना होंगे। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह तआला ने जिसे हकूमत अता फ़रमाई हो। उसका फर्ज़ है के वो अपनी रिआया पर यूं मेहरबान हो जैसे बाप औलाद पर होता है।

हिकायत नम्बर (734) सख़ावत

एक रोज़ एक शख़्स हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्ह की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। और अर्ज़ की के मैं कसरते अयाल के बाइस बेहद तंगी और इफलास में हूँ। यहाँ तक के आज रात के खाने के लिए भी कुछ नहीं। हज़रत इमाम आली मुक़ाम ने उसे अपने पास ठहराया। इतने में पाँच तोड़े दीनारों के हज़रत अमीर मुआविया रज़ी अल्लाहो अन्ह ने हज़रत इमाम आली मुक़ाम की ख़िदमत में भेजे। आपने वो पाँचों तोड़े इस फक़ीर को इनायत फ़रमा दिए। और उज़्र भी फ़रमाया। के तुझे जो थोड़ी बहुत इन्तिज़ार करना पड़ी उसकी माफी चाहता हूँ। (तोहफा रहीमी बहवाला कशफ-उल-महजूब, सफ़ा 9)

सबक़:- खुदा तआला ने अपने नेक बन्दों के मुतअल्लिक़ फ़रमाया है *व यूअसिरूना अला अनफ़ुसीहुम वलो काना बिहि खसाखसाहा* यानी वो अपना माल दूसरों को दे देते हैं। अगरचे वो खुद हाजतमंद हों।" हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाहो अन्ह इस आयत करीमा के सही मिसदाक़ थे। और अल्लाह के नेक बन्दे ऐसा ही करते हैं सायल का सवाल पूरा करते हैं और उसकी उम्मीद से भी ज़्यादा उसे देते हैं और ये भी मालूम हुआ के मक़्बूलाने खुदा के दरवाज़े से हाजतमंद कभी खाली नहीं लौटते।

हिकायत नम्बर (735) काला सांप

हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम एक मर्तबा एक गाँव में तशरीफ़ ले गए। तो वहाँ के लोगों ने शिकायत की के या नबी अल्लाह! इस गाँव में एक धोबी है। जो कपड़े चुराता है। और बदल देता है। इस वजह से हम उससे बहुत आजिज़ आ गए हैं। और उसके हाथों बड़ी तकलीफ में हैं। आज वो कपड़े धोने गया है। आप उसके लिए दुआ करें के वो वहीं ग़ारत हो जाए। और फिर के ना आए। हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम ने उन लोगों की दरख़्वास्त क़बूल करली। और दुआ की के इलाही! इस ख़ायन को वहीं हलाक़ कर दे। इत्तिफाक़न धोबी अपने साथ रोटी पका कर ले गया था। नागाह वहाँ एक फक़ीर का गुज़र हुआ। और वो बहुत भूका था। फक़ीर ने धोबी से सवाल किया। धोबी ने उसे एक रोटी दे दी। फक़ीर ने उसे दुआ दी। के जैसे तू लोगों के कपड़ों को साफ करता है। खुदा तआला तेरे दिल को पाको साफ करे। धोबी ने एक रोटी और दे दी। वो फक़ीर बोला। इलाही! से हर बला से महफ़ूज़ रख।

फिर वो धोबी शाम को बख़ैरियत घर वापस आया। लोगों ने हज़रत

ईसा अलेहिस्सलाम से कहा। या हज़रत! ये कैसी बद दुआ थी आपकी। के धोबी ख़ैरियत से वापस आ गया है। हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम ने धोबी को बुला कर पूछा के आज तूने कौन सा नेक अमल किया है? उसने बताया के मैंने राहे खुदा में दो रोटियाँ एक भूके मोहताज को दी हैं। उसने मुझे दुआ दी और चला गया। इतने में खुदा तआला ने हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम पर वही नाज़िल फ़रमाई। के ऐ मेरे नबी! इस धोबी की गठरी को खुलवा कर देख। चुनाँचे हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम ने उसकी गठरी खुलवा कर देखी। तो उसमें से एक काला सांप निकला। जिसके मुंह पर मोहर लगी हुई थी। हज़रत ईसा अलेहिस्सलाम ने पूछा के ऐ मारे खूंख़्वार! अगर हक़ तआला ने तुझे इस धोबी के हलाक करने के लिए भेजा है तो तूने क्यों उसे छोड़ दिया। सांप ने अर्ज़ की के एक अल्लाह के नबी! मैंने चाहा, के उसे डसूं। मगर उसने जो दो रोटियाँ राहे खुदा में सदक़ा की थीं। उनकी बर्कत से फरिश्तों ने मेरे मुंह पर मोहर लगा दी। ताके मैं उसे डस ना सकूं। हज़रत ईसा अलेहिस्सलमा ने ये सुनकर उस धोबी से फ़रमाया के ऐ अल्लाह के बन्दे! खुदा ने तेरे सारे गुनाह माफ कर दिए हैं। अब आईंदा के लिए तू हर गुनाह से बचते रहना। खुदा ने तुझे सदक़ा व ख़ैरात के सदक़े से बचा लिया है। (तोहफा रहीमी, सफ़ा 22)

सबक़:- अल्लाह की राह में कुछ देना और सदक़ा ख़ैरात करना बड़ी बड़ी बलाओं से बचा लेता है। और अल्लाह तआला के ग़ज़ब व जलाल की आग को बुझा देता है। पस हमें मोहताजों, फक़ीरों की एआनत करना चाहिए। और बुख़्लो इमसाक से बचना चाहिए। और ये भी मालूम हुआ के ये तीजा, दसवाँ, चालीसवाँ ग्यारवीं शरीफ वग़ैरा तक़रीबात अच्छी चीज़ें हैं के इस तरह कुछ ना कुछ अल्लाह के नाम पर खर्च होता रहता है। अल्लाह की राह में खर्च करने की इन मदों से रोकना अल्लाह के ग़ज़बो जलाल को अपनाने के मुतारादिफ है।

हिकायत नम्बर(736) दुरूद शरीफ

अबु मूसा एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं के मैं एक जमात के साथ एक कश्ती पर सवार था। के यकायक बादे मुख़ालिफ शुरू हुई। और उसने तूफान की सूरत इख़्तियार कर ली। अहले कश्ती सब हैरान हुए। और सब ने यक़ीन कर लिया। के अब बचना मुश्किल है। मायूसी हद से बढ़ गई। तो सब रोने लगे। और तौबा व असतग़फार करने लगे। ऐसे नाज़ुक वक़्त में मुझ पर ग़नूदगी तारी हुई। तो मैंने आलमे इसतग़राक़ में देखा। के रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो

तआला अलेह व सल्लम तशरीफ़ लाए हैं। और फ़रमाते हैं। ऐ अबु मूसा! कश्ती वालों से कह दो के वो दुरूद *तुनजीना* पढ़ें। मैंने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह! मुझ को ये दुरूद शरीफ याद नहीं। फ़रमाया। लो मैं पढ़ता हूँ। तुम याद कर लो। चुनाँचे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने दुरूद शरीफ अपनी ज़बान अनवर से पढ़ा। और हुज़ूर ही के एजाज़ से मुझ वो याद भी हो गया। यकायक मेरी आँख खुल गई। तो वही दुरूद मेरी ज़बान पर जारी था। मैंने सब कश्ती वालों से कहा के लो ये दुरूद शरीफ पढ़ो। ये हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम खुद तशरीफ़ लाकर पढ़ने को फ़रमा गए हैं। चुनाँचे हम सब ने वो दुरूद शरीफ पढ़ना शुरू किया। तो तूफान थम गया। और हम सब बच गए। वो दुरूद शरीफ ये है।

अल्लाहुम्मा सल्ली अला मोहम्मदिन सलतन तुनजीना बिहा मिन जमीअल अहवाली वल आफाती व तक़्ज़ीलना बिहा जमीअल हाजाती व तुतहिरूना बिहा मिन जमीअस्स सय्यीअती व तुरफ़ऊना बिहा इन्दका अलाद्दराजाती व तुबल्लीगुना बिहा अक़्सल ग़ायाती मिन जमीअल ख़ैराती फिलहयाती व बादलममाती इन्नका अला कुल्ली शैइन क़दीर। (तोहफा रहीमी बहवाला फज़ मुनीर सफ़ा 46)

सबक़:- दुरूद शरीफ बहुत बड़ी अल्लाह की नअेमत है। उसके पढ़ने से बड़ी बड़ी मुश्किलें टल जाती हैं। और ये भी मालूम हुआ के दुरूद शरीफ कोई सा भी पढ़िये। मौजिबे अज्रो सवाब है। किसी मख़सूस दुरूद शरीफ ही को पढ़ना और दसूरे सीगों और लफ़्ज़ों से दुरूद शरीफ के पढ़ने को बिदअत बताना बहुत बड़ी ज़ियादती है। नमाज़ के अन्दर जिस दुरूद शरीफ की तख़सीस शरअे में वारिद है वो दुरूद शरीफ नमाज़ ही के लिए मख़सूस है। और बैरूने नमाज़ किसी भी सीगे से दुरूद शरीफ पढ़िये जायज़ और मौजिबे सवाब है। और ये भी मालूम हुआ के हमारे आक़ा मौला सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम मुश्किल के वक़्त अपने ग़ुलामों की मदद फ़रमाते हैं और अपने ग़ुलामों के पास करम फ़रमा कर खुद भी तशरीफ़ ले आते हैं। *फसल्ललल्लाहो अलेही व आलिही क़दरा हुस्निही व जमालिही।*

हिकायत नम्बर(737) पाकबाज़ माँ

हज़रत शेख़ निज़ामउद्दीन अबु अलमवैद रहमत-उल्लाह अलेह के पास एक मर्तबा देहली के लोग हाज़िर हुए। और अर्ज़ की, हुज़ूर! देहली में कई रोज़ से बारिश नहीं हुई। लोग बड़े परेशान हैं। दुआ कीजिए। बारिश हो।

हज़रत निज़ामउद्दीन मिंबर पर चढ़े और अपनी वालिदा के दामन का एक पुराना कपड़ा बग़ल से निकाल कर अपने हाथ पर रखकर यूं दुआ माँगी। इलाही! बहुर्मत इस कपड़े के जो दामन एक ज़ईफे का है जिस पर हर गिज़ किसी ना मेहरम की नज़र नहीं पड़ी। तू मीना बरसा दे। क़ुद्रते इलाही से उसी वक़्त बादल नमूदार हुए। और बारिश होने लगी। (तोहफ रहीमी, सफ़ा 195)

सबक़:- मुश्किल के वक़्त अल्लाह के नेक बन्दों के पास जाकर तालिब दुआ होने से मुश्किल हल हो जाती है। और अल्लाह के नेक बन्दों से थोड़ी बहुत निसबत भी अल्लाह तआला के हाँ बड़ी पसंदीदा होती है। और ये भी मालूम हुआ के जो मायें पाकबाज़ अफ़्फ़त माब और ख़ुदा याद हों। उनकी औलाद भी नेक होती है। और जो मायें खुद ही ग़ैर महरमों में आज़ादाना फिरने वाली हों। उनकी औलाद भी "टेडी बुवायज़" क़िस्म की ही होती है।

हिकायत नम्बर(738) जलाल फक़ीर

एक मर्तबा ख़्वाजा क़ुतब-उद्दीन बख़्तियार काकी अलेह अर्रहमा अजमैर में ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की ख़िदमत में हाज़िर थे। उन दिनों पथोरा (पृथवी राज) ज़िन्दा था। और कहा करता था के क्या ही अच्छा हो जो ये फक़ीर यहाँ से चला जाए। होते होते ये ख़बर हज़रत ख़्वाजा के गोश अक़्दस तक भी पहुँच गई। हज़रत ख़्वाजा उस वक़्त आलमे सुकर में थे। फौरन आपने मुराक़्बा किया। और मुराक़्बे ही में आपकी ज़बान मुबारक से ये कलमात निकले।

"के हम ने राय पथोरा को ज़िन्दा ही मुसलमानों के हवाले किया।"

थोड़े अर्से बाद सुलतान शम्स-उद्दीन मोहम्मद ग़ौरी का लश्कर चढ़ आया। और शहर को लूट मार करने के बाद पथोरा को ज़िन्दा पकड़ कर ले गया।

"मालूम हुआ के दुरवैश एक पियाले में आग रखते हैं और एक पियाले में पानी। यानी वो फायदा भी पहुँचा सकते हैं और नुक़सान भी।" (शोरिश काशमीरी का अख़्बार चट्टान, 10 दिसम्बर सफ़ा 13)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दे बहुत बड़े इख़्तियारात के मालिब होते हैं। और खुद शोरिश काशमीरी का अख़्बार भी ये एलान कर रहा है के

"दुरवैश एक पियाले में आग रखते हैं और एक पियाले में पानी। यानी वो फायदा भी पहुँचा सकते हैं और नुक़सान भी।"

फिर जो उन सब के आक़ा व मौला सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इख़्तियारात का मुनकिर हो और यूं कहे के जिसका नाम

मोहम्मद या अली है वो किसी चीज़ का मालिक मुख़्तार नहीं। वो क्यों गुमराह ना होगा।

हिकायत नम्बर(739) कलामे हक़

ईरान के एक शहज़ादे ने एक मिसरा कहा। के

दुरे अबलक़ के कम दीदह मौजूद

यानी ऐसा मोती जो कुछ सियाह और कुछ सफेद हो। किसी ने कम देखा होगा।

मतलब ये के ऐसा "दो रंगा" मोती कहीं मौजूद नहीं।

इस मिसरे पर दूसरा मिसरा मोज़ूँ ना हो सका। उसने कई शौअरा से कहा। मगर किसी से इस मिसरे पर मिसरा ना कहा जा सका। आख़िर उसने देहली के बादशाह को लिखा के इस मिसरे का दूसरा मिसरा मौज़ूँ करा के भेज दीजिए। देहली के शौअरा भी मोज़ूँ ना सके। मगर ज़ैब-उन-निसा एक दिन सुर्मा लगा रही थी इत्तिफाक़न आँसू टपक पड़े। तो दूसरा मिसरा आँसू देखकर मोज़ूँ कर दिया के

दुरे अबलक़ किस कम दीदा मौजूद
मगर अश्क बिताने सुर्मा आलूद

यानी कुछ सियाह कुछ सफेद रंग का मोती किसी ने कम देखा होगा। मगर हाँ! मेहबूब की सरमगीन आँख से टपका हुआ आँसू एक ऐसा मोती है जिसमें ये दोनों रंग नज़र आते हैं।

बादशाह ने ये शैर ईरान भेज दिया। वहाँ से ख़त आया के इस शायरा को यहाँ भेज दो। उसके जवाब में ज़ैब-उन-निसा ने ये लिखा के...

दर सुख़न मख़्फी मनम चूं बुऐ गुल दर बर्गे गुल
हर के दीदन मील दारिद दर सुख़न बेनद मिरा

फूल की खुश्बू फूल के पत्ते में मख़्फी है। इसी तरह मैं अपने कलाम के अन्दर मख़्फी हूँ। जिसे मेरे देखने की तमन्ना हो वो मेरा कलाम पढ़ ले। (यादे माज़ी, सफ़ा 29)

सबक़:- ज़ैब-उन-निसा जो अल्लाह की एक मख़लूक़ है। जब उसे कोई ग़ैर आँख नहीं देख सकती तो अल्लाह तआला जो ख़ालिके कुल है उसे कौन देख सकता है? और जिस तरह ज़ैब-उन-निसा के दीदार के तमन्नाई को ये कहा गया के उसे देखने के लिए उसका कलाम पढ़ो। बिला तश्बीह दीदारे हक़ के तमन्नाई के लिए भी लाज़िम है के वो उसका कलामे पाक

कुरआन मजीद पढ़े। इसलिए के इस कलामे हक़ में हक़ के जलवे मौजूद हैं।

चीस्त कुरआन ऐ कलामे हक़ शनास
रोनुमाऐ रब नास आमद बा नास

हिकायत नम्बर (740) शायरी

एक शख़्स शायर था। लोग उसके शैर सुन सुन कर वाहवा किया करते थे। और कभी कोई यूं कहता। के ये शैर तो आपका हज़ार रुपये का है। और कभी कोई यूं कहता है के ये शैर तो आपका दो हज़ार का है। वो शायर खुश होकर उसे लिख लेता। एक मर्तबा उसकी माँ ने कहा के तू बेकार काम करता है। कोई ऐसा काम नहीं करता जिसमें कुछ आमदनी हो। उसने कहा। मैं बेकार कब हूँ। मुझ को तो बड़ी आमदनी होती है। किसी रोज़ हज़ार की और किसी रोज़ दो हज़ार की हो जाती है। माँ ने कहा अच्छा एक आने की सब्ज़ी ला दो। शायर साहब अपने अश्आर की कापी लेकर बाज़ार गए। और दुकानदार से कहा के एक आने की सब्ज़ी दे दो। उसने सब्ज़ी दी तो उसने कापी से एक शैर निकाल कर कहा लो ये दस रुपये का शैर है। दुकानदार ने कहा। जनाब! कैसा दस रुपये का शैर। आप ये अपने पास ही रखिये। मुझे तो एक आना दीजिए। अब आप बहुत घबरा गए। के मैं अपने इन शैरों को यूंही क़ीमती समझता रहा। यहाँ तो उनकी कुछ भी क़ीमत नहीं है। फौरन उस्ताद के पास आए और कहा के वाह हज़रत वा! मालूम हो गई आपकी सिखाई हुई शायरी की क़द्रो क़ीमत, मुफ़्त में मेरी उम्र ज़ाए की।

सबक़:- ये दुनयवी मदारिज व ऊरूज महेज जी खुश कर लेने की बातें हैं और कल क़यामत के बाज़ार में उनकी कोई क़ीमत ना होगी। वहाँ तो ईमान व तक़्वा ही का सिक्का चलेगा।

हिकायत नम्बर (741) बुज़ुर्गों का तसर्रुफ

देवबंदी हज़रात के हकीम-उल-उम्मत मोलवी अशरफ़ अली थानवी साहब लिखते हैं के शाह अब्दुर्रज़्ज़ाक़ झिंजानवी के साहबज़ादे को कीमिया का शौक़ था। एक दफा शाह साहब इसतंजा फ़रमा रहे थे। और ये साहबज़ादे कुछ दवायें कीमिया की लिए हुए खड़े थे। बाद फिराग़ ढेला पत्थर पर मारा। वो पत्थर सोने का हो गया। एक सुनार उसमें से कुछ काट कर ले गया। फिर शाह साहब ने फ़रमाया। के भाई अगर उसको कोई उठा कर ले गया तो नमाज़ियों को तकलीफ हो जाएगी। फिर दुआ की वो पत्थर हो गया।

(मोलवी अशरफ़ अली साहब के मलफ़ूज़ात हसन-अलअज़ीज़, सफ़ा 94)

सबक़:- ये तसर्रूफ व इख़्तियार है औलिया इक्राम का जो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के ग़ुलाम हैं। फिर हुज़ूर के अपने तसर्रूफ व इख़्तियार की क्या शान होगी। बावजूद उसके फिर भी अगर कोई शख़्स यूं कहने लगे या लिख दे के "रसूल अल्लाह के चाहने से कुछ नहीं होता" तो वो कितना बड़ा बे खबर और गुमराह है।

हिकायत नम्बर(742) नर्मी व सख़्ती

(मंज़ूम हिकायत तर्जुमा मसनवी शरीफ)

ज़ैब तन करके लिबास फाखरा
फिरता था इक शख़्स इत्राता हुआ
देख कर उसको हवा और आफताब
दोनों यूं करने लगे बाहम खिताब
देखें तो है कौन सा हम मैं क़वी
इस बशर को जो करे नंगा अभी!
ये कहा सुन के हवा ने मुशफकन
मैं अभी देती हूँ लो तुझ को दिखा
बन के झक्कड़ ज़ोर से चलने लगी
पगड़ी व टोपी ना छोड़ी एक की
पीपल और शीशम गए जड़ से उखड़
बड़ ने और कीकर ने भी दी छोड़ जड़
छप्पर और खपरैल जो मज़बूत थे
मिस्ल कागज़ हर तरफ़ उड़ने लगे
जिस क़द्र अपना दिखाती थी वो ज़ोर
कपड़ों को करता था वो क़ाबू बज़ोर
ज़ोर अपना कुल लगा कर थक गई
पर ना नंगा उसको हर गिज़ कर सकी
फिर कहा सूरज ने बस आपा संभाल
हम भी अब अपना दिखाते हैं कमाल
गर्म तदरीजन हुआ फिर आफताब
हो गए कपड़े बदन पर सब अज़ाब
रोंगटों से अर्क़ था फव्वारा ज़न

अर्क़ में थे ग़र्क़ सारे मर्द व ज़न
इस बशर ने भी दिया अंगा उतार
बाँध के लुंगी अलग फैंकी अज़ार
सबक़:- ख़ल्क़ और नर्मी से ले मतलब निकाल
तू ना बे मौक़ा दिखा अपना जलाल
तेज़ी और सख़्ती से अक्सर नोजवान
अपने हाथों अपना करते हैं ज़याँ
(दर मंज़ूम, सफ़ा 79)

हिकायत नम्बर(743) शराब

एक बादशाह की मजलिस में एक ग़रीब मगर दाना शख़्स हाज़िर हुआ। तो उसे सफे आख़िर में जगह मिली। थोड़ी देर के बाद एक इल्मी गुफ़्तगू में वो शख़्स बोला। तो उसकी क़ाबलियत देखकर बादशाह बड़ा खुश हुआ। और उसे अपने क़रीब बुला कर अपने पास बिठा लिया। थोड़ी देर के बाद मजलिस में शराब लाई गई। और उस दाना शख़्स के सामने भी रखी गई। उसने बादशाह से अर्ज़ की के मुझे उससे माफ रखा जाए। ताके जिस अक़्ल व दानिश के तुफैल मुझे क़ुर्बे सुलतानी हासिल हुआ है। वो ज़ायल ना हो जाए। शराब पी ली। तो मुझ से बे अदबी के लफ़्ज़ सादिर होंगे। और ज़लीलो ख़्वार हो जाऊँगा। बादशाह उसकी इस बात से बड़ा खुश हुआ। और उसे ईनामो इक्राम से नावाज़ा। (तालीम-उल-अख़लाक़, सफ़ा 165)

सबक़:- शराब पीने से आदमी ज़लीलो ख़्वार हो जाता है। उससे बचना चाहिए।

हिकायत नम्बर(744) शेर शाह सूरी

दरबार अवाम व ख़्वास और फौजी जान निसार सिपाहियों से पटा पड़ा है। नक़ीब की पुर जलाल आवाज़ और चाविश की ललकार से दिलों पर हैबत तारी है। आदाब, सलाम नियाज़, बादशाह सलामत तसलीमात, खुदावंद आदाब खसूसी बजा लाओ। कोरनिश, बंदगी, नज़र, रूबरू ज़िल्ले सुबहानी, शहनशाह ज़ी जाह, जहाँ पनाह, सुलतान मौअज़्ज़म, की मिली जुली आवाज़ों से दरबारे सूरी गूंज रहा है। मसनद ख़ास पर शाही पोशाक में मलबूस शेर शाह सूरी जलवा अफरोज़ हैं। दायें बायें मुशीराने सलतनत और अरबाब हकूमत, जागीरदार, राजे, महाराजे अदब से गर्दन झुका लिए। सफ

बस्ता खड़े हैं। मज़लूमों की दादरसी और ज़ालिमों की बीख कनी के फ़रमान जारी हो रहे हैं। उसी दौरान में चौबदार एक परेशान हाल हिन्दू बनिये को शेर शाह के हुज़ूर में पेश करता है। जो सरासीमगी के आलम में दो ज़ानों होकर कांपने लगता है।

शेर शाहः- "मा बदौलत से क्या कहना चाहते हो?"

बनियाः- माता पिता (और ये कह कर कांपते हुए हाथों से पान का एक बीड़ा शेरशाह की खिदमत में पेश कर देता है)

शेर शाहः- ठीक है। बादशाह रिआया का माता पिता ही होता है। मगर ये बीड़ा क्या है। और उसके पेश करने से तुम्हारा क्या मक़्सद है?

बनियाः- (हकलाते हुए) "माई बाप इज़्ज़त का मामला है और इज़्ज़त सब को प्यारी होती है।"

शेर शाहः- क्यों! क्या किसी ज़ालिम ने तुम्हारी इज़्ज़त पर हमला किया। बताओ! कोन है वो मर्दूद?"

बनियाः- हुज़ूर!..........नाम ना ही पूछें तो अच्छा है।"

शेर शाहः- परवाह नहीं! शेर शाह की नज़र में अराकीने सलतनत से लेकर मामूली खुद्दाम तक सब बराबर हैं। अगर तुम अपने दावे में सच्चे हो। तो मुज्रिम को क़रार वाक़ई सज़ा दी जाएगी। बोलो! क्या नाम है उस मलऊन का। जिसने तुम्हारी इज़्ज़त पर हाथ डाला।"

बनियाः- (मुरतअश आवाज़ में) हुज़ूर! ग़ुलाम का मुलज़िम.....शहज़ादा आदिल है।"

शेर शाहः- "आदिल!.......क्या क्या आदिल ने?"

बनियाः- खुदावंद! मेरी बीवी अपने मकान की छत पर नहा रही थी। के इत्तिफाक़ से शहज़ादा आदिल की सवारी उस तरफ़ से गुज़री। हाथी पर सवार शहज़ादे की नज़र जब मकान पर पड़ी तो हुज़ूर की लोंडी पर पान का ये बीड़ा फैंक मारा। महाराज वो शर्म व ग़ैरत की मारी जब से रो रो कर हलकान हो रही है। क़सम भगवान की, भूक प्यास के मारे उसकी हालत इस क़द्र ग़ैर हो गई है के मुझ से देखी नहीं जाती। आख़िर मजबूर होकर आपके पास फ़रयाद लेकर आया हूँ।

शेर शाहः- (ग़ैज़ के आलम में) "आदिल को पाबजोलाँ हाज़िर किया जाए।" (सिपह सालार आज़म, शहज़ादा आदिल को हाज़िर दरबार करते हैं)

शेर शाहः- आदिल! तुझे इस वक़्त हाज़िर दरबार होने की वजह मालूम है? अगर नहीं तो सुन ले।

तुझे इसलिए तलब किया गया है के तेरी ज़बान से अपनी मेहबूब रिआया की बेहुर्मती का वाक़ेया सुनं।

आदिल! तू इस वक़्त शहनशाह का फ़रज़ंद नहीं, बल्के क़ौम व मिल्लत का मुज्रिम है। क़ब्ल उसके के मा बदौलत तुझ को इब्रतनाक सज़ा दें, बोल! उज़्र में क्या पेश करना चाहता है।"

आदिल....... (सरासीमगी के आलम में) आलम पनाह! ये ग़ुलाम किसी ऐसे फ़ैल का मुरतकिब नहीं हुआ है जिससे दामने शाही आलूद हो। हक़ीक़त ये है के मुद्दई मुसतग़ीस की अहलिया अपने मकान की छत पर आज़ादाना तौर पर ग़ुस्ल कर रही थी के मेरा उस तरफ़ से गुज़र हुआ। उसको बरहंगी का अहसास दिलाने के लिए, ताके आईंदा ऐसी बे एहतियाती और लापरवाही का मुज़ाहेरा ना करे। मैंने पान का बीड़ा उस पर फैंक दिया। वरना ख़ुदा शाहिद है के बन्दे की नीयत हर गिज़ हर गिज़ बुरी ना थी।"

शेर शाहः- आदिल! तेरा ये बयान ख़्वाह कितना ही दुरूस्त क्यों ना हो, लेकिन उससे मुसतग़ीस की तसल्ली नहीं होती। तू मुज्रिम है, ख़ायन है, ज़ालिम है। तुझे सज़ा ज़रूर मिलनी चाहिए। (नज़ाकत हालात का अंदाज़ा करके वज़ीरे आज़म शहज़ादे की सिफारिश में कुछ कहना चाहता था। मगर शेर शाह ग़ैज़ो ग़ज़ब के आलम में ये कहकर उसको ख़ामोश कर देता है।

शेर शाहः- (हैबत नाक आवाज़ में) "हम उस वक़्त कुछ सुनने के लिए तैयार नहीं। क़ुरआन हकीम में कहा गया है के जो बात करो इंसाफ की रू से करो। ख़्वाह उससे अपने किसी क़राबत दार को नुक़्सान ही क्यों ना पहुँचता हो।"

आदिलः- "अज़मत मआब! ग़ुलाम अपनी ग़लती का एत्राफ करता है। अफ़्व का तालिब है। आईंदा ऐसी ग़लती का मुरतकिब नहीं होगा।"

शेर शाहः- (ग़ुस्सा से कांपते हुए) क्या कहा। तुझे माफ कर दूं। आज तूने जो जुर्रात की है के दूसरे की बहू पर बीड़ा फैंका है। कल तू इतना दिलैर होगा के उनके उठवा कर अपने हवदज में रख लेगा। और फिर तेरी देखा देखी दूसरे उमरा और नवाब इससे ज़्यादा बेबाकियों का मुज़ाहेरा करेंगे। और इस तरह आख़िरत में तू मुझे रोसिय्या करेगा। क्या खलाक़ दो आलम ने तुझे हाथी की सवारी इसलिए अता की है के तू हाथी पर सवार होकर ग़रीबों के कच्चे मकानों के पास से गुज़रे और उनकी बहू बेटियों की बे पर्दगी करे। और उनके नामूस पर हमला करे। नहीं ऐसा नहीं होगा। तुझे सज़ा ज़रूर मिलेगी। बे इज़्ज़त का बदला बे इज़्ज़ती ही से लिया जाएगा। शेर शाही इंसाफ कहता

है के तू अपनी बीवी को बनिये के मकान पर भेज और उससे कह दे के वो भी इसी तरह उसके सहन में गुस्ल करे। हम बनिये को हाथी पर सवार कर के भेजते हैं। जब तक वो तेरी बीवी पर इसी तरह बीड़ा ना फैंक लेगा। शेर शाही इंसाफ की तशंगी रफ़े ना होगी!"

आदिल! (आबदीदा होकर) खुदावंद नअेमत। अगर आदिल की बेहुर्मती का तमाशा देखना मक्सूद हो तो गुलाम हाज़िर है। उसकी बे इज़्ज़ती से अगर हुज़ूर का मनशाऐ दिली पूरा हो सकता है तो भरे दरबार में उसके दुर्रे उड़वा कर अपनी आतिश ग़ज़ब फ़रो फ़रमा लें। मगर आलम पनाह! आदिल की बीवी भी रिआया के मेहबूब बादशाह की कुछ लगती है। वो अफीफा इस मामले में बिलकुल बेगुनाह है। उसे बे आबरू ना किया जाए।

शेर शाह:- अपनी इज़्ज़त का इतना पास है। मैं बादशाह हूँ। और मा सिवाए ज़ात बारी मेरे हुक्म को कोई रद करने वाला नहीं है। तो कहता है के आदिल की बीवी भी हमारी कुछ लगती है। नहीं शेर शाह की नज़र में मामूली बनिया हो या शहज़ादा आदिल। दोनों की बीवियाँ बराबर हैं। अगर बनिये की बीवी की बेइज़्ज़ती करते हुए आदिल को शर्म ना आई तो शेरशाह भी अपनी बहू की बेइज़्ज़ती बर्दाश्त कर सकता है। जाओ और हुक्म की तामील करो।"

(सारे दरबार में सन्नाटा छाया हुआ है। आदिल की मुतग़य्यर हालत देखकर अहले दरबार दिल ही दिल में कुढ़ रहे हैं। आखिर कार वही हिन्दू बनिया आगे बढ़ता है। और शेर शाह की ख़िदमत में गिड़गिड़ा कर अर्ज़ करता है)

बनिया! ...."बस महाराज मेरा मुक़दमा ख़त्म हुआ। मुझे दाद मिल गई। भगवान मेरे माता पिता की उम्र दराज़ करे। शहज़ादी हुज़ूर का इसमें कोई क़सूर नहीं। मैं उनकी शान में गुसताखी का मुरतकिब नहीं हो सकता। मैंने हुज़ूर का नमक खाया है। फिर भला हरम शाही की बे इज़्ज़ती कैसे बर्दाश्त कर सकता हूँ।"

शेर शाह:- मेरे मज़लूम बच्चे! ऐसा ना करो जिस हिम्मत और दिलैरी से दाद ख़्वाह हुए हो। इसी शान इसतक़लाल से इन्तिक़ाम भी लो। ताके आइंना किसी शहज़ादे, राजे, महाराजे को ऐसी जुर्रात ना हो।

बनिया.........."महाराज की जै हो" लेकिन हुज़ूर शहज़ादे को काफी सज़ा मिल चुकी है। वो अपने किए पर नादिम और पशेमान हैं भगवान के लिए अब इससे ज़्यादा सज़ा की ज़रूरत नहीं।

शेर शाह:- सुनते हो आदिल? रिआया बादशाह को अपना माँ बाप

तसव्वुर करती है। इसलिए हमें भी उससे वही सूलक करना चाहिए। जो माँ बाप अपनी औलाद के साथ करते हैं। जाओ और उस हिन्दू से माफी माँगो। जिसने फय्याज़ी से काम लेकर तुम्हें बे आबरू होने से बचा लिया। वरना क़यामत तक तुम किसी को मुंह दिखाने के क़ाबिल ना रहते।"

आदिल ....(बनिये से) मैं अपनी ग़लती का एत्राफ करते हुए तुम से माफी का तलबगार हूँ। और इक़रार करता हूँ के आज से तुम्हारी बीवी मेरी बहन है। और मैं उम्र भर उसको अपनी बहन ही की तरह समझूंगा।

बनिया! शहज़ादे की जै हो।

शेर शाहः- (बनिये से) ठहरो! इधर आओ (गले लगा कर) आज से तुम्हरी बीवी हमारी बेटी है। (इसलिए जिस क़द्र ज़र व जवाहर दरकार हों, बे झिझक शाही खज़ाने से ले जाओ। (माखूज़)

सबक़:- इस्लाम अद् व अंसाफ की तालीम देता है। और मुसलमान बादशाह बड़े आदिल व इंसाफ पसंद होते हैं। और अपनी रिआया के हर फर्द का खयाल रखते हैं। जो लोग मुसलमान बादशाहों के ख़िलाफ परोपेगंडा करते हैं। वो बड़े झूटे हैं।

हिकायत नम्बर(745) नूर मोहम्मदी (स०अ०स०)

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की विलादत तय्यबा से बहुत पहले यमन का एक बादशाह था जिसका नाम अब्रहा था। उसके दिल में कअबा शरीफ की बड़ी अदावत थी। और वो चाहता था के मक्का मुकर्रमा पर चढ़ाई करके कअबा शरीफ को ढहा दे। चुनाँचे एक रोज़ वो अपने लश्कर समेत हाथियों पर सवार होकर कअबा शरीफ को ढहा देने के इरादे से मक्का मोअज़्ज़मा आ पहुँचा। क़ुरैश मक्का ने जब अब्रहा की चढ़ाई और उसके इरादे को मालूम किया तो वो हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के दादा जान हज़रत अब्दुल मुत्तलिब रज़ी अल्लाहो अन्ह के पास पहुँचे। और इस अम्र की शिकायत की। तो हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने फ़रमाया। के घबराओ नहीं जिसका ये घर है वो खुद ही अपने घर की हिफाज़त फ़रमाने लेगा।

अब्रहा वादी मक्का में ख़ैमा ज़न था। वो अहले मक्का को बहुत तंग करने लगा। हत्ता के एक रोज़ उसने अहले मक्का के सारे ऊँट जिनमें चार सौ ऊँट सिर्फ हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के थे। जंगल से हंकवा लिए। और अपने क़ब्ज़े में ले लिए। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब को जब पता चला तो क़ुरैश

को साथ लेकर कोहे सबीर पर चढ़ आए। उस वक़्त हज़रत अब्दुल मुत्तलिब की पैशानी मुबारक से नूरे मोहम्मदी मिस्ल हलाल चमकता नज़र आ रहा था। और उस नूर की शुआएँ कअबा शरीफ पर पड़ रही थीं। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने अपनी पैशानी के इस नूर को मालूम करके क़ौम को फ़रमाया। के वापस चलो और यक़ीन के साथ इतमीनान दिलाया के तुम तसल्ली रखो। ये चमक जो मेरी पैशानी में देखते हो, तुम्हें यही एक नेक फाल काफी है। अब्रहा के मामले में तुम कामयाब रहोगे।

अब्रहा को जब मालूम हुआ के अब्दुल मुत्तलिब मेरे पास ना खुद आए हैं, और ना ही क़ुरैश को आने दिया है तो उसने अपना एक आदमी हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के पास भेजा। वो आदमी जब मक्का शरीफ में दाखिल होकर हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के पास पहुँचा और उसकी आँख हज़रत अबदुल मुत्तलिब के चहरे पर पड़ी तो वो खुद ब खुद बे बस होकर हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के आगे झुक कर उनके पाऊँ पर गिर गया। और ज़बान से कुछ ना बोल सका। और फिर बे साख़्ता कहने लगा के मैं गवाही देता हूँ के तू बे शुबह सरदारी के लायक़ है। और तेरी पैशानी में एक ऐसा नूर है के जिसके सामने बग़ैर झुक जाने के कोइ चारा ही नहीं। फिर उसने निहायत नदामत के साथ अब्रहा का पैग़ाम दिया के अब्रहा कहता है के अगर अब्दुल मुत्तलिब जो सरदारे क़ुरैश है मेरे पास हाज़िर हो जाए। तो मैं बिला मुज़ाहेमत वापस चला जाऊँगा। और माल मक़्बूज़ा ऊँट वग़ैरा भी सब क़ुरैश के हवाले कर दूंगा। क़ुरैश ने ये बात सुनकर बड़ी आजिज़ी और इज़्त्राब के साथ हज़रत अब्दल मुत्तलिब को अब्रहा के पास जाने के लिए तैयार किया। चुनाँचे हज़रत अब्दुल मुत्तलिब तशरीफ़ ले गए। और जब अब्रहा के ख़ैमे के क़रीब पहुँचे तो अब्रहा की सवारी का अज़ीम-उल-जसा सफेद हाथी जो बड़ा मुहीब था और ख़ैमे के पास खड़ा किया हुआ था हज़रत अब्दुल मुत्तलिब को देखते ही झुक गया। और अब्दुल मुत्तलिब की तरफ़ सर करके सज्दा करने लगा। और अल्लाह के हुक्म से यूं गोया हुआ।

अस्सलामू अलान्नूरिल्लज़ी फी ज़हरिका या अब्दल मुत्तलिब "ऐ अब्दुल मुत्तलिब! इस नूर पर सलाम जो तेरी पुश्त में है।"

अब्रहा ने ये मंज़र देखा तो बड़ा हैरान हुआ। और हज़रत अब्दुल मुत्तलिब को बड़ी इज़्ज़त के साथ बिठाया। और हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने फ़रमाया के हमारे ऊँट वापस कर दे। अब्रहा बोला के ताज्जुब है के

आपको ऊँटों की तो फिक्र है। मगर ये घर यानी कअबा जिसकी बदौलत आप सब की इज़्ज़त है। उसके ढहा देने से बाज़ रखने की आपने मुझ से कोई बात ही नहीं की। आपने फ़रमाया। ऊँट हमारे हैं। हमें उन्हीं की फ़िक्र है और कअबा शरीफ जिसका घर है वो खुद अपने घर को बचा लेगा। कअबे वाला जाने, या तुम जानो। ये कहकर आप वापस तशीफ ले आए। अब्रहा ने सारे ऊँट वापस कर दिए। लेकिन कअबा शरीफ को ढहा देने के लिए उसने लश्कर को हुक्म दे दिया के हाथियों पर चढ़कर और एक हाथी को सब से आगे रखकर कअबे पर फौरन हमला कर दो। ताके ये हाथी पल भर में कअबे को ढहा दें। चुनाँचे जब हाथियों को तैयार करके ये लश्कर कअबा की तरफ़ बढ़ा तो अगले हाथी ने जब बैत अल्लाह शरीफ को देखा तो वहीं अपना सर सज्दे में डाल दिया। हर चन्द फीलबान ने मारा और उठाने का चारा किया मगर उसका सर फिर ना उठा। फीलबान ने उसे पीछे जाने का इशारा किया तो वो फौरन उठ कर पीछे भागा। बाक़ी हाथी भी बे ज़ोर होकर उसके पीछे भाग निकले। उधर अल्लाह के अज़ाब ने उन्हें आ लिया। और ऊपर से कंकरों का मीना बरसने लगा। जिससे अब्रहा और उसके तमाम साथी हलाक हो गए। (अनवार-उल-मोहम्मदिया, मतबूआ मिस्र, सफ़ा 11)

सबक़:- नूर मोहम्मदी सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की बर्कतें हर ज़माने में पाई जाती हैं। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब रज़ी अल्लाहो अन्ह को सरदारी इसी नूर की बदौलत मिली। और कअबा शरीफ़ की हिफाज़त अल्लाह तआला ने इसी नूरे पाक की बदौलत फ़रमाई। और ये भी मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का नूर जानवरों को भी नज़र आ गया। फिर जो बराऐ नाम इंसान इस नूरे पाक का मौतरिफ़ ना हो और जिसे ये नूर नज़र ना आए। वो जानवरों से भी बदतर हुआ या नहीं? और ये भी मालूम हुआ के कअबा शरीफ को जानवरों ने भी सज्दा किया। फिर जो लोग नमाज़ नहीं पढ़ते और अल्लाह के इस घर की तरफ़ रूख नहीं करते वो *ऊलाईका कलअनआमी बल हुम अज़ल्लू* के मिसदाक हुए या नहीं?

हिकायत नम्बर(746) पैश्वाऐ कुल

हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अपने बचपन शरीफ में एक बार घर से निकले तो फिर घर तशरीफ़ ना लाए। आपके मुतअल्लिक़ीन

ने समझा के हुज़ूर गुम हो गए हैं। चुनाँचे आपकी तलाश शुरू हुई। एक साहब ऊँटनी पर सवार होकर हुज़ूर की तलाश कर रहे थे के उन्हें हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम एक दरख़्त के नीचे इसतराहत फ़रमाते हुए मिल गए। उसने अपनी ऊँटनी को बिठाया। और हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अनेह व सल्लम को अपने पीछे बिठा लिया। और ऊँटनी को जो उठाया तो उसने उठने से इंकार कर दिया। फिर उसने हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को अपने आगे बिठाया। तो ऊँटनी उठ बैठी। (हुज्जत-उल्लाह अलल आलमीन, सफ़ा 268)

सबक़:- हमारे सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को जानवर भी पहचानते हैं के हुज़ूर इमाम-उल-अंबिया और पैश्वाऐ कुल हैं। इसी लिए ऊँटनी ने हुज़ूर का पीछे बैठना गवारा ना किया। ऊँटनी के इस क़िस्से के मुतअल्लिक़ शायर ने लिखा है इस ऊँटनी ने गोया ज़बाने हाल से यूं कहा के

गोया थी उस ऊँटनी की ये सदा
बे खबर सरकार को आगे बिठा
जब तलक आगे ना बैठेंगे नबी
मैं क़यामत तक ना उठूंगी कभी

मालूम हुआ के हुज़ूर सल-लल्लाहो आला अलेह व सल्लम की नबुव्वत व इमामत को जो नहीं मानता। वो जानवरों से भी गया गुज़रा है।

हिकायत नम्बर (747) दुर्रे यतीम (स०अ०स०)

हज़रत हलीमा सअदिया रज़ी अल्लाह अन्हा फ़रमाती हैं के एक मर्तबा यहूदियों की एक जमात से मैंने कहा। के इस बच्चे मोहम्मद सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के अजीब व ग़रीब हालात हैं। जब ये शिकमे मादर में था तो उसकी माँ अजीबो ग़रीब नूरानी मनाज़िर देखती रही। फिर जब ये पेदा हुआ तो उसकी माँ ने एक नूर देखा। जिसने सारे घर को रोशन कर दिया। और अब भी उसके अनवारो बर्कात से हम सब मुसतफीद हो रहे हैं। यहूदियों ने जब ये अलामात सुनीं तो एक दूसरे से कहने लगे के इस बच्चे को क़तल कर दो। फिर उन्होंने हज़रत हलीमा से पूछा के क्या ये यतीम है? तो हज़रत हलीमा ने उनकी नीयत भाँप कर जवाब दिया के मैं इसकी माँ हूँ। और इसका बाप भी है। ये सुनकर यहूदियों ने कहा अगर ये बच्चा यतीम होता तो दूसरी सारी अलामतें इसमें नबी आख़िर-उज़्ज़माँ की हैं हम उसे ज़रूर क़तल कर

देते। (हुज्जत-उल्लाह अलल आलमीन, सफ़ा 269)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की पैशगोइयाँ कुतब साबिक़ा में मौजूद थीं। और हुज़ूर के ओसाफ व कमालात का ज़िक्रे पाक बिलतफसील उनमें था। और दुश्मनों को भी हुज़ूर की शाने पाक का इल्म था। मगर अदावत व हसद की बिना पर वो नहीं मानते थे। और ये भी मालूम हुआ के दुश्मन इस नूरे ऐज़दी को बुझाने की फिक्र में रहते थे। मगर उस नूरे पाक का अल्लाह हाफिज़ हुआ।

हिकायत नम्बर(748) आग की खाई

अबु जहल ने एक मर्तबा अपने दोस्तों से कहा के मोहम्मद (सल-लल्लाहो अलेह व सल्लम) को मैं अगर कभी नमाज़ पढ़ते देख लूंगा। तो मैं उसकी गर्दन मार दूंगा। (मआज़ अल्लाह) चुनाँचे एक दिन जब के हुज़ूर अलेहिस्सलाम नमाज़ पढ़ रहे थे। अबु जहल इसी नापाक इरादे से आगे बढ़ा। लोगों ने देखा के वो हुज़ूर की तरफ़ बढ़ रहा था। के नागहाँ अपनी ऐड़ियों पर फिरा। यानी उल्टा भागता और मुंह पर हाथ रखे हुए नज़र आया। जैसे कोई अपने मुंह को किसी मुंह पर पड़ी हुई चीज़ से बचाता है। लोग देखकर हैरान हुए और उससे पूछा के तुझे क्या हुआ। तो कहने लगा के मैंने जब आपकी गर्दन पर वार करने को आगे होना चाहा तो मैंने देखा के मेरे और आपके दरमियान आग की एक खाई है। और बड़े बड़े पर मुझे नज़र आए। मुझे यक़ीन हो गया के अगर मैं आगे बढ़ा तो ज़रूर आग में गिर पड़ूंगा। चुनाँचे खौफ के मारे मैं वहाँ से जल्द उल्टा दौड़ा। और बमुश्किल जान बचाई। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ने जब उसका ये चश्म दीद वाक़ेया सुना तो फ़रमाया। अगर वो मेरे नज़दीक आ जाता तो फरिश्ते उसका जोड़ जोड़ जुदा करके आग की खाई में फैंक देते। (मुस्लिम शरीफ, सफ़ा 467 जिल्द 2)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम ***वल्लाहो यासीमूका मिनन्नासी*** के मुताबिक़ अपने अल्लाह की ख़ास हिफाज़त में थे। और "सारी खुदाई इक तरफ़ फज़्ल इलाही इक तरफ़" के मिसदाक़ खुदा अपने मेहबूब का हाफिज़ था। ये भी मालूम हुआ के सारे फरिश्ते हुज़ूर के दरबान व ख़ादिम हैं। और ये भी मालूम हुआ के जो शख़्स हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम का गुसताख है। उसके लिए एक होलनाक आग की खाई तैयार हो चुकी है।

हिकायत नम्बर(749) रसूले बरहक़

हज़रत अब्दुलल्लाह इब्ने उमर रज़ी अल्लाहो अन्हा फ़रमाते हैं। के मैं जो कुछ रसूल अल्लाह सल-लल्लाहो तआला अलेह सल्लम से सुनता। तो याद रहने की ग़र्ज़ से लिख लिया करता था। क़ुरैश ने मुझे मना किया। के हर बात जो तुम हुज़ूर से सुनते हो। लिख लेते हो। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के मुंह मुबारक से बशरियत के बाइस कभी ग़ुस्से की हालत में कुछ निकल जाता है। ये सुनकर मैं लिखने से रूक गया। और हुज़ूर से ये बात कह दी। हुज़ूर ने अपने मुंह मुबारक की तरफ़ उंगली से इशारा फ़रमा कर फ़रमाया। बे शक लिखो, के इस मुंह से हर हालत में जो भी निकलता है हक़ ही निकलता है। (अबु दाऊद सफ़ा 257। जिल्द अव्वल)

सबक़:- मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम रसूले बरहक़ हैं। और आपकी ज़बाने अनवर से जो भी निकले हक़ ही होता है। और उस मुंह से हक़ के सिवा कुछ और निकल ही नहीं सकता। और ये बात हो ही नहीं सकती के हुज़ूर के मुंह मुबारक से झूट निकले। फिर जब अल्लाह के रसूल के मुंह से झूट नहीं निकल सकता तो खुद अल्लाह के मुतअल्लिक़ ये कहना के उसका झूट बोलना मुमकिन है। (मआज़ अल्लाह) क्यों सब से बड़ा झूट ना होगा। और ये भी मालूम हुआ के सहाबा इक्राम हदीसे पाक लिख भी लिया करते हैं।

हिकायत नम्बर(750) दानाऐ ग़ैब

अबु जहल के लड़के हज़रत अक्रमा रज़ी अल्लाहो अन्ह ने इस्लाम लाने से क़ब्ल एक जंग में एक मुसलमान अनसारी को शहीद कर दिया। जब ये ख़बर हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को मिली तो हुज़ूर मुसकुरा दिए। सहाबा ने अर्ज़ की। हुज़ूर! आप मुसकुराए क्यों? फ़रमाया। इसलिए के अक्रमा ने एक मुसलमान को शहीद कर दिया है। मगर मैं अक्रमा को भी इस मुसलमान शहीद के साथ जन्नत में देख रहा हूँ। यानी दोनों ही जन्नती हैं। हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के इस इर्शाद का राज़ उस वक़्त खुला, जब के अक्रमा भी मुसलमान हो गए। (हुज्जत-उल्लाह अलल आलमीन, सफ़ा 468)

सबक़:- हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम दानाऐ

ग़यूब हैं। और आपकी नज़रों से कोई बात पनेहाँ नहीं। हत्ता के हर शख़्स के अंजाम की भी आपको ख़बर है।

हिकायत नम्बर(751) हर गिज़ नमीरद आँके दिलश ज़िन्दा शुद बअश्क़

एक शख़्स के मरने पर उसकी क़ब्र खोदी जा रही थी। के क़ब्र खोदते हुए साथ ही एक दूसरी क़ब्र ज़ाहिर हुई। जिसकी लहद से एक ईंट नीचे गिर गई। लोगों ने देखा के इस लहद में एक नूरानी शक्ल के बुज़ुर्ग सफ़ेद लिबास में मलबूस तशरीफ़ फ़रमा हैं। और उनकी गोद में एक सुनहरा क़ुरआन मजीद रखा है। जिसके हरूफ भी सुनहरे हैं। और वो बुज़ुर्ग तिलावत कर रहे हैं। ईंट गिरते ही इस नूरानी बुज़ुर्ग ने अपना सर उठाया। और पूछा। क्या क़यामत क़ायम हो गई? कहा गया नहीं! उन्होंने फ़रमाया तो ये ईंट फिर इसी जगह लगा दो। चुनाँचे वो ईंट फिर उसी जगा लगा दी गई। (बशरा लसयूती अलेह अर्रहमत अली हामिश शरह अलसदूर, सफ़ा 80)

सबक़:- अल्लाह वाले मरते नहीं हैं। बल्के जगह बदलते हैं। और इन्तिक़ाल फ़रमाते हैं। और क़ब्रों में नूरानी लिबास में मलबूस होते हैं। और क़ुरआन भी पढ़ते हैं। फिर जिस ज़ात ग्रामी सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की बदौलत इन अल्लाह वालों को ये अब्दी हयात मिली। इस ज़ाते ग्रामी सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम के लिए "मर कर मिट्टी में मिल गए" लिखना बे अदबी व बे दीनी की बात हुई या ना?

हिकायत नम्बर(752) बुज़ुर्गों की दुआ

शारेह बुखारी हज़रत इमाम इब्ने हज्र असक़लानी रहमत-उल्लाह अलेह के वालिद के घर कोई बच्चा पैदा होकर जीता ना था। आप बड़े कशीदा ख़ातिर और ग़मगीन होकर अल्लाह के एक वली हज़रत शेख सना क़िब्री रहमत-उल्लाह अलेह की बारगाह में हाज़िर हुए। और जीते जागते बच्चे के लिए दरख़्वास्ते दुआ की। हज़रत शेख़ अलेह अर्रहमा ने फ़रमा दिया। के जाओ तुम्हारी पशुत से एक ऐसा बच्चा पैदा होगा जो अपने इल्मो फज़्ल से दुनिया भर को भर देगा। चुनाँचे आपकी दुआ से हज़रत इमाम इब्ने हज्र असक़लानी साहब फतह अलबारी शरेह बुखारी पैदा हुए। (बस्तान-उल-मोहद्दिसीन अल माहदिस देहलवी, सफ़ा 114)

सबक़:- बुज़ुर्गों की दुआ से नामुरादों के दामन गोहर मुराद से पुर हो

जाते हैं। बे औलादों को औलाद मिल जाती है। और ग़मगीन दिलों को राहत मिलती है। और ये भी मालूम हुआ के बड़े बड़े मोहद्दिसों और बुज़ुर्गों का ये दस्तूर था के मुश्किल के वक़्त वो अल्लाह वालों की बारगाह में हाज़िर हुआ करते थे। और अपनी मुश्किलात का इज़ाला चाहते थे। और ये भी मालूम हुआ के बुखारी शारीफ के शारेह हज़रत इमाम इब्ने हज्र रहमत-उल्लाह अलेह जैसे इमाम व मोहद्दिस एक बुज़ुर्ग की दुआ से पैदा होते हैं। फिर कौन है जो उन मोहद्दिसीन का ग़ुलाम होकर बुज़ुर्गों के तसर्रूफ का मुनकिर हो।

हिकायत नम्बर(753) खुदा की बन्दगी

अबु मनसूर जो सुलतान तग़रूल का वज़ीर था। खुदा तरस और मर्द दाना था। हर सुबह नमाज़ पढ़ता और मुसल्ले पर बैठ जाता और तुलू आफताब तक वज़ाईफ पढ़ता रहता। फिर खिदमत सुलतान में हाज़िर होता। एक दफा बादशाह को एक मुहिम पेश आ गई। सुलतान ने वज़ीर को ब तअजील तलब किया। आदमी बुलाने आया। तो वो मुसल्ले पर बैठा था। उसकी तरफ़ मुतवज्जह ना हुआ। हासिदों को बात हाथ आ गई। और शिकायत का मौक़ा मिल गया। उन्होंने बादशाह को बहकाया के बादशाह ने ऐसे ज़रूरी काम के लिए बुलाया। और वज़ीर ने परवाह नहीं की। बादशाह के ग़ुस्से की आग भड़क उठी। जब वज़ीर अपने मामूल वज़ायफ से फारिग़ हो गया तो बादशाह की ख़िदमत में हाज़िर हो गया। बादशाह ने सख़्ती से पूछा के इतनी देर से क्यों आए। उसने कहा। ऐ बादशाह! मैं खुदा का बन्दा हूँ। और तेरा चाकर। जब तक उसकी बन्दगी से फारिग़ ना हो जाऊँ। तेरी चाकरी पर हाज़िर नहीं हो सकता। बादशाह उसके इस दिलैराना और सच्चे जवाब से आबदीदा हो गया। और उसकी बहुत तारीफ की और कहा। के खुदा की बन्दगी को मेरी चाकरी पर मुक़द्दम रख। ताके उसकी बर्कत से हमारे सब काम हो जायें। (मख़्ज़न अख़लाक़, सफ़ा 411)

सबक़:- अल्लाह के नेक बन्दे अपने अल्लाह की बन्दगी में कभी ग़फलत इख़्तियार नहीं करते। और अल्लाह की बन्दगी को दुनिया के हर काम से मुक़द्दम समझते हैं और उनके इस पाक जज़्बे की बदौलत अल्लाह तआला उनके हर काम में बर्कत पैदा फ़रमाता है।

हिकायत नम्बर(754) नासहाना कलमात

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ जब तख़्ते ख़िलाफत पर मुतमकिन हुए

तो ख़्वाजा हसन बसरी रहमत-उल्लाह अलेह को एक ख़त लिखा। जिसका मज़मून ये था:

"मेरे दोस्त तू जानता है के मैं एक बहुत बड़े काम में मुबतला हुआ हूँ। मुझे कुछ नसीहत कीजिए। और अपने हम नशीनान खुदा दोस्त में से एक को मेरे पास भेज दीजिए। ताके मैं उसकी मसालेहत से आसायश हासिल कर सकूं।"

जवाब में हज़रत ख़्वांजा हसन बसरी अलेह अर्रहमा ने लिखा:-

"अमीर-उल-मोमिनीन का नामा मुतालअे से गुज़रा। और जो इशारा इसमें किया गया था वो समझ लिया। आपने जो फ़रमाया। के उसकी मसाहबत से आसायश हासिल करूं। तो आप समझ लें के जैसा शख़्स आपको चाहिए वो आपके नज़दीक ना आएगा। और आपसे बे नियाज़ होगा। और जो शख़्स आपके पास आएगा ऐसे की आपको ज़रूरत नहीं है। उसकी मसाहबत से आपको कोई नफा ना होगा। और जो आपने नसीहत के लिए लिखा है तो जान लो के जो कोई खुदा से डरता है। तमाम लोग उससे डरते हैं। और जो खुदा से शर्म रखता है लोग भी उससे शर्म रखते हैं। और जो कोई ख़ुदा के हुज़ूर में गुनाहों पर दिलैरी का इज़हार करता है। तमाम लोग इस पर दिलैर हो जाते हैं और जो कोई आज ऐमन है। कल मख़्दूश होगा। और जो आज मख़्दूश है कल ऐमन होगा। और जो कोई अपने आप पर मग़रूर होगा वो दुनिया व आख़िरत में माज़ूल होगा। दुनिया की तामम नेकियों का निचौड़ सब्र है। और सब्र का सवाब सब से ज़्यादा है। अपने तमाम कामों में खुदा की पनाह तलब कर और उस पर तवक्कल रख। जो कोई आँख को आज़ाद करता है के जो कुछ चाहे देखे। उसका अंदवा दराज़ हो जाता है। और जो कोई ज़बान को रिहा कर देता है। के जो कुछ चाहे कहे। वो गोया अपने आपको हलाक कर देता है। ग़ालिबन ये कलमात आपकी रहनुमाई के लिए काफी हैं।" (मख़्ज़न अखलाक़, सफ़ा 413)

सबक़:- अल्लाह वाले दुनिया वालों से बे नियाज़ होते हैं और उनके दिलों में दुनयवी जाह व जलाल का कोई असर नहीं होता। और ये भी मालूम हुआ के हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ बड़े खुदा तरस और औलिया दोस्त ख़लीफा थे। और हज़रत हसन बसरी रहमत-उल्लाह अलेह के नासहाना कलमात पर पूरे पूरे आमिल थे।

हिकायत नम्बर(755) दिलजोई

एक बादशाह ने अपना एक एलची एक दूसरे बादशाह के पास इस ग़र्ज़ से भेजा के वो उसकी सलतनत की तरक़्क़ी के असबाब पर ग़ौर करके अपने मुल्क में भी उन्हीं क़वानीन को तरवीज दे। एलची ने बादशाह के पास पहुँच कर अपने आने की ग़र्ज़ व ग़ायत बयान की। इधर उधर की बातें होती रहीं। के चिराग़ का तेल ख़त्म हो गया। बादशाह खुद अपने हाथ से चिराग़ में तेल डालने लग गया। एलची ने कहा के ग़ुलाम को क्यों नहीं कह देते। बादशाह ने कहा। उसकी आँख लग गई है। और अभी उसकी कच्ची नींद है। इस वक़्त जगाना मुनासिब नहीं। मेरी सलतनत की तरक़्क़ी का राज़ रिआया की इसी तरह दिलजोई करने में है। आपका बादशाह भी इसी फ़रोतनी और दिलजोई को इख़्तियार करे। तो सलतनत खुद ब खुद तरक़्क़ी पज़ीर हो सकती है। (मख़्ज़न अखलाक़, सफ़ा 425)

सबक़:- नेक दिल हाकिम हमेशा अपनी रिआया की दिलजोई करते हैं और कभी किसी फर्द पर ज़ियादती नहीं करते।

हिकायत नम्बर(756) हज़ारों साल की उम्र

एक बादशाह की मजलिस में एक बुज़ुर्ग की बहुत तारीफ की गई। बादशाह को इश्तियाक़ हुआ। के उससे मिलूं। चुनाँचे फ़रमान भेज कर उनको बुलाया। वो बुज़ुर्ग जब मजलिस में आए तो उन्होंने सलाम के बाद कहा "बादशाह की हज़ारों साल की उम्र हो" बादशाह ने कहा के आपने पहले ही कलाम में हिमाक़त ज़ाहिर की। जो आप जैसे बुज़ुर्ग की शयाने शान ना थी। उसने जवाब दिया के आदमी की हयात बक़ाऐ बदन पर मोक़ूफ नहीं है। लेकिन नेक नाम की ज़िन्दगी वफात के बाद दूसरी हयात है। मेरी ग़र्ज़ ये थी के आपका नाम सफ़ा दहर पर हज़ारों साल तक क़ायम रहे। (मख़्ज़न अख़लाक़, सफ़ा 436)

सबक़:- अद्लो इंसाफ इख़्तियार करने से हमेशा के लिए नाम ज़िन्दा रहता है। और ऐसा शख़्स गोया मरता ही नहीं। बल्के वो हज़ारों साल तक जीता रहता है।

हिकायत नम्बर(757) अज़ाबे क़ब्र

हारिस बिन मिनहाल कहते हैं। एक बार मैं ईदगाह में गया। वहाँ मेहराब में सो गया। वहाँ एक क़ब्र भी थी। मैंने आवाज़ सुनी के एक लोहे

के हथोड़े से उस मईयत को मार रहे हैं। उसके गले में एक ज़ंजीर है। और उसका चहरा सियाह हो गया है। और आँखें नीली पड़ गई हैं। वो कहता है। हाय मुझ पर क्या बला नाज़िल हुई अगर दुनिया वाले मुझ को देखें तो कोई उनमें से गुनाह का इरादा ना करे। वल्लाह मुझ से खताओं की बाज़ पुर्स हुई। और उसने मुझे हलाक कर डाला। कोई है जो मेरे घर वालों को खबर दे। हारिस कहते हैं मैं नींद से जाग उठा। और मैं हैबत व ख़ौफ में था। मैंने उसके घर वालों की तलाश की। तीन लड़कियाँ पाईं। मैंने उन्हें उसके हाल की ख़बर दी। और उसके दोस्तों से उसका माजरा बयान किया। वो सब उसकी क़ब्र पर आए और रोये और अल्लाह से उसकी मग़फिरत की दुआ की। बाद रोज़ के मैं फिर उसी क़ब्र के पास गया। और वहीं उसके मुतस्सिल सो गया। और उसे बड़ी अच्छी हालत में देखा। उसके सर एक ताज था। और उसके पाँव में साने की नअलैन थीं। उसने मुझ से कहा। जज़ाकल्लाह अनी ख़ैरा। तूने मेरी बेटियों और दोस्तों को ख़बर की। और उन्होंने मेरी मग़फिरत की दुआ की। (दवा-ए-क़ल्ब अलक़ासी बतज़कीर-उल-मौत-उन्नासी, सफ़ा 65)

सबक़:- अज़ाबे क़ब्र बरहक़ है। और अमवात के लिए मुसलमानों की दुआऐ मग़फिरत बड़ी अच्छी और ज़रूरी है। उससे गुनहगार मईयत को फायदा पहुँचता है। और ये भी मालूम हुआ के गुनाहों का इरतिकाब बहुत बुरा काम है। उससे क़ब्र में भी अज़ाब होता है। इसलिए हर शख़्स को गुनाहों से बचना चाहिए।

हिकायत नम्बर(758) सुलतान को नसीहत सअदी

हज़रत शेख़ सअदी अलेह अर्रहमा एक मर्तबा हज से वापस होते हुए शहर तबरैज़ पहुँचे। वहाँ के उलमा व सलहा से मुलाक़ात की। सुलतान अबाक़ा खान के दो मौतमिद वज़ीर थे। जिनका नाम ख़्वाजा शम्सउद्दीन और ख़्वाजा अलाउद्दीन था। हज़रत सअदी से उन दोनों को ख़ास अक़ीदत थी। एक रोज़ सुलतान की सवारी आ रही थी। औरये दोनों वज़ीर भी उसके हमराह सवार थे। इत्तिफाक़न हज़रत सअदी भी राह से गुज़र रहे थे। जब इन दोनों वज़ीरों ने हज़रत सअदी को देखा तो अपने घोड़ों से उतर कर हज़रत सअदी को निहायत अदब से सलाम किया। और उनके हाथ पाँव को बोसे दिए। ये हाल देखकर सुलतान न हाज़ीन से पूछा के शम्सउद्दीन ने कभी हमारी ताज़ीम भी इस मुसाफिर के बराबर नहीं की। ये कौन शख़्स है? जब दोनों वज़ीर

हज़रत सअदी को मिल कर वापस आए तो सुलतान ने पूछा ये कौन शख़्स है। जिसकी तुमने इस क़द्र ताज़ीम की। वो बोले ये हमारे शेख़ हज़रत सअदी हैं। सुलतान को हज़रत सअदी से मिलने का शौक़ पैदा हुआ। और दोनों वज़ीरों की वसतात से हज़रत को अपने पास बुला कर उनकी सोहबत से मुसतफीद हुआ। हज़रत शेख जब चलने लगे तो सुलतान ने कहा मुझे कुछ नसीहत कीजिए। हज़रत सअदी ने फ़रमाया। नेकी या बदी के सिवा दुनिया से कोई चीज़ साथ ना जाएगी। अब तुम को इख़्तियार है। जो चाहो साथ ले जाओ। सुलतान ने कहा। अगर ये मज़मून नज़्म में हो जाए तो बेहतर है। आपने उसी वक़्त ये दो शैरों का क़तआ नज़्म करके पढ़ा...

शहे के पास रअय्यत निगाह मीदारिद
हलाल बाद खराजश के मज़्द चू पानी अस्त
वगर ना राई ख़ल्क अस्त ज़हर पारश बाद
के हर चै मेखोरदाज़ जज़िया मुसलमानी अस्त

तर्जुमाः- जो बादशाह रअय्यत की हिफाज़त करता है। खुदा करे उसके लिए खिराज (टेक्स) हलाल हो क्योंके वो उसकी निगहबानी की उजरत है। और अगर ख़लक़त का राई (निगहबान) नहीं है। तो वो उसके लिए सांप का ज़ेहर है। इस सूरत में जो कुछ खाएगा वो मुसलमानी जज़िया है। (मुग़नी-उल-वाज़ैन, सफ़ा 114)

सबक़:- दुनिया से कूच करने के बाद साथ अगर कोई चीज़ जाएगी तो नेकी या बदी। इसलिए आक़बत अंदेश अफ़राद अपने साथ नेकी लेकर जाते हैं और बदी से हमेशा किनारा कश रहते हैं। और ये भी मालूम हुआ के नेक दिल हाकिम अपनी रिआया के राई व निगहबान और उनके दुख दर्द में शरीक होते हैं।

हिकायत नम्बर (759) हज़रत हसन बसरी अलेह अर्रहमा की नसीहत

हज़रत हसन बसरी अलेह अर्रहमा कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे। तो रास्ते में आपने एक अमीर शख़्स को देखा जो ज़र्क़ बर्क़ और मौअत्तर लिबास पहने अपने खिद्दाम व चश्म के साथ बादशाह के दरबार में जा रहा था। हज़रत हसन बसरी अलेह अर्रहमा ने इस अमीर आदमी को मुखातिब फ़रमा कर फ़रमाया। के ऐ अमीर शहर! तू कहाँ जा रहा है। उसने कहा। मैं बादशाह के

दरबार में जा रहा हूँ। आपने फ़रमाया ज़रा ग़ौर कर के तूने जो ये शानदार और मौअत्तर लिबास पहना है। सिर्फ इसलिए के बादशाह के दरबार में हुज़ूरी के वक़्त तू फटे पुराने बोसीदा और बदबूदार लिबास से शर्मिंदा ना हो। हालाँके वो बादशाह भी तेरी तरह एक इंसान है। अब सोचो तो! के ये गुनाहों की कसरत और नाफ़रमानी की गंदगी से जो तूने अपनी रूह को मुलव्विस कर रखा है। तो कल क़यामत के रोज़ अंबिया व सालेहीन के दरमियान अहकम-उल-हाकिमन के दरबार में हाज़िरी देते वक़्त क्या तुम शर्मिंदा ना होगे?

अमीर पर इस कलाम का बड़ा असर हुआ। और उसने हज़रत हसन बसरी अलेह अर्रहमा की बैअत कर ली। और अल्लाह तआला की इबादत में मशग़ूल हो गया। (दुर्रत-उन्नासिहीन, सफ़ा 236)

सबक़:- अल्लाह तआला की बारगाह में हुज़ूरी के लिए हमें लाज़िम है के नेक आमाल और अख़लाक़े हसना से अपने आप को आरास्ता व मुज़य्यन कर लें। और गुनाहों की गंदगी से अपने आपको बचाए रखें। ताके अल्लाह के हुज़ूर शर्मिंदगी से दो चार ना होना पड़े।

हिकायत नम्बर(760) बादशाह और फक़ीर

एक दुरवैश बुज़ुर्ग किसी बादशाह अमीर से मिलने नहीं जाते थे। आख़िर बादशाहे वक़्त खुद चल कर उनके पास पहुँचा। जिस वक़्त उस दुरवैश ने देखा के बादशाह मेरे पास आया है। तो उसी वक़्त सज्दा-ए-शुक्र अदा किया। और वजह ये बताई के अल्लाह का शुक्र है के उसने बादशाह को मेरे पास भेजा। और मुझे उसके पास नहीं जाने दिया। क्यों दुरवैशों के पास बादशाह का आना इबादत है। और उनका उसकी तरफ़ चलना गुनाह है। बादशाह को सवाब हासिल हुआ। और मैं गुनाह से बच गया। (तालीम-उल-अख़लाक़, सफ़ा 502)

सबक़:- बड़े अच्छे हैं वो अमीर जो दुरवैशों की ख़िदमत में हाज़िर होते हैं। और बहुत बुरे हैं वो बराए नाम दुरवैश जो अमीरों के दरवाज़ों पर हाज़री देते हैं। इसी लिए कहा जाता है के *"निअमल अमीरू अला बाबिल फक़ीरी व बिअसल फक़ीरू अला बाबिल अमीरी"* यानी वो अमीर बहुत अच्छा है जो फक़ीर के दरवाज़े पर नज़र आए। और वो फक़ीर बहुत बुरा है जो अमीर के दरवाज़े पर नज़र आए।

हिकायत नम्बर(761) ज़ेहरी नज़र

इसकंद्रिया के अहद में एक जानवर पैदा हुआ। जिसकी नज़र ज़ेहरीली थी। वो अपनी ज़हर भरी नज़र से जिसकी तरफ़ भी देखता। उसे हलाक कर देता। कोई उसके नज़दीक जाने की जुर्रात ना करता। बादशाह ने बड़े बड़े दानाओं से पूछा के इस जानवर को कैसे हलाक किया जाए। उस वक़्त ऐसे असलह तो थे नहीं। जिन्हें दूर से चला कर उसे ढेर कर दिया जाए। किसी दाना की समझ में कुछ ना आया। आख़िर अरस्ता तालीस ने एक तजवीज़ सोची। एक बहुत बड़ा आईया तैयार किया। उसे छकड़े पर रखवाया। और शीशे के पीछे एक आदमी बिठाया। के उसे उस रूख पर रखे जिधर वो मूज़ी जानवर हो। चुनाँचे वो मूज़ी जानवर छकड़ा देखकर आगे बढ़ा। जूंही उसकी नज़र आईने पर पड़ी और अपनी सूरत नज़र आई तो वहीं गिर कर मर गया। ख़लक़त ने खुदा का शुक्र अदा किया। इसकंद्रिया ने अरसता तालीस से पूछा के इसमें क्या हिकमत थी। अर्ज़ किया के ज़मीन के अन्दर गंदे बुखारात बन्द रहने के बाइस कई सालों के बाद ऐसे जानवर पैदा हो जाते हैं। उस जानवर की आँख में ज़हर क़ातिल था वो जिसकी तरफ़ देखता। हलाक हो जाता। जब उसने आईने पर नज़र की। तो उसकी ज़हर भरी नज़र का अक्स उस पर पड़ा। और सराईय्यत करके उसकी हलाकत का मौजिब बन गया। (तालीम-उल-अख़लाक़, सफ़ा 515)

सबक़:- जिस तरह इस मूज़ी जानवर की ज़ेहरीली नज़र का असर खुद उसी पर पड़ा और वो हलाक हो गया। इसी तरह हसद करने वाला इंसान भी अपनी हसद की आग में खुद ही जल भुन जाता है। और अपना ही नुक़सान कर लेता है। जिस का वो हसद करता है। वो तो खुशिया मनाता रहता है। और हासिद अपने हसद की आग में जलता रहता है।

हिकायत नम्बर(762) निशाने मर्दमी

किरमान का एक बादशाह बड़ा सख़ी और मेहमान नवाज़ था। उसके मेहमान खाने का दरवाज़ा हर वक़्त खुला रहता था। और हर ख़ासो आम को खाना मिलता था। जो कोई उसके शहर में दाखिल होता है। वो उसका मेहमान होता था। और सुबह का नाश्ता और शाम का खाना उसके मेहमान खाने में तैयार मिलता था। एक दफा अज़्दुद्दोला ने उस पर लश्कर कशी की और किरमान का बादशाह ताबे मुक़ाबला ना लाकर क़िला नशीन हो गया।

अज़्दुद्दोला का लश्कर हर सुबह महसूरीन से सख़्त जंग करता। जब रात होती तो किरमान का बदशाह दुश्मन के सारे लश्कर के लिए खाना भेजता। अज़्दुद्दोला ने पैग़ाम भेजा के क्या वजह है के हम से सारा दिन लड़ते भी हो और रात को रोटी भी भेजते हो। जवाब दिया, के जंग करना इज़हारे मर्दमी है और रोटी खिलाना निशाने मर्दमी है। आप अगरचे हमारे दुश्मन हैं मगर हमारे शहर में मुसाफिर हैं। ये मुरव्वत के खिलाफ है के आप हमारे शहर में हों और अपना खाना खायें।

अज़्दुद्दोला ये सुनकर रो पड़ा और कहा के ऐसे बामुरव्वत से लड़ना बे मुरव्वती है। चुनाँचे मुहासरा उठा कर चला गया। और फिर छेड़ छाड़ ना की। (तालीम-उल-अखलाक़, सफ़ा 508)

सबक़:- जो काम अखलाक़ व मुरव्वत की तलवार कर सकती है वो काम फौलाद की तलवार नहीं कर सकती।

हिकायत नम्बर (763) चुग़ल खौर पर लानत

ख़लीफा मौतसिम बिल्लाह बड़ा नेक दिल हाकिम था। उसके अहद में एक कमीने चुग़लखौर ने उसके पास रिपोर्ट की। के फलाँ आदमी फौत हो गया है। वो बड़ा दौलतमंद था। उसका एक ही बेटा है। अगर हुक्म हो तो उसके तर्के से कुछ हिस्सा लड़के के गुज़ारे के लिए रखकर बाक़ी सारा माल बतौर क़र्ज़ दाखिल ख़ज़ाना कर लिया जाए। और जब वो बड़ा हो तो उसे दिया जाए। इस तरीक़े से लड़के का माल मेहफूज़ रहेगा और ख़ज़ाना शाही मामूर हो जाएगा मौतसिम ने उस काग़ज़ की पुश्त पर लिख भेजा के।

मरने वाले को खुदा बख़्शे, और उसके मालो मीरास में बर्कत दे। और यतीम नेक नीयती से परवरिश पाए और चुग़लखौर पर खुदा की लानत हो। (तालीम-उल-अख़लाक़, सफ़ा 517)

सबक़:- नेक दिल हाकिम कभी किसी चुग़लखौर की बात पर ध्यान नहीं देते और अपनी रिआया के मालो मीरास पर कभी ना जायज़ क़ब्ज़ा नहीं करते और ये भी मालूम हुआ के जो लोग महज़ शरारत व तमअे से हुक्काम को बहकाने की कोशिश करते हैं। वो झूटे और चुग़लखौर होते हैं। और अल्लाह की लानत के मुसतहिक़।

हिकायत नम्बर (764) क़ब्रिस्तान

हज़रत अली बिन अलमग़ैरा रहमत-उल्लाह अलेह दिन रात क़ब्रिस्तान

में रहा करते थे। हज़रत ख़ल्फ़ बिन सालिम अलेह अर्रहमा ने एक बार उनसे पूछा के आप कहाँ रहते हैं? तो फ़रमाया। वहाँ जहाँ अमीर ग़रीब का इमतियाज़ नहीं। और जहाँ सब बराबर हैं। पूछा के वो कौन सी जगह है? फ़रमाया। क़ब्रिस्तान। पूछा क्या आपको वहाँ रात की तारीकी में डर नहीं लगता? फ़रमाया। जब रात पड़ती है तो मैं उस वक़्त क़ब्र की तारीकी याद कर लेता हूँ। फिर मुझे रात की तारीकी नहीं डराती। पूछा। क़ब्रिस्तान के होलनाक मंज़र का आपके दिल पर असर नहीं पड़ता? फ़रमाया। मैं क़यामत के दिन का होलनाक मंज़र याद कर लेता हूँ। तो क़ब्रिस्तान का मंज़र मुझे नहीं डरा सकता। (रोज़-उल-रियाहहीन, सफ़ा 113)

सबक़:- इंसान को हर वक़्त क़ब्र का आलम और क़यामत का दिन याद रखना चाहिए। इसलिए के एक दिन मरना है और क़यामत के रोज़ अल्लाह के रूबरू पेश होना है।

हिकायत नम्बर(765) शैतान का अफसोस

एक मर्तबा एक अल्लाह के मक़्बूल ने शैतान को देखा। और उससे पूछा के ऐ इबलीस! क्या कभी तूने मुझ पर भी अपना दाव चलाया? शैतान ने कहा। के हाँ एक मर्तबा आपने खूब पेट भर कर खाना खाया था। और आप पर उस रोज़ नींद का कुछ ऐसा ग़लबा हुआ के आप रात का वज़ीफ़ा पढ़े बग़ैर सो गए थे। वो बुज़ुर्ग फ़रमाने लगे। खुदा की क़सम आइंदा मैं कभी खूब सैर शिक्म होकर खाना ना खाऊँगा। शैतान बोला! अफसोस मैंने अपना राज़ बता दिया। मुझे भी खुदा की क़सम! आइंदा मैं भी कभी आप जैसे बुज़ुर्ग को नसीहत ना करूंगा। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 117)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दों पर शैतान को ग़ल्बा हासिल नहीं होता। और मक़्बूलाने हक़ हर ऐसी बात से जो ग़फ़्लत में डाल देने वाली और शैतान को खुश करने वाली है। बचते हैं। इसी लिए हमें हुक्म है के *कूनो मआस्सादिक़ीना* "यानी सच्चों के साथ हो जाओ।" ताके उन पाक लोगों की तफ़ाक़त व मईयत के सदक़े में हम भी शैतान से बच जायें।

हिकायत नम्बर(766) अल्लाह की एक मक़्बूल बंदी

हज़रत हबीब अजमी रहमत-उल्लाह अले की बीवी भी बड़ी इबादत गुज़ार और अल्लाह की मक़्बूल बंदी थी रात के वक़्त अपने ख़ाविंद को ये कह कर जगाया करती थी। के

कुम या रजुलू ज़हाबल्लैलू व बेना यदेका तरीकुन बईदुन व ज़ादूना क़लीलुन व क़वाफ़िलुस्सालीहीना क़द सारत क़ुद्दामना व बक़ीना नहनू।

"उठये! के रात गुज़र गई और रास्ता तवील है। और ज़ादे राह क़लील। और अल्लाह वालों के क़ाफ़ले चल भी दिए। और हम पीछे रह गए।" (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 116)

सबक़:- अल्लाह के नेक बन्दे रातों को भी उठ उठ कर अल्लाह की याद करते हैं। और मंज़िले मक़्सूद तक पहुँचने की फ़िक्र में रहते हैं। मालूम हुआ के दिन लहू व लअब में और रातें नींद में गुज़ारने वाले बड़े ही ना आक़्बत अंदेश हैं। और पीछे रह जाने वाले हैं।

हिकायत नम्बर(767) आग में

एक बुज़ुर्ग वअज़ फ़रमा रहे थे और फ़रमा रहे थे के क़यामत के रोज़ हर एक को जहन्नुम के ऊपर से गुज़रना होगा। खुदा तआला फ़रमाता है।

इन मिनकुन इल्ला वारिदूहा काना अला रब्बिका हतमन मक़्ज़िय्या।

वहाँ से एक यहूदी गुज़र रहा था। उसने ये आयत सुनी। तो कहने लगा के अगर ये बात दुरूस्त है तो फिर हम तुम बराबर हैं। इसलिए के हमें और आप सब को जहन्नुम से गुज़रना होगा। वो बुज़ुर्ग फ़रमाने लगे नहीं ये बात नहीं गुज़रेंगे तो सभी। लेकिन हम सलामती के साथ उबूर कर जायेंगे, और तक़्वा और ईमान की बदौलत बच जायेंगे। और तुम उस के अन्दर गिर जाओगे। फिर उन्होंने ये आयत पढ़ी।

सुम्मा नुनज्जिल लज़ीनत्तक़व व नज़ारूज़्ज़ालिमीना फ़ीहा जिसिय्यन

यहूदी ने कहा के अगर मुत्तक़ी बचेंगे तो सुन लीजिए के मुत्तक़ी हम ही हैं। फ़रमाया। ये बात भी नहीं और ये आयत पढ़ी।

व रहमती वसीअत कुल्ला शैइन फसआक़्तुबहा लिल्लज़ीना यत्तकूना व यौतूनज़्ज़काता वल्लज़ीना हुम बिआयातिना योमिनूनल्लज़ीना यत्तबिऊनर्रसूला अन्नबिय्यलउमिय्या।

यहूदी ने का। अच्छा अपने दावा पर कोई दलील पेश कीजिए। फ़रमाया। लो ऐसी दलील पेश करता हूँ जिसे हर ख़ास व आम देख सकेगा। और वो ये है के एक कपड़ा मेरा और एक कपड़ा तुम्हारा लेकर दोनों को आग में डालते हैं। जिसका कपड़ा आग में जलने से बच जाए वो सच्चा। यहूदी ने कहा।

मुझे मंज़ूर है। चुनाँचे उन्होंने अपना एक कपड़ा लिया। और एक कपड़ा उस यहूदी का लेकर यहूदी के कपड़े को अपने कपड़े के अन्दर लपेट कर जलती आग में डाल दिया। थोड़ी देर के बाद उसे निकाला गया। तो सारे लोगों ने देखा। के हज़रत का कपड़ा जो ऊपर था। बिलकुल महफ़ूज़ है। और यहूदी का कपड़ा जो अन्दर था। जल चुका है। करामत देखकर वो यहूदी उसी वक़्त मुसलमान हो गया। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 120)

सबक़:- ईमान एक ऐसी मुफीद और नाफे चीज़ है के उसकी बदौलत इंसान जहन्नुम की आग से बच जाता है। और ये भी मालूम हुआ के एक बुज़ुर्ग की तरफ़ मंसूब हो जाने से एक कपड़ा भी आग में जलने से बच गया तो जो इंसान किसी अल्लाह के मक़्बूल बन्दे से निसबत पैदा कर लेगा वो क्यों ना निजात पा लेगा।

हिकायत नम्बर(768) सब से बड़ी दौलत

हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलात वस्सलाम एक मर्तबा अपनी पूरी शानो शौकत के साथ तशरीफ़ ले जा रहे थे। परिंदे आपके सर पर साया किनाँ थे। और आपके दायें बायें आगे पीछे जिन्नो इन्स और वहवश व तयूर के लश्कर थे। इस बेमिस्ल शौकत को देखकर एक आबिद ज़ाकिर शख़्स ने कहा। ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! आपको बहुत बड़ी सलतनत व दौलत अता फ़रमाई गई है। हज़रत सुलेमान अलेहिस्सलाम ने फ़रमाया। मेरी इस सलतनत व दौलत से भी बड़ी दौलत खुदा की याद है। इसलिए के ये सलतनत व दौलत फानी है। और खुदा की याद बाक़ी है। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 121)

सबक़:- खुदा की याद बहुत बड़ी दौलत है और जिसे ये दौलत हासिल है असल में अमीर वही है। और जो खुदा की याद से ग़ाफिल है वो ये चन्द रोज़ा हकूमत पाकर भी मुफलिस व क़िलाश है।

हिकायत नम्बर(769) रोज़ा

हज्जाज सक़फ़ी एक मर्तबा हज के लिए मक्का मोअज़्ज़मा व मदीना मुनव्वरह के दरमियान जाते हुए एक मंज़िल में उतरा और दोपहर का खाना तैयार कराया। खाना तैयार हो गया तो अपने हाजिब से कहा। के किसी मेहमान को ले आओ। जो मेरे साथ बैठ कर खाना खाए। हाजिब ख़ैमे से बाहर निकला। तो उसे एक आराबी लेटा हुआ नज़र आया। उसने उसे जगाया। और कहा। चलो तुम्हें अमीर हज्जाज बुला रहे हैं। आराबी आया। तो हज्जाज

ने कहा। मेरी दावत क़बूल करो। और हाथ धोकर मेरे साथ खाना खाने बैठ जाओ। आराबी बोला। माफ फ़रमाइये आपकी दावत से पहले मैं आपसे बेहतर एक करीम की दावत क़बूल कर चुका हूँ। हज्जाज ने कहा। वो किस की? वो बोला। अल्लाह की। जिसने मुझे रोज़ा रखने की दावत दी। और मैं रोज़ा रख चुका हूँ। हज्जाज ने कहा। इतनी सख़्त गर्मी में रोज़ा? आराबी ने कहा। हाँ! क़यामत की सख़्त तरीन गर्मी से बचने के लिए। हज्जाज ने कहा। आज खाना खा लो और ये रोज़ कल रख लेना। आराबी बोला। और क्या आप इस बात की ज़मानत देते हैं। के मैं कल ता ज़िन्दा रहूंगा। हज्जाज ने कहा। ये बात तो नहीं। आराबी बोला। तो फिर वो बात भी नहीं। ये कहा और चल दिया। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 130)

सबक़:- अल्लाह के नेक बन्दे किसी दुनयवी हाकिम के रौब में नहीं आते। और ये भी मालूम हुआ के जो लोग यहाँ की गर्मी बर्दाश्त करके रोज़ा रखते हैं। वो कल की होलनाक गर्मी से महफ़ूज़ रहेंगे।

हिकायत नम्बर(770) यहूदी से मुनाज़रा

हज़रत अबुअलहज़ील फ़रमाते हैं के एक यहूदी बसरे में आया। और उसने आम मुतकल्लमीन को बन्द कर दिया। मैंने अपने चचा से कहा। के मैं इस यहूदी से मुनाज़रा करने के लिए जाना चाहता हूँ। चचा ने कहा। बेटा! वो मुतकल्लमीन बसरा की एक जमात को हरा चुका है। मैंने कहा। के मुझे ज़रूर जाना है। तो चचा ने मेरा हाथ पकड़ लिया। और हम इस यहूदी के पास पहुँच गए। तो मैंने उसे इस हाल में पाया। के वो इन लोगों से जो उन से बहस करते थे। अपने सामने हज़रत मूसा अलेहिस्सलाम की नबुव्वत का इक़्रार कराता है। फिर हमारे नबी करीम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की नबुव्वत का इंकार करता है। फिर कहता है के हम उस नबी के दीन पर हैं के जिसकी नबुव्वत पर मुसलमानों ने भी इत्तिफाक़ किया। और तुम उस नबी की दीन पर हो। जिसकी नबुव्त पर हम इत्तिफाक़ नहीं करते। तो हम इस दीन को क्यों मानें जिसका नबी मुत्तफिक़ अलेह नहीं है। और उसका इक़्रार क्यों करें? अब मैं उसके सामने पहुच गया। मैंने कहा। के मैं तुझ से सवाल करूं या तू मुझ से सवाल करेगा? उसने कहा। बेटा! क्या तू देखता नहीं के मैंने तेरे बड़ों को गुफ़्तगू में बन्द कर रखा है। मैंने कहा। तुम इन बातों को छोड़ो। और इन दो बातों में से एक को इख़्तियार करो। उसने कहा। मैं सवाल करता हूँ। के मूसा अल्लाह के अंबिया में से एक ऐसे नबी नहीं

हैं, जिनकी नबुव्वत सही और उनकी नबुव्वत साबित है? तो उसका इंकार करता है या इक़्रार? अगर तू इंकार करता है तो अपने नबी की मुख़ालफत करेगा मैंने उससे कहा। के जो सवाल तू मूसा के बारे में मुझ से कर रहा है। मेरे नज़दीक इसमें दो सूरतें हैं। एक ये के मैं इक़्रार करता हूँ उस मूसा की नबुव्वत का जिसने हमारे नबी करीम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की नबुव्वत के सही होने की ख़बर दी और हम को हुक्म दिया के उनका इत्तिबा करें। अगर तू उस मूसा के बारे में सवाल कर रहा है। तो मैं उस मूसा अलेहिस्सलाम की नबुव्वत का इक़्रार करता हूँ। और अगर तू जिस मूसा के बारे में सवाल कर रहा है वो ऐसा है के हमारे नबी करीम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की नबुव्वत का इक़्रार नहीं करता और उसने उनके इत्तिबा का हुक्म हमें दिया और ना उसने उनकी आमद की बशारत दी तो मैं उसको नहीं पहचानता। और ना मैं उसकी नबुव्वत का इक़्रार करता हूँ। तो मेरे जवाब से वो यहूदी बोखला कर रह गया। फिर उसने कहा तौरात के बारे में तू क्या कहता है। मैंने कहा। तौरात के बारे में भी मेरे नज़दीक दो सूरतें हैं। अगर वही तौरात मुराद है जो उस मूसा पर नाज़िल हुई जिसने हमारे नबी सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की नबुव्वत का इक़्रार किया था। तो ये तौरात हक़ है और अगर वो तौरात मुराद है जिसका तू दावा कर रहा है तो झूटी है। और मैं उसकी तसदीक़ नहीं करूंगा। फिर उसने कहा। मैं तुझ से अलेहदगी में एक बात कहना चाहता हूँ। जो सिर्फ मेरे और तेरे दरमियान होगी। मैंने खयाल किया के शायद कोई नेक बात हो। मैं उसके क़रीब हो गया। उसने आहिस्ता आहिस्ता मुझे गालियाँ देना शुरू कीं के तेरी माँ ऐसी और ऐसी है। और जिसने तुझे तालीम दी उसकी माँ ऐसी है। वो गालियों में बजाए कनाया के उरयाँ अलफाज़ इस्तेमाल कर रहा था। दर असल वो कोशिश ये कर रहा था के मैं उस पर हमला कर बैठूं। फिर उसको ये कहने का मौक़ा मिल जाए के मुझ पर हमला कर दिया गया हैं इसलिए मैं जा रहा हूँ। मगर वो इसमें कामयाब ना हो सका। फिर मैंने हाज़ीने मजलिस से खिताब किया। और मैंने कहा। अल्लाह तुम को इज़्ज़त दे। क्या मैंने उसको जवाब नहीं दिया? सब ने कहा। बेशक। फिर मैंने कहा। क्या इस पर लाज़िम ना था। के मेरे जवाबात को रद करता। सब ने कहा। ज़रूर फिर मैंने कहा। के उसने जब मुझ से सरगोशी की। तो मुझे ऐसी गालियाँ दीं। जिनसे हद वाजिब होती है। और मेरे उस्ताद को भी ऐसी गालियाँ दीं और उसने ये समझा था के मैं ये गालियाँ सुनकर उस पर हमला कर दूंगा। फिर उसको ये कहने का मौक़ा

मिल जाएगा के हम ने उस पर हमला किया था। अब तुम पहचान चुके हो के ये किस क़माश का शख़्स है। बस फिर तो अवाम के हाथों से उस पर जूते पड़ना शुरू हो गए। और वो भागता हुआ निकला। और वहाँ लोगों के ज़िम्मे उसका बहुत सा क़र्ज़ था। उसको भी छोड़ गया। (किताब-उल-अज़किया, सफ़ा 253)

सबक़:- बद मज़हब हमेशा अय्यारी व चालाकी के साथ अपने अक़ायद बातिला की तशहीर करते हैं। और ऐसे चालाक लोगों के दाव से बचने के लिए बड़ी दानाई और होशियारी दरकार होती है। और ये भी मालूम हुआ के बदअक़ीदगी का पोल आखिर खुल कर ही रहता है।

हिकायत नम्बर(771) हक़ बहक़ दार रसीद

शाम के धुंद लके में खै़रू माली बाग़ में पौदों को पानी दे रहा था। उस वक़्त वा ना जाने किन खयालों में खोया हुआ था। उसे अपने बीते हुए दिन बुरी तरह याद आ रहे थे। जब वो शेख ग़ुलाम अली के हाँ काम करता था। कितना खुश था। वो शेख़ जी के हाँ। शेख़ साहब उस पर कैसे मेहरबान थे। उसका कितना खयाल रखते थे। उसके काम की कितनी क़द्र करते थे। और वो कैसी बुरी घड़ी थी। जब वो इस शहर से जाने लगे और ऐसे शरीफ आदमी की नौकरी से उसे अलग होना पड़ा।

और अब वो नए आक़ा के हाँ काम करता था। गुल्ज़ार खाँ के हाँ। ये खाँ साहब शेख़ जी की बिलकुल ज़िद थे। बहुत कंजूस, बद मिज़ाज़ और बहुत चिड़चिड़े। बहुत नाक़द्रे। चाहे कोई कितनी ही मेहनत करे। चाहे कोई कितना ही काम करे। पर उनका मुंह सीधा नहीं होता था। उनका लड़का दिलदार खाँ बाप से भी दो क़दम आगे था। खै़रू माली उन दो पाटों के बीच में पिस रहा था। मगर आदमी वफादार था। सब तकलीफ़ झेल रहा था। और जैसे तैसे निबह रहा था।

वो अपने खयाल में महू बराबर पानी दे रहा था। इतने में एक नर्म सी आवाज़ ने उसे चौंका दिया। उसने गर्दन उठा कर देखा। तो एक शरीफ आदमी उसके सामने खड़ा था। उसने पूछा। भला खै़रू माली को भी तुम जानते हो?

खै़रो झट बोला। मैं ही हूँ खै़रू माली। क्या बात है सरकार! मेरे लायक़ कोई काम? शरीफ आदमी ने पूछा। शेख ग़ुलाम अली को जानते हो? अपने पुराने आक़ा का नाम सुनकर खै़रू का चहरा खुशी से खिल गया। बोला।

मैं खूब जानता हूँ। भला उन्हें ना जानूंगा। बरसों उनका नमक खाया। खुदा

उनकी सी आदत सबको अता करे।

शरीफ आदमी ने ख़ैरू की तरफ़ ग़ौर से देखा। और ये इतमिनान करके के जो हुलिया उसे बताया गया था। ख़ैरू बिलकुल वैसा ही है। बहुत ग़मगीन अंदाज़ में बोला। तो भई! तुम्हें ये सुनकर अफसोस होगा के शेख़ जी का इन्तिक़ाल हो गया है। ख़ैरो को यु ख़बर सुनकर एक धक्का सा लगा। और उसे ऐसा मालूम हुआ के जैसे इस दुनिया में उसका कोई सहारा नहीं रहा। फिर वो फूट फूट कर रोने लगा।

शरीफ आदमी भी रो रहा था। उसने गला साफ करते हुए रूक रूक कर कहा। शेख़ जी मरते हुए तुम्हें दुआएँ दे गए हैं और तुम्हें एक तोहफा भेजा है। (कोट की जैब से थेली निकाल कर) ये दो हज़ार के नोट हैं। तुम ने शेख जी की बहुत मेहनत, ईमानदारी और वफादारी से ख़िदमत की है। ये उसका ईनाम है।

ख़ैरू बिलकुल खो गया। जैसे किसी ने इस पर जादू कर दिया हो। थोड़ी देर बाद हवास ठिकाने हुए। तो वो शरीफ आदमी जा चुका था।

उस वक़्त ख़ैरो के दिमाग़ में पहली बात जो आई वो ये थी के उस नौकरी को लात मारेगा। और ज़िन्दगी के बाक़ी दिन आराम व इतमिनान से गुज़ारेगा।

अब ये दौलत हिफाज़त से रखना थी। उसने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई। अपनी झोंपड़ी तो उसकी बिलकुल ग़ैर महफूज़ थी। एक झाड़ी नज़र आई। जो घनी और एक तरफ़ थी। सुर्ख़ सुर्ख़ फूलों से लदी हुई। उस झाड़ी के पीछे एक पुराना पेड़ था। पेड़ की जड़ से ज़रा ऊपर एक खोख थी। बस यही जगह सबसे ज़्यादा महफूज़ उसे नज़र आई। ख़ैरू ने वो थेली उसमें ठूंस दी और उस पर एक पत्थर रख दिया।

ख़ैरू को थेली की तरफ़ से इतमिनान हो गया तो उसने सोचा। चलो ख़ाँ साहब को जाकर आख़री सलाम कर आऊँ। उसे ये बिलकुल पता नहीं था। के दिलदार ख़ाँ कहीं छुपा हुआ उसे थेली रखते हुए देख रहा है। ख़ैरो जूंही पेड़ के पास से हटा दिलदार ख़ाँ पंजों के बल दौड़ता हुआ आया। और चुपके से थेली निकाल कर सीधा बाप के पास पहुँचा। उसे बताया के थेली ख़ैरो माली की है। वो इसे एक जगह से उड़ा लाया है।

लालची बाप ने थेली बेटे से ले ली। और कहा तुम इतमिनान रखो ये थेली कहीं बहुत हिफाज़त से रख दूंगा।

इतने में ख़ैरो भी पहुँच गया। गुलज़ार ख़ाँ उस वक़्त बहुत खुश खुश था। और उम्मीद के खिलाफ बहुत मिलनसारी और इंसानियत के साथ बात कर

रहा था। उसने बड़ी खुशी के साथ ख़ैरो का हिसाब साफ कर दिया। और दूसरी सुबह को उसे जाने की इजाज़त दे दी। दूसरे दिन जैसे ही ख़ैरो माली रूख़्सत हुआ दिलदार खाँ अपने बाप के पास दौड़ा हुआ आया। और थेली वाली बात पूछने लगा। गुलज़ार खाँ ने कहा। बेटा! ये थेली मैंने ऐसी जगह रख दी है के किसी कि फलक को भी ख़बर नहीं हो सकती।

दिलदार खाँ ने बे सब्री के साथ पूछा। आखिर किस जगह?

गुलज़ार खाँ ने बड़े इतमिनान के साथ बताया। वो जो घनी सी झाड़ी है ना। नीले नीले सुर्ख सुर्ख फूलों से लदी हुई उसके बिलकुल पीछे एक पुराना पेड़ है बस उस पेड़ की कोख में।

इतना सुनना था के दिलदार खाँ के पैरों तले से ज़मीन निकल गई। चहरे पर हवाईयाँ उड़ने लगीं। गुलज़ार खाँ को बेटे की ये हालत देखकर बहुत अचंबा हुआ। दिलदार खाँ कमज़ोर आवाज़ में बोला।

ये क्या ग़ज़ब किया अब्बा आपने? ये थेली वहीं से तो निकाल कर लाया था मैं" (माहे तय्यबा, नवम्बर 1962ई०)

सबक़:- हरीस व खायन कभी कामयाब व बामुराद नहीं होता। और पराये माल पर हाथ मारने वाले के पास ना दीन रहता है ना दुनिया। इसलिए खयानत व बददियानती और हर्स व लालच से हमेशा बचना चाहिए।

हिकायत नम्बर(772) कुत्ते की दुम

एक शख़्स को भूत अपने बस में करने का शौक़ पैदा हुआ। बिचारे ने बहुत मंतर जंतर सीखे। मगर भूत बस में ना आया। लाचार वो एक जंगल में रहने वाले फक़ीर के पास गया। और कहने लगा। हुज़ूर! मुझे कोई ऐसी तरकीब बताइये जिससे भूत मेरे क़ब्ज़े में आ जाए और मेरा सब काम धंदा कर दिया करे। फक़ीर अक़्लमंद इंसान था। उसने कहा। भूत बुरे होते हैं। इस खयाल खाम से बाज़ आ जाओ तुम उसको काम काज ना बता सकोगे। आख़िर में वो तुम्हें हलाक कर देगा। उसने कहा मेरे पास काम काज बहुत है। जिनसे वो कभी फर्सत ना पा सकेगा। आख़िर इस फक़ीर ने उसे एक अमल बता दिया। ये घर आकर वो अमल करने लगा। जब मीआद मुक़र्ररा पर अमल पूरा हो गया तो भूत हाज़िर हो गया। भूत हाज़िर होकर कहने लगा। बताओ क्या करूं? उसने कहा। एक शानदार इमारत बना दो। एक पल में शानदार इमारत तैयार हो गई। उसने कहा, खेत जोत आओ। और खेत जोता हुआ तैयार था। उसने कहा। बहुत सा रुपया लाओ। ख़ज़ाना वहीं हाज़िर। ग़र्ज़ जो मुश्किल

से मुश्किल और मुख़्तलिफ काम उसको बताए गए। सब कुछ किया कराया तैयार। अब कोई काम ना रहा। भूत ने कहा कोई काम बताओ। वरना मैं तुम को हलाक कर दूंगा। ये डरा और दौड़ कर फक़ीर के पास आया। और कहा हुज़ूर! भूत को जो कुछ कहता हूँ वो झट पट कर देता है। अब मेरे पास कोई काम नहीं। बताओ अब क्या करूं? वरना मुझ को वो हलका कर देगा। इतने भूत भी "मैं खाऊँ" "मैं खाऊँ" करता वहाँ पहुँच गया। फक़ीर के पास एक कुत्ता बैठा था। उसने उस आदमी को एक ख़ंजर देकर कहा के उस कुत्ते की दुम काट कर भूत को दो और उसे कहो के इसे सीधी कर दे" उस आदमी ने ऐसा ही किया। और कुत्ते की दुम काट कर भूत को दे कर कहा। के लो ये काम करो। के इसे सीधे कर दो। भूत ने कुत्ते की दुम हाथ में ली। एक दफा सीधी कर दी। फिर जब उसको छोड़ा तो टेढ़ी की टेढ़ी। एक दिन गुज़रा। दो दिन गुज़रे। भूत ने हज़ार कोशिश की मगर कुत्ते की दुम सीधी ना हुई। तब तो भूत बहुत घबराया और उस आदमी से कहने लगा। भाई! जो कुछ मैंने धन दौलत, रुपया पैसा तुझ को दिया वो सब कुछ तेरा। अब मुझ को छुट्टी दे। तू जीता मैं हारा। ये फौरन राज़ी हो गया। भूत अपने ठिकाने गया। और ये अपने घर चला आया। (माहे तय्यबा जनवरी 1963ई०)

सबक़:- दुनिया भी कुत्ते की दुम है। कोई हज़ार कोशिश करे ये कभी सीधी ना होगी। हज़रत इंसान ने उसे सीधा करने की बहुत कोशिशें कीं। बहुत सी तदबीरें कीं। शिफाखाने बनाए। लेकिन मरीज़ मरते ही रहे। मदरसे और किताबें ताली व इस्लाह के लिए जारी कीं लेकिन बदकारियाँ इसी तरह जारी हैं इंसाफ गाहें बनीं। मगर जरायम बदस्तूर मौजूद रहे। अलग़र्ज़ ये दुनिया कभी सीधी ना हुई है। और ना होगी। इसके सेंकड़ों काम ख़त्म कीजिए। तो हज़ारों और तैयार नज़र आयेंगे। पस हमें इसकी नीरंगी से इब्रत हासिल करके अपनी ज़िन्दगी को संवारना चाहिए।

हिकायत नम्बर(773) दूरअंदेशी

एक शख़्स ने एक जगह माल दफ़्न किया। और उस ढक्कन रखकर बहुत सी मिट्टी ऊपर डाल दी। फिर उसके ऊपर एक कपड़े में लपेट कर बीस दीनार रखे। और उन पर भी बहुत सी मिट्टी डाल कर जमा दी और चला गया। कुछ अर्से के बाद जब उसे अपने माल की ज़रूरत हुई तो उसने उस मुक़ाम को खोद कर देखा तो वो बीस दीनार ग़ायब थे। फिर उसने नीचे वाली बड़ी मिक़्दार का माल खोद कर देखा तो वो बदस्तूर मौजूद था। तो

उसने अल्लाह का शुक्र अदा किया। के उसका ये माल बच गया और उसने इसी अंदेखे की बिना पर ऐसा किया था। के शायद कोई शख़्स मुझे माल दफ़्न करते हुए देखता हो तो वो ऊपर वाले बीस दीनार पाकर ये समझे के इतना ही माल दबाया गया था। और वही लेकर चलता बने। और ज़्यादा माल की तरफ़ उसका खयाल भी ना जाए। (किताब-उल-अज़किया, सफ़ा 291)

सबक़:- दूरअंदेशी व हिकमत से बड़े बड़े फवायद हासिल होते हैं और इंसान नुक़सानात से महफ़ूज़ रहता है।

हिकायत नम्बर(774) ज़ोज-उल-क़हबा

हिन्दुस्तान का एक शायर एक अमीर के पास गया। और उसकी मदह की। उस अमीर ने ये जानते हुए के शायर अरबी ज़बान नहीं समझता कहा *तक़द्दम या ज़ोज-उल-क़हबती* यानी "एक बदकार औरत के खा़विंद आओ!" शायर ने अमीर से पूछा "*ज़ोज-उल-क़हबा*" का क्या मतलब है? तो अमीर ने कहा के लुग़ते अरब में इस अलफाज़ से उस शख़्स को मुराद लिया जाता है। जो शानदार मर्तबा का हो। और जिसका बड़ा महल हो। और उसके पास माल और सवारियाँ बहुत हों। और बहुत से उसके ग़ुलाम हों। शायर ने कहा। तो वल्लाह! ऐ अमीर! आप दुनिया के सबसे बड़े "*ज़ोज-उल-क़हबत*" हैं। अमीर ये सुनकर बड़ा शर्मिंदा हुा और कुछ ना कह सका। (किताब-उल-अज़किया, सफ़ा 305)

सबक़:- किसी से मसख़रा पन और इसतहज़ करना बहुत बुरी बात है। और इस क़िस्म की हरकत से आदमी को बअज़ वक़्त बड़ी नदामत का सामना होता है। पस हर शख़्स को ऐसी बुरी हरकत से बचना चाहिए।

हिकायत नम्बर(775) ज़मीन का बोझ

ख़लीफा-अल-हुक्म को अपना महल बनवाना था इत्तिफाक़ से जो ज़मीन पसंद की गई। उसमें एक ग़रीब बेवा का झोंपड़ा आता था। इस बेवा से कहा गया के ये ज़मीन क़ीमतन दे दे। मगर उसने इंकार किया। ख़लीफा ने ज़बरदस्ती उस ज़मीन पर क़ब्ज़ा करके महल बनवा लिया। इस बेवा ने क़ाज़ी की अदालत में हाज़िर होकर इसकी शिकायत की। क़ाज़ी ने उसे तसल्ली देकर कहा के इस वक़्त तुम जाओ। मैं किसी मुनासिब वक़्त तेरा इंसाफ करने की कोशिश करूंगा। खा़लीफा अलहुक्म जब पहले पहल महल और बाग़ मुलाहेजा करने गया। तो उसी वक़्त क़ाज़ी भी वहाँ खुद एक गधा और

एक खाली बोरा लेकर गया। और ख़लीफा से वहाँ से मिट्टी लेने की इजाज़त चाही। इजाज़त दी गई। उसने बोरे में मिट्टी भरकर अर्ज़ की। मेहरबानी करके इस बोरे को उठाने में मेरी मदद की जाए। ख़लीफा ने उसे एक मज़ाक़ समझा। और बोरे को हाथ लगाकर उसे उठाने की काशिश की। चूंके वज़न ज़्यादा था। ख़लीफा से ज़रा भी ना उठा। उस वक़्त क़ाज़ी साहब ने कहा।

"ऐ ख़लीफा! जब तू इतना बोझ उठाने के क़ाबिल नहीं तो क़यामत के दिन जब के हम सब का मालिक इंसाफ करने के लिए अर्श पर जलवा अफरोज़ होगा और जिस वक़्त वो ग़रीब बेवा जिसकी ज़मीन तूने बज़ोर ले ली है, अपने परवरदिगार से इंसाफ की ख़्वाहाँ होगी तो इस ज़मीन के बोझ को किस तरह उठा सकेगा?"

ख़लीफा इस तक़रीर से बड़ा मुतास्सिर हुआ। और फौरन वो महल मए तमामा चीज़ों के उस बूढ़िया को दे दिया। (मख़्ज़न अख़लाक़, सफ़ा 421)

सबक़:- अपनी इमारत और बड़ाई के ज़ौम में कभी किसी ग़रीब के हक़ पर हाथ ना डालना चाहिए। इसलिए के कल क़यामत के रोज़ खुदावंद करीम को हर बात का फैसला फ़रमाना हैं और ज़ालिमों को उनके ज़ुल्म की सज़ा देनी है। और ये भी मालूम हुआ के नेक दिल हाकिम क़यामत के होलनाक दिन का ख़ौफ अपने दिल में रखते हैं और उस दिन की सख़्ती से बचने के लिए अद्लो इंसाफ से काम लेते हैं।

हिकायत नम्बर(776) एक लाख दीनार

एक अमीर आदमी मर गया। तो उसकी विरासत से एक लाख दीनार उसके लड़के को मिले। लड़का हज़रत ज़ुलनून मिस्री रहमत-उल्लाह अलेह के पास आया। और कहने लगा। मैं चाहता हूँ ये एक लाख दीनार आप पर खर्च कर दूं। हज़रत ने फ़रमाया के तू बालिग़ है या ना बालिग़? वो बोला ना बालिग़ हूँ। फ़रमाया के जब तक तू बालिग़ ना हो ले। तब तक इस माल का खर्च करना तुझे रवा नहीं।

जब वो लड़का जवान हुआ तो उसने हज़रत ज़ुलनून के हाथ पर तौबा की। और वो एक लाख दीनार दुरवैशों पर खर्च कर दिए। एक रोज़ वो जवान दुरवैशों के पास आया। इत्तिफाक़ से उन दुरवैशों को कोई काम दरपेश था। जिसमें उन्हें कुछ रक़म की ज़रूरत थी। वो जवान ठंडी सांस भर कर कहने लगा। के हाय अगर मेरे पास और सौ हज़ार दीनार होते तो मैं उन सबको भी उन दुरवैशों पर खर्च करता। हज़रत ज़ुलनून ये बात सुनकर समझ गए के वो

असलकार से ग़ाफिल है और उसकी नज़र में क़द्रो इज़्ज़त दरहम व दीनार की है। आपने उस जवान को अपने पास बुलाकर कहा के फलाँ अत्तार की दुकान पर जाओ। और मेरी तरफ़ से कहो के तीन दरहम की फलाँ दवा दे दो। वो जवान गया और वो दवा लेकर आ गया। आपने फ़रमाया के उसको ओखली में डाल कर रगड़ो। और फिर तेल में गूंध कर उसकी तीन गोलियाँ बनाओ। और हर एक गोली में सूई के साथ सुराख़ करके मेरे पास ले आओ। उसने ऐसा ही किया। और तीन गोलियाँ तैयार करके ले आया। आपने उन गोलियों को हाथ में लेकर मला। और इन पर कुछ फूंक दिया। एक दम वो तीनों गोलियाँ याक़ूत के तीन टुकड़े हो गए। के कभी इस जवान ने वैसे ना देखे थे। फिर आपने फ़रमाया के इन्हें बाज़ार में ले जाओ। और देखो के क्या क़ीमत उठती है? लेकिन बेचना नहीं! वो जवान बाज़ार में गया। और वो टुकड़े दिखाए। हर एक की सौ हज़ार दीनार क़ीमत लगी। वापस ले आया। और कहा के ये क़ीमत उठती है। आपने फ़रमाया। अब फिर इन्हें ओखली में डालो। और इन्हें चूरा चूरा कर दो। और ख़बरदार! के ये दुरवैश रोटी पैसे के भूके नहीं हैं। उनके पास सब कुछ मौजूद है। उस जवान की आँखें खुल गईं। और उसकी नज़र में माले दुनिया की कुछ वक़अत ना रही। (तज़्करत-उल-औलिया, सफ़ा 144)

सबक़:- अल्लाह के बन्दों को बज़ाहिर मफलूक-उल-हाल देखकर ये ना समझना चाहिए के उनके पास कुछ नहीं। मगर उनके दिल में माले दुनिया की कुछ भी वक़अत नहीं होती। और उनका फक्र फिक्र इख़्तियारी होता है।

हिकायत नम्बर(777) लज़ीज़ खाना

हज़रत ज़ुलनून मिस्री अलेह अर्रहमा ने दस बरस तक कोई लज़ीज़ खाना तनावुल ना फ़रमाया। नफ़्स चाहता रहा। और आप नफ़्स की मुख़ालफत फ़रमाते रहे। के मैं अपने नफ़्स का कहा हर गिज़ ना मानूंगा। एक बार ईद की रात को दिल में कहा। के कल ईद के रोज़ अगर कोई लज़ीज़ खाना खा लिया जाए। तो क्या हर्ज है। हज़रत ने अपने दिल से कहा के मैं दो रकअत नफिल पढ़ूंगा। और हर दो रकअत में पूरा क़ुरआन ख़त्म करूंगा। अगर तू इस बात में मेरे साथ मुवाफ़्क़त करे तो कल लज़ीज़ खाना मिल जाएगा। चुनाँचे आपके दिल ने इस अम्र मुवाफ़्क़त की और आपने दूसरे रोज़ यानी ईद के दिन लज़ीज़ खाना मंगवाया। निवाला उठाकर मुंह में डालना ही चाहते थे के

फिर रख दिया और ना खाया। यारों ने इसकी वजह पूछी तो फ़रमाया जिस वक़्त मैं निवाला मुंह के क़रीब लाया तो दिल ने कहा के देखा में आख़िर अपनी दस साल की ख़्वाहिश में कामयाब हो ही गया ना! मैंने उसी वक़्त कहा के अगर ये बात है तो मैं तुझे हरगिज़ कामयाब ना होने दूंगा।

उसी वक़्त एक शख़्स एक लज़ीज़ खाने का तबाक़ उठाते हुए हाज़िर हुआ। और कहने लगा ये खाना मैंने अपने लिए रात को तैयार किया था। रात को ख़्वाब में मैंने रसूले करीम सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम की ज़ियारत की। हुज़ूर ने मुझ से फ़रमाया के अगर तू कल क़यामत के रोज़ भी मुझे देखना चाहता है तो ये खाना ज़ुलनून के पास ले जा। और उनसे जाकर कह के

हज़रत मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम सिफारिश करते हैं। के दम भर के लिए नफ़्स के साथ सुलह कर लो। और चन्द निवाले इस लज़ीज़ खाने से खा लो।

हज़रत ज़ुलनून ये पैग़ामे रिसालत सुनकर वजद में आ गए। और कहने लगे। मैं फ़रमाँबरदार हूँ। मैं फ़रमाँबरदार हूँ और लज़ीज़ खाना खाने लगे। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 145)

सबक़:- अल्लाह के मक़्बूल बन्दे नफ़्स के ग़ुलाम नहीं होते। और नफ़्सानी ख़्वाहिशात की कुछ भी परवाह नहीं। करते। और वो अल्लाह की इबादत व इताअत ही में खुश रहते हैं। और उनकी ये शान होती है के अल्लाह व रसूल की ख़ातिर वो लज़ायज़े दुनयवी से मुजतनिब रहते हैं और खुदा और उसका रसूल खुद उन्हें खिलाता है। और ये भी मालूम हुआ के हमारे हुज़ूर सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम अपनी उम्मत के हालात से आज भी बा ख़बर हैं।

हिकायत नम्बर (778) हवा

हज़रत अबु मोहम्मद मुरतअश रहमत-उल्लाह अलेह से किसी ने आकर कहा। के फलाँ शख़्स हवा में उड़ता है। फ़रमाया के ये कोई कमाल नहीं। कमाल ये है के नफ़्स की हवा की मुखालफत करे। नफ़्स की हवा की मुखालफत करना हवा में उड़ने से कहीं ज़्यादा अफ़्ज़ल व आला है। (तज़करत-उल-औलिया, सफ़ा 525)

सबक़:- इत्तिबाऐ शरीअत सबसे बड़ा कमाल है। और इत्तिबाऐ शरीअत ही से विलायत हासिल होती है। हवा में उड़ना या पानी की सतह पर

चलना कोई कमाल नहीं। ये बातें अल्लाह के मक़्बूलों के सामने एक खेल से ज़्यादा वक़अत नहीं रखतीं।

हिकायत नम्बर(779) एक ताजिर

एक ताजिर अपने ऊँट पर बहुत सा माल तिजारत लाद कर मिस्र गया। मिस्र पहुँचा तो वहाँ हजूम में अपना ऊँट मअे सामान के खो बैठा बड़ा परेशान हुआ। और ऊँट की काफी तलाश की। मगर वो ना मिला। एक शख़्स ने उससे कहा के यहाँ एक बहुत बड़े बुज़ुर्ग हज़रत अबु-अल-अब्बास व महूरी हैं। उनकी ख़िदमत में जाओ। वो दुआ करेंगे। तो तुम्हारा ऊँट मअे सामान के मिल जाएगा। चुनाँचे वो ताजिर हज़रत अबु अलअब्बास की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। और अर्ज़ की। के हुज़ूर! मेरा ऊँट मअे सामान के गुम हो गया है। मेरे लिए दुआ फ़रमाइये। हज़रत ने उसकी इस बात का तो कोई जवाब ना दिया। सिर्फ इतना कहा के आज हमारे पास दो मेहमान आए हैं। उनके लिए कुछ आटा और कुछ गोश्त दरकार है। ताजिर ने जब ये सुना। तो दिल ही दिल में कहने लगा। कमाल है मैं अपना दुख बयान कर रहा हूँ और इन्हें अपने आटे गोश्त की पड़ी है। बददिल होकर वापस आ गया। और वापस आते हुए उसे अपना एक मक़रूज़ नज़र आया। जिससे उसने काफी रक़म लेना थी। ये उसके दरपे हो गया। और कहने लगा। आज तू मैं कुछ ना कुछ लेकर ही छूड़ूंगा। उसने साठ दरहम अदा कर दिए। ये ताजिर बाज़ार गया। और दिल में कहने लगा के हज़रत अबुअलअब्बास ने आटे और गोश्त का कहा था। रूपे मिल ही गए हैं चलो ये चीज़ें खरीद लो। और चल कर हज़रत अबु अलअब्बास को दो। या तो सब कुछ मिल गया और या फिर ये साठ दरहम भी गए। चुनाँचे उसने कुछ आटा, कुछ गोश्त और बाक़ी पैसे जो बचे उनसे कुछ मीठी चीज़ें भी खरीद लीं। और सब कुछ लेकर हज़रत अबु अलअब्बास के पास जाने लगा। जब हज़रत के मकान के क़रीब पहुँचा तो क्या देखता है के उनका ऊँट मअे सामान के उनके दरवाज़े के पास खड़ा है ये देखकर वो हैरान रह गया। क़रीब जाकर देखा तो वाक़ई उसका अपना ही ऊँट था। और सामान भी सारा मौजूद था। खुशी से अन्दर गया। और सब चीज़ें अबु अलअब्बास के आगे रख दीं। हज़रत ने देखकर फ़रमाया। के आटे और गोश्त के अलावा ये चीजें कैसे हैं? ताजिर ने कहा। हुज़ूर! ये मैं अपनी तरफ़ से ज़ायद ले आया हूँ। फ़रमाया

मुआहेदे में ये चीज़ें तो शामिल ना थीं अच्छा। अगर तुम ले आए हो तो हम भी ज़्यादा कर देते हैं। जाओ अपना सामान मंडी में लेकर जाओ। और अपना सामान अच्छी क़ीमत पर बेचो। और किसी दूसरे ताजिर के आ जाने का ख़ौफ मत करना।

अलबहरू फी यमीनी वलबर्रू फी शिमाली दरया मेरे दायें हाथ में और खुश्की मेरे बायें हाथ में है।

मतलब ये के जब तक तुम अपना माल ख़ातिर ख़्वाह दामों पर बेच ना लोगे। दूसरा कोई ताजिर मंडी में ना आएगा। चुनाँचे ये ताजिर मंडी में पहुँचा। तो और कोई दूसरा ताजिर वहाँ मौजूद ना था। उसने अपना सब माल अच्छे दामों में बेच लिया। तो फिर देखा के एक दम दूसरे ताजिर भी आ गए। और ये काफी नफा हासिल करके वहाँ से लौटा। (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 210)

सबक़:- अल्लाह वालों की बारगाह में हाज़री से बड़ी बड़ी मुश्किलें हल हो जाती हैं। और उनकी किसी बात के मुतअल्लिक़ बदगुमानी अच्छी नहीं। उनकी हर बात में कई भेद होते हैं। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वाले अपने अल्लाह की मर्ज़ी के ताबअे होकर सारे आलम पर मुतसर्रिफ हो जाते हैं। और ये उनकी अल्लाह ही की उन पर अता होती है।

हिकायत नम्बर (780) एक जिन्न

हज़रत अबु अलफज़्ल जोहरी मिस्री अलेह अर्रहमा की एक शख़्स ने बड़ी तारीफ सुनी। और वो उनकी ज़ियारत की नीयत से मिस्र को रवाना हुआ। जब हज़रत की मजलिस में पहुँचा तो क्या देखता है के हज़रत ने बड़ा शानदार लिबास पहन रखा है। और बड़े अमीर नज़र आ रहे हैं। उसने दिल में सोचा के इस क़द्र दुनयवी शानो शौकत रखने वाला खुदा का बन्दा नहीं हो सकता। ये सोचकर वापस चला आया। वापसी में एक गली से गुज़रते हुए एक औरत को देखा जो रो रही थी। और बड़ी परेशान थी। उसने वजह दरयाफ़्त की तो बोली के मेरी एक ही नोजवान लड़की है। उसकी शादी का दिन क़रीब है। और आज अचानक उस पर किसी जिन्न का साया हो गया है। और वो सख़्त बीमार है। मैं ग़रीब औरत हूँ और परेशान हूँ के जिन्न के क़ब्ज़े से वो कैसे निकले। उसने कहा। तुम घबराओ नहीं। उसका इलाज मेरे ज़िम्मे रहने दो। और चलो मुझे अपनी लड़की के पास ले चलो। चुनाँचे वो औरत उसे घर ले आई। उसने लड़की को देखा जो अजीब व ग़ारीब हरकात कर रही थी। उसने क़ुरआन पाक की आयात पढ़कर उस पर दम करना शुरू

किया। तो जिन्न बज़बान फसीह बोला।

"सुन लो मैं उन सात जिनों मे से हूँ जो हज़रत अली रज़ी अल्लाहो अन्ह के दस्ते हक़ परस्त पर ईमान लाए थे। हम सातों आज हज़रत अबु अलफज़ल के पीछे नमाज़ पढ़ने के लिए आए थे। वही हज़रत अबु अलफज़ल जिनके मुतअल्लिक़ तुम अपने दिल में बदगुमानी पैदा करके लौट आए हो। बदनसीब हो तुम जो लौट आए। हम उनके पीछे नमाज़ पढ़ने को हाज़िर हुए थे। इस लड़की ने हम पर निजासत फैंकी। मेरे साथी तो बच गए। मगर वो निजासत मुझ पर पड़ी। और मैं नमाज़ से रह गया। इसी गुस्से से मैंने उसे पकड़ा है। और तुम ने भी जो हज़रत अबु अलफज़ल के मुताल्ल्कि़ बदगुमानी की है। उसका भी मुझे रंज है। तुम तौबा करो। और हज़रत की ख़िदमत में फिर हाज़िरी दो" उस शख़्स ने कहा। अच्छा मैं सच्चे दिल से तौबा करता हूँ। और अभी फिर वापस जाता हूँ। मगर तुम भी अब इस लड़की को माफ कर दो। चुनाँचे उस जिन्न ने कहा। लो मैं जाता हूँ ये कहकर जिन्न चला गया। और लड़की अच्छी हो गई।

फिर ये शख़्स भी वापस हुआ। और हज़रत अबु अलफज़ल की खिदमत में हाज़िर हुआ। हज़रत अबु अलफज़ल ने उसे आता हुआ देखकर मुसकुराते हुए फ़रमाया।

"जब तक जिन्न ने नहीं कहा तुम ने हमारी बुज़ुर्गी तसलीम नहीं की।" (रोज़-उल-रियाहीन, सफ़ा 415)

सबक़:- अल्लाह वालों से कभी बदगुनाम ना होना चाहिए। उन लोगों के दिलों में बहरहाल अल्लाह की याद होती है। और दुनिया से उनका ताल्लुक़ महेज़ ज़ाहिरी और कई हिकमतों की बिना पर होता है। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों की मक़्बूलियत जिनों में भी होता है। और ये नफ़ूस क़ुदसिया जिन्नो इंस के मरजअे व मतबूअ होते हैं। और ये भी मालूम हुआ के अल्लाह वालों पर दिलों के इरादे और खयालात भी मुनकशिफ हो जाते हैं।

हिकायत नम्बर (781) माँ का हक़

एक शख़्स ने अपनी माँ को कंधे पर सवार करके सात हज कराये। सातवें हज पर खयाल आया के शायद मैंने हक़ मादरी अदा कर दिया। रात को ख़्वाब में देखा के कोई कह रहा है। सर्दी सख़्त थी। तू बच्चा था, माँ के पास सो रहा था। तूने पाखाना कर दिया। तेरी माँ ने उठकर बिस्तर धोया,

ग़रीबी की वजह से दूसरा बिस्तर ना था। उसी गीले बिस्तर पर कड़कती सर्दी में लेट गई। और तुझ को रात भर अपने सीने पर लिटाए रखा। तू कहता है हक़ अदा हो गया। ऐ नादान! अभी तो उस एक रात का भी हक़ अदा नहीं कर सका। (तालीम-उल-अखलाक़, सफ़ा 267)

सबक़:- माँ बाप का बहुत बड़ा हक़ है और बाप से भी ज़्यादा माँ का हक़ है। खुश क़िस्मत हैं वो लोग जो अपने माँ बाप की ख़िदमत करके अल्लाह तआला को खुश कर लेते हैं। और ये भी मालूम हुआ के माँ बाप की जितनी भी ख़िदमत की जाए कम है।

अदब-उल-अरब

अहले अरब की फ़ुसाहत व बलाग़त और ज़हानत की दो दिलचस्प हिकायतें

हिकायत नम्बर(782) अरब का एक मेहमान और एक लड़की

अरब का एक शख़्स क़बीला बनी आमिर की किसी औरत के यहाँ मेहमान हुआ। मेहमान नवाज़ी तो अहले अरब के रगो पै में सराईय्यत किए हुए थी इसलिए ख़ातिर व मदारात में कोई दक़ीक़ा बाक़ी ना छोड़ा। इत्तिफाक़ से जिस रोज़ वो जाने लगा। उसकी ज़बान से ये शैर निकला के जिसमें क़बीला बनी आमिर की हिज्जो थी।

अशआर का तर्जुमा इस तरह है

तर्जुमाः- (ऐ मुख़ातिब) मुझ को तेरी जान अज़ीज़ की क़सम! क़बीला बनी आमिर के बदन पर जब तक उनकी खाल (सालिम) रहती है उस वक़्त तक वो (अपने) कुर्तों को पुराना नहीं होने देते। यानी बदनी तकालीफ को वो माली नुक़सान की ब निस्बत बहुत आसान समझते हैं।

अपने मज़ाक़ के मवाफिक़ वो इस शैर को आहिस्ता आहिस्ता गुनगुना रहा था। इत्तिफाक़ से इस मेज़बान औरत ने भी सुन लिया। अव्वल तो अश्आर हिज्जोविया अललअमूम क़त्ल कर देने वाले सलाह से ज़्यादा समझते थे। और अगर इस पर नज़र डाली जावे के क़त्ल में तल्फ रूह है। और हिज्जो में आबरूरेज़ी। तो एक हद तक ये खयाल फासिद भी ना था। दूसरे मेहमान नवाज़ी के पूरे एहसान के बदले में ऐसी सर्दमोहरी क़ाबिले बर्दाश्त भी ना थी। ताहम उसने ज़ब्त से काम लेकर अपनी लोंडी के ज़रिये से मेहमान से पूछा के मैंने आपकी मदारात और ख़ातिर में कोई कोताही की थी? उसने कहा के नहीं नहीं हर गिज़ नहीं। लोंडी ने कहा। के फिर आपको क्या ज़रूरत

पेश आई के आप इस क़िस्म के अश्आर तसनीफ करें। जिनसे हमारे क़बीले की कसरे शान होती है। उसने कहा के मेरी ज़बान से ये शैर बग़ैर क़सद के निकल गया। मैंने अमादन ऐसा नहीं किया। लोंडी ने यही जवाब उस मेज़बान औरत को सुना दिया। मेहमान को खयाल था के खुदा जाने ये औरत क्या फितना बर्पा करेगी। मैं इसी के क़बीले में हूँ। अगर उसने अपने क़बीले वालों से कह दिया तो वो मेरी जान के दरपे होंगे। इसलिए चाहता था के जल्द से जल्द वहाँ से रवाना हा जावे। थोड़ी देर ना गुज़री थी के एक नो उम्र बच्ची को देखा। के वो कमान से निकल कर बाहर आई। और उस मेहमान के पास बैठकर इधर उधर की बातें करने लगी। उस लड़की की बातें कुछ ऐसी प्यारी प्यारी थीं। के वो शख़्स उसकी बातों में अपने उस ख़ौफ को भी भूल गया। जो अभी थोड़ी देर हुई के उसको जल्द रवाना हो जाने पर मजबूर कर रहा था। जब उस लड़की ने अपनी खुदा दाद फिरासत से मालूम कर लिया के मेहमान अब मुतमईन हो गया है तो बातों बातों में उससे दरयाफ़्त किया। के ऐ इब्ने अम (चचा ज़ाद भाई) आप किस क़बीले के हैं। जवाब दिया के मैं क़बीले तमीम का एक शख़्स हूँ।

लड़की:- क्या आप उस शख़्स को जानते हैं के जिसके ये शैर हैं।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

क़बीला तमीम को क़ता(एक जानवर का नाम है जो पानी का पता लगाने में ज़र्ब-उल-मिस्ल है)

से ज़्यादा दनाईय्यत और कमीना पन का रास्ता मालूम है और अगर वो इज़्ज़त और शराफत के रास्तों पर चलते तो (यक़ीनन) गुमराह होते।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

मैं देखता हूँ के रात के ज़ुलमत को दिन दूर कर देता है(मगर) मैंने ज़िल्लत और रूसवाईयों की आदतों को तमीम से अलेहदा होते हुए कभी नहीं देखा।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

(उनकी नामर्दी इस हद को पहुँच गई है के(अगर कोई मच्छर जूं की पीठ पर (सवार होकर) क़बीला-ए-तमीम की दोनों सफों पर हमला कर दे तो उनको बजुज़ भागने के और कुछ भी बन ना पड़े।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

अगर क़बीला-ए-तमीम मअे अपनी तमाम जमातों के किसी बंधी हुई च्यूंटी पर हमला कर दें तो वो च्यूंटी (भी) उनको क़लील समझे।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

क़बीला तमाम गधे के बदत्तर और ज़लील बच्चे की तरह है के अपनी माँ का दूध पीता है। और अगर इधर उधर हो जाती है तो बहज़्ज़ार ज़िल्लत उसके पीछे पीछे लगा रहता।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

हम ने (मेहमान नवाज़ी में) जानवर ज़िबह किए और उन पर खुदा का नाम लिया। लेकिन क़बीला-ए-तमीम ने एक दिन भी ज़िबह ना किया। के उनको बिस्मिल्लाह अल्लाहू अक्बर कहने की नोबत आती।

अगरचै छोटी लड़की के सवाल का ज़ाहिरी मनशा उस शायर का नाम मालूम करना था। मगर मेहमान ऐसा बेवक़ूफ ना था के लड़की के अलफाज़ का मतलब यही समझता। वो समझ गया के उससे लड़की का मनशा क्या है। और अगरचै ये अश्आर इस खूर्द साल लड़की की बदीहा गोई और तेज़ी तबअे का नतीजा थे। मगर मेहमान को ये खयाल हुआ के किसी शख़्स ने क़बीला तमीम की हिज्जो की है जो इस क़द्र मशहूर हुई के बच्चे बच्चे की ज़बान पर है। ज़िल्लत के खयाल से कांप गया। सर से पैर तक पसीना पसीना हो गया। और ज़िल्लत से बचने की कोई तदबीर बजुज़ उसके समझ में ना आई। के अपने बयान का इंकार करे। चुनाँचे उसने उन अश्आर को सुनकर घबरा कर कहा। अज़ीज़ बहन! मैं सफर की तैयारी में मसरूफ था। तुम ने मेरे क़बीले का हाल दरयाफ़्त किया। मेरा दिल तो सामान सफर में मशग़ूल था। ज़बान से बे इख़्तियारी में निकल गया के मैं क़बीले तमीम का शख़्स हूँ। वरना हक़ीक़त ये है के मेरा नसब क़बीले तमाम से नहीं मिलता है। ना मैं इस क़बीले में से हूँ।

लड़कीः- झूट से ज़्यादा शर्मनाक चीज़ खुदा की पैदा की हुई चीज़ों में से बमुश्किल मिल सकेगी। अच्छा! अगर आप क़बीले तमीम में से नहीं हैं तो फिर किस क़बीले से हैं?

मेहमानः- अज़ीज़ बहन! खुदा की क़सम मैंने जो कुछ कहा। सच कहा। मुझ को ज़रूरत क्या थी। के मैं झूट की निजासत से अपनी ज़बान को आलूदा करता। शायद तुमने सुना होगा के अरब में एक बहुत ही ज़ी इज़्ज़त क़बीला बनी ज़बा के नाम से पुकारा जाता है। मैं उसका एक शख़्स हूँ। मुमकिन है के तुम ने उसके वो औसाफ और मफाखिर बवजह कम सुनी और दूर होने के ना सुने हों जिनको अरब को छोटा बड़ा जानता है। लेकिन ग़ालिबन नाम ज़रूर सुना होगा।

लड़की:- आपने बजा फ़रमाया। मैं चन्द शैर और पढ़ूं क्या। आप अज़राहे करम बतला सकेंगे के ये शैर किस के हैं?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

ज़बा का हर हर शख़्स दनाईय्यत की वजह से नीलगूं चश्म है।

मेहमान ने जब शैर सुना तो दिल में अपने आपको ख़ुद ही मलामत करने लगा। के ख़्वाह-म-ख़्वाह झूट भी बोला। और काम भी ना चला। अगर नाम लिया ही था तो किसी ऐसे क़बीले का नाम लिया होता जो ऐसा ज़लील तो ना होता के उसकी हिज्जो के अश्आर बच्चा बच्चा की ज़बान पर हैं। उस लड़की की भी कुछ उम्र है? इस क़बीला-ए-बनी ज़बा की दनाईय्यत यहाँ तक तो पहुँच गई के उसकी हिज्जो के अश्आर इस ख़ुर्द साल लड़की के कानों तक पहुँच गए। अब मैं किसी मुंह से कहूंगा के मैं इस क़बीले का नहीं हूँ। उसने मेरे पहले इंकार ही की कब तसदीक़ की थी जो अब करेगी। लेकिन ये ज़िल्लत तो क़ाबिले बर्दाश्त नहीं के मैं ऐसे क़बीले की तरफ़ मनसूब हूँ। जिसकी हिज्जोयों ज़बान ज़द हो और सब्क़त लिसानी तो आख़िर बड़े बड़े फ़ुसहा और बलग़ा से हुआ करती है। अगर मैं भी सब्क़त लिसानी का एत्राफ़ कर लूंगा तो कौन सा गुनाह है। ये खयालात थे। जो मेहमान के दिल में आन की आन में बिजली की तरह इधर से उधर तक दौड़ गए। और ज़रा सी देर में इज़्ज़त के खयाल ने ये फ़ैसला सुना दिया। के इस ज़िल्लत से झूट अच्छा है। इसलिए उसने लड़की से नदामत आमेज़ लेहजे में कहा।

अज़ीज़ बहन! अब तो ग़ालिबन तुम को यक़ीन आ गया होगा के मैं सफर के सामान और उसके इन्तिज़ाम में ऐसा अज़ख़ुद रफ़्ता हो रहा हूँ। के ज़बान गोया मेरे क़ाबू ही में नहीं। देखो फिर मुझ से ग़लती हुई किस क़बीले का नाम लेना चाहता था। और किस क़बीले का नाम ज़बान से निकल गया। भला! मुझ को बनी ज़बा से क्या ताल्लुक़ शायद तुम को यक़ीन ना आवे। मगर मैं ख़ुदा की क़सम क़बीला बनी ज़बा में से नहीं हूँ।

लड़की:- "नहीं नहीं।" मैं आपको दरोग़ गो खयाल नहीं करती हूँ। बेशक ऐसा इत्तिफ़ाक़ होता है के बअज़ मर्तबा इंसान कहना कुछ चाहता है और निकलता कुछ है। मगर मैं भी चाहती हूँ के आपके क़बीले का सही सही हाल मालूम करूं। तो फिर आप किस क़बीले में से हैं।?

मेहमान:- (दिल में) इस मर्तबा किसी क़बीले का नाम लेना चाहिए के जो शराफत और इज़्ज़त में अपनी नज़ीर आप हो। किसी शख़्स ने उसकी

हिज्जो की हो (लड़की से) बहन! मैं क़बीला बनी अजल का हूँ और ये वो क़बीला है के जो शरफ़ और इज़्ज़त.....

लड़कीः- (बात काट कर) हाँ मैं इस क़बीले को खूब जानती हूँ। खसूसन इस वजह से और भी जानती हूँ के इसकी निस्बत दो शैर मुझ को याद हैं। मेरा दिल चाहता है के मैं मालूम करूं के ये दोनों शैर किसने तसनीफ किए हैं।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

मैं (शरीफ) लोगों को देखता हूँ के वो अताऐ कसीर (मोहताजों और मसाकीन को) तक़सीम किया करते हैं और क़बील-ए-बनी अजल की अता सिर्फ तीन और चार ही पर मौकूफ रहती है। (यानी बहुत ही क़लील-उल-खै़र लोग हैं।)

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

जब क़बीला बनी अजल का कोई शख़्स ज़मीन (के किसी हिस्से) में मरता है तो बवजह ज़लील होने के ज़्यादा (ज़मीन की ज़रूरत नहीं होती) उस ज़मीन में सिर्फ एक हाथ और एक उंगली (के बराबर) ख़त खींच कर उसमें (दफ़्न) कर दिया जाता है।

इन शैरों को सुनकर मेहामन की तो ये हालत हो गई के काटो तो लहू नहीं बदन में। हैरत से लड़की का मुंह तकने लगा। और दिल ही दिल में कहने लगा के इस लड़की से मैंने झूट बोल कर कहा के मैं क़बीला बनी अजल का हूँ और क़बीला-ए-बनी अजल की जो कुछ इज़्ज़त और वक़अत यहाँ है। वो मोहताज बयान नहीं। इन शैरों से ज़ाहिर है के अगर लड़की ने घर वालों से जाकर कहा। के हमारा मेहमान क़बीला-ए-बनी अंजल का है तो इसमें मेरी किस क़द्र ज़िल्लत होगी। और यहाँ वाले मुझ को कैसे हिक़ारत की नज़र से देखेंगे। लेकिन! आख़िर चारह-ए-कार क्या है। कई मर्तबा तो झूट बोल चुका हूँ। अब ये लड़की क्यों यक़ीन करने लगी। ख़ैर! अगर यक़ीन ना करेगी तो ना करे। लेकिन मुझ को तो इंकार कर ही देना चाहिए। ये सोच कर कहने लगा। बहन! इस मर्तबा या तो तुम ने ग़ौर से सुना नहीं और या मुझ से फिर नाम लेने में ग़लती हुई। मैं तो इस वक़्त ऐसी मुज़तरिब हालत में हूँ के अगर कोई मुझ से मेरा नाम भी पूछे। तो शायद उसके जवाब में भी मुझ से ग़लती हो जावे। अगर तुम को मेरे क़बीले का हाल ही मालूम करना है तो ज़रा ग़ौर से सुनो! मैं क़बीला-ए-अज़्द का रहने वाला हूँ।

लड़कीः- आपने बजा फ़रमाया। इस क़बीले का हाल तो हमारा बच्चा

बच्चा जानता है। इस क़बीले के बारे में मुझ को भी दो शैर याद हैं। अगर आप उनको सुनने का वादा करें तो मैं आपको वो अश्आर सुना दूं। जिसमें इस क़बीले का ज़िक्र ख़ैर किया गया है? लेकिन अगर आपको न अश्आर के मुसन्निफ का नाम मालूम हो तो बताने में दरीग़ ना फ़रमावें।

मेहमान ये मालूम करके के फिर ये शैर पढ़ेगी। दिल में तो थर्रा उठा और कहने लगा। के ऐसा ना के क़बीला अज़्द की हिज्जो के अश्आर भी उसको किसी ने याद करा दिए हों। ताहम बज़ाहिर अपना चहरा बेख़ौफों और मुतमईनों का सा बना कर कहने लगा। के बहन! तुम ज़रूर अश्आर सुनाओ। मेरा दिल भी यही चाहता था के तुम मुझ को शैर सुनाओ। मुझ को अगर इस शायर काहाल मालूम होगा तो यक़ीन ज़रूर और मुफस्सिल बयान करूंगा।

लड़की तो इजाज़त की मुंतज़िर थी। फौरन उसने शैर निहायत खुश आवाज़ी से पढ़ना शुरू कर दिए।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

तर्जुमाः- क़बीला अज़्द की कोई औरत खतान से नहीं घबराई और ना उस औरत को तआक़्क़ुब किए हुए शिकार का गोश्त कभी नसीब हुआ (यानी शिकार करना बहादुरों का काम है। और उनके मर्द बुज़दिल और नामर्द हैं। के किसी शिकार का तआक़्क़ुब करके शिकार नहीं करते हैं। के उनकी औरतें उनको खावें) ना कोई शिकारी उसके ख़ैमों में शिकार का गोश्त कभी लाया। (यानी अगर कुछ भी इज़्ज़तदार होते तो बतौर तोहफा और हदिया ही के उनके यहाँ गोश्त शिकार का आ जाता। मगर उनको ये भी नसीब नहीं) और ना उसने मछली की खाल के ज़र्फ में कोई चीज़ पी (इस क़िस्म के नफीस बर्तन अरब के शुरफ़ा में हुआ करते थे)

मेहमान इन अश्आर को सुनकर बिलकुल ही सटपटा गया। और दिल में कहने लगा के ये क़िस्सा है? मैं छांट छांट कर ऐसे ऐसे क़बीलों का नाम ले रहा हूँ। के जिनकी इज़्ज़त फख्र, शौहरत तमाम अरब में ज़र्ब-उल-मिस्ल है। और ये नो उम्र लड़की उसके हिज्जो के अश्आर पढ़ देती है। क्या इस खानदान के लोगों ने उसको बचपन ही से क़बायल अरब की हिजोया अश्आर याद करा दिए हैं। क्या उसके यहाँ इसी की तालीम दी जाती है। और अगर ये नहीं तो आख़िर वो कौन ज़ालिम था। जिसने इस बच्ची को इस क़िस्म के अश्आर याद कराये? इस बच्ची का वक़्त तो ऐसा था के उसको उम्दा उम्दा अख़लाक़ी अश्आर सिखाए जाते। तहज़ीब की देवी बनाया जाता। वो वो तरीके सिखाए जाते के जिनसे

ये ख़ाविंद के दिल पर क़ाबू पा सकती। ये भी कोई तालीम है। के इस क़िस्म के अश्आर से उसके पाक और मासूम ज़ेहन को आलूदा किया गया है। मगर कहीं ऐसा तो नहीं के ये लड़की खुद ब खुद इन अश्आर को तसनीफ़ कर लेती हो। अगर ऐसा है तब तो ये लड़की ग़ज़ब की ज़हीन और ज़की होगी। लेकिन इसकी उम्र तो इस क़ाबिल मालूम नहीं होती मुझ को इस उधैड़ बुन में बहुत देर हो गई। ये लड़की अपने दिल में खयाल करती होगी के मैं इसी मज़मूम क़बीले का हूँ। मेरा इस क़द्र तवील सकूत अपनी ज़िल्लत के इक़रार का काम देगा। मुझ को जल्द इंकार करना चाहिए। ये खयाल आते ही बोला। बहन! तुम ने अश्आर तो निहायत ही फसीह और बलीग़ याद कर रखे हैं। मगर हक़ीक़त ये है के मैं भी तुम्हारा इम्तिहान ही कर रहा था। के तुम को क़बायल अरब की तहक़ीक़ है। या और लोगों की तरह सिर्फ ज़ाहिरी शौहरत पर ही इक्तिफा कर लिया है। सो बहम्दुलिल्लाह! तुम को क़बायल अरब की असली कैफियत का सही इल्म है। और उनके मुतअल्लिक़ अश्आर खूब याद हैं। तुम चूंके खुद समझदार हो। इसलिए तुम से ये उम्मीद बेजा नहीं के तुम खुद मेरे अंदाज़ से समझ चुकी हो के मैंने अपने क़बीले का सही नाम ना बता कर अपना नसब छुपाने की जो काशिश की थी इससे यही मक़्सूद था के तुम्हारी तहक़ीक़ात का हाल मालूम कर सकूं। अब सुनो! मैं क़बीला बनी अबस का एक शख़्स हूँ।

लड़की ने इस तमाम तक़रीर को बग़ौर सुना और यही नहीं के ज़बान से उसकी तकज़ीब या तसदीक़ नहीं की बल्के अपने चहरे से भी ऐसे आसार ज़ाहिर ना होने दिए। के मेहमान की मुतजस्सुस नज़रें उसको मालूम कर सकतीं के लड़की ने मेरी इस राम कहानी को सच्चा समझा या झूट। और तक़रीर ख़त्म हो चुकी तो अपने पहले से मुसतफ़सराना अंदाज़ पर पूछा। के जब आप बनी अबस के क़बीले में से हैं। तो ग़ालिबन ये मालूम होगा के ये शैर किस का है और शायर ने उसको क्यों नज़्म किया था?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

जब क़बीला बनी अबस की किसी औरत के कोई बच्चा पैदा हो तो उसको खुशखबरी दे दो। के उस बच्चे के पैदा होने से उसकी दनाईय्यत में और इज़ाफा हो गया।

मेहमान ने झूट बोलने के जितने तरीक़े थे। सब ख़त्म कर लिए थे और बात बाक़ी ना थी के उसको कहता। हया व नदामत की वजह से ज़मीन में

गड़ा जाता था। दिल चाहता था के इस बच्ची के सामने से उठ कर चल दे मगर जानता था के उसमें रही सही ज़िल्लत होगी। घबरा कर कहने लगा के बहन! मैंने क़बीला बनी अबस का नाम नहीं लिया था। बनी फज़ारह कहा था। मैं तो क़बीला-ए-बनी फज़ारह का एक शख़्स हूँ। क़बीला-ए-बनी अबस तो मुझ से कोसों दूर है।

लड़की:- आपने बजा फ़रमाया। मुमकिन है के मुझ से सुनने में या आप से कहने में ग़लती हुई हो। ये क़बीला-ए-बनी फज़ारा वही क़बीला तो है के जिसकी निसबत किसी शायर ने ये शैर कहा है। आपको तो मालूम होगा के किस का है।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

तर्जुमा:- अगर तुम क़बीला-ए-बनी फज़ारह के किसी शख़्स के पास जाओ तो वहाँ जाकर अपनी ऊँटनी (के खोए जाने पर) मुतमईन ना हो जाना और उसको रस्सियों से खूब बाँध देना। (वरना चूंके बखिलाफ आदत अरब क़बीला-ए-बनी फज़ारह के शख़्स मेहमानों के साथ ग़द्दारी करते हैं। और उनके मालों को खुर्दबुर्द कर जावेंगे। और तुम हाथ मलते रह जाओगे।)

शैर क्या था के मेहमान के खुरमने अक़्ल के लिए बर्क था। होश व हवास जाते रहे। हैरत से लड़की का मुंह तकने लगा। दिल ही दिल में कहने लगा के लड़की तू हर्फों की बनी हुई मालूम होती है। किस ढिटाई से पूछती है के ये शैर किसका है। हालाँके मक़्सूद मुझ को ज़लील करना है। और ज़रा उसके चहरे पर नज़र डालो तो मुसकुराहट के आसार भी मालूम नहीं होते। मालूम है के वाक़ई उसको दरयाफ़्त ही करना मक़्सूद है। अच्छा इस मर्तबा मैं ऐसे क़बीले का नाम लूं के उसकी हिज्जू किसी शायर ने की ही ना हो। अब झूट बोला है। तो इस लड़की को भी आजिज़ कर देना चाहिए। ये सोच कर बोला। के नहीं खुदा की क़सम! मैं क़बीला बनी फज़ारह का नहीं हूँ।

लड़की:- बजा फ़रमाया। तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमान:- बहन! मैं कबीला बजीला का एक शख़्स हूँ।

लड़की:- आपको मालूम है के ये शैर किस के हैं?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

तर्जुमा:- जब (हमारे सामने) क़बीला बजीला (की जमात) आई तो हमने उसके हाल हाल की तफ़्तीश की ताके वो बतला दे के उसके मुसतक़िर ने उसको किस जगह से क़रीब किया है। तो जब हम ने तफ़्तीश की तो क़बीला बजीला की जमात (ये भी) ना बता सकी के उसका नसब क़हतान

(सरदार क़बीला का नाम है) से मिलता जुलता है या नज़ार। (दूसरे क़बीले के सरदार का नाम है) तो क़बीला बजीला की जमात दरमियान ही में रह गई (ना इधर ना उधर) और वो (अपनी जमात से इस तरह) निकाल दी गई। जिस तरह लगाम उतार कर फैंक दी जाती है।

मेहमानः- (दिल में) खुदाया ये क्या मुसीबत है के अरब का कोई क़बीला इस खुर्द साला बच्ची की ज़बान ज़ोरी से बचा हुआ नहीं है। मुझ को क़बीला का नाम सोचने में देर लगती है और उस को बे मुहाबा शैर पढ़ देने में देर नहीं होती। (लड़की से) खिलाक़ आलिम की क़सम! मैं कबीला बजीला में से नहीं हूँ।

लड़कीः- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमानः- मैं क़बीला बनू नमीर का एक शख़्स हूँ।

लड़कीः- ग़ालिबन ये शैर तो आपने सुने होंगें आपको मालूम है के शैर किस के हैं।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

तजुर्माः- क़बीला बनी नमीर के किसी शख़्स से मुख़ातिब होकर कहती है तू अपनी नज़र नीची कर (यानी ज़िल्लत के साथ चल) इस वास्ते के तू क़बीला बनी नमीर का है। (क़बीला बनी नमीर बवजह ज़िल्लत के नज़र उठा कर चल नहीं सकता है) पस ना तो (बवजह दनायईय्यत के) तो क़बीला कअब तक पहुँच सका। और ना क़बीला कलाब तक। और अगर बनी नमीर के सरयन लोहार की भट्टी के छूटे हुए ज़ंग पर रख दिए जावें तो बवजह हरारत के वो ज़ंग पिघल जावे (रसयन की शिद्दत हरारत खून की खराबी पर दलालत करती है।)

मेहमान के अब होशो हवास मख़्तल हो चुके थे। अक़्ल काम ना करती थी झूट बोलते बोलते और उसके असबाब बयान करते करते वो आजिज़ आ गया था। ये भी समझ चुका था के लड़की मेरी तकज़ीब के दरपे नहीं है। मुमकिन है के दिल में मेरे कहे हुए की तसदीक़ ना करती होती। मगर ज़बान से तकज़ीब भी नहीं करती है। इसलिए बग़ैर किसी तमहीद के साफ इंकार कर गया और निहायत ढिटाई और जुर्रात से कहने लगा। खुदा की कसम! मुझ से और क़बीला बनू नमीर से कोई ताल्लुक़ नहीं। ना मैं उनके सिलसिले नसब में दाखिल हूँ।

लड़कीः- अगर आप क़बीला बनू नमीर में से नहीं हैं तो आख़िर किस क़बीले में से हैं?

मेहमानः- (दिल में) मैंने मौअज़्ज़िज़ मौअज़्ज़िज़ क़बायल अरब के नाम लिए। मगर चूंके उनको छोटे बड़े लायक़ नालायक़, हर तरह शख़्सों से साबक़ा पड़ता है। इसलिए उनको अगर सो अच्छा कहते हैं तो दो चार बुरा भी कहते हैं। इस मर्तबा ऐसा नामा बताना चाहिए के वो ऐसा बदत्तर और कमीना फिर्क़ा हो के हिज्जो करना तो दरकिनार कोई उसको मुंह भी ना लगाता हो। (थोड़ी देर दूर सोच कर दिल ही दिल में) बस! ठीक है। यही कह दूं के मैं क़बीला बनू बाहला में से हूँ ये तो ऐसा कमीना फिर्क़ा है के इसी की निस्बमत किसी दिल जले ने कहा है के

मेहमान के अश्आर का तर्जुमा

तर्जुमाः- (बनू बाहला कमीने पन में इस दर्जे को पहुँच गए हैं के) अगर किसी कुत्ते को बाहली कहकर पुकारा जाए तो वो भी उस पर वावेला मचाने लगे के मुझ को गाली दी गई।

लेकिन अगर यही शैर उसको भी याद हो तो क्या होगा? नहीं नहीं। किसी ने तफरीह तबअे के तौर पर उसको मौअज़्ज़िज़ क़बायल की हिज्जो के अश्आर याद करा दिए हैं। इस क़बीले बने बाहला की उसको ख़बर भी ना होगी। और अगर बिलफर्ज़ उसको खबर हो भी तो फिर मैं इंकार कर दूंगा। लड़की तो मेरे इस इंकार पर कुछ कहती नहीं जब ये खयालात दिल में आ चुके और क़ल्ब ने यही फैसला किया तो कहने लगा के वल्लाह! मैं बनू बाहला में से हूँ।

लड़कीः- इस मर्तबा तो आप बहुत देर तक ख़ामोश रहे। मैं समझी के शायद मेरी समअे खराशी बार ख़ातिर गुज़ारी। इस मर्तबा ग़ालिबन आपने सोच कर बताया है और ठीक बताया होगा।

मेहमानः- (ये समझ कर के लड़की इस हिज्जो में कोई शैर नहीं पढ़ सकी। दफअे अलवक़्ती कर रही है) हाँ हाँ! मेरी बहन मैं फीअलहक़ीक़त बनू बाहला में से हूँ इससे कम्बख़्त नाम ही याद ना आता था। बमुश्किल तमाम नाम याद आया है।

लड़कीः- बजा फ़रमाया। आप जानते हैं के ये शैर किस के हैं।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

जिस वक़्त असबाब शरफ़ व फख़्र की तरफ़ शरमाऐ क़ौम तेज़ी के साथ चलते हैं तो (उनके हमराह होना या पीछे चलना तो दरकिनार बाहला का शख़्स मजमअे से भी दूर हो जाता है।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

और जब किसी बाहली शख़्स की बीबी कोई लड़का जनती है तो नालायक़ों और नाकिसों के अदद में इज़ाफा हो जाता है। और अगर (खुदानख्वास्ता) तख़्त खिलाफत पर कोई बाहली शख़्स क़ाबिज़ हो जाए। तब भी (बावजूद इस रफ़अत क़द्र के) शरफ़ा क़ौम का मुक़ाबला बुलंदी मर्तबा में ना कर सके और बाहली की आबरू अगरचै वो इस पर बड़ी सख़्त निगहबानी करे मगर इस रूमाल की तरह है, जिससे खाना खाने की बाद हाथ मुंह पोंछा जाता है। (यानी ज़लील है)।

मेहमान इधर तो हिज्जो के अश्आर और वो भी एक खुर्द साला लड़की की ज़बान से सुनकर नदामत की वजह से ज़मीन में गढ़ा जाता था। इधर ये खयाल के लड़की अपने दिल में ज़रूर झूटा खयाल करती होगी, उसके सर को ऊपर ना उठने देता था। इस पर ये खयाल उसके लिए और भी सोहान रूह हो रहा था के अगर कोई तीसरा शख़्स किसी जगह छुप कर सुन रहा हो के मैं अपने नसब के सिलसिले में इस क़द्र क़बीलों को दाखिल कर चुका हूं और क़समें खा खा कर इंकार कर देता हूँ तो वो यक़ीनन मुझ को हरामी खयाल करेगा। और बिलफर्ज़ कोई शख़्स हम दोनों की ये बातें इस वक़्त ना सुनता हो। मगर जब ये लड़की घर में जाकर इस का ज़िक्र करेगी तो जो सुनेगा वो हरामी ही कहेगा। उस वक़्त मैं अपने मेज़बानों की नज़र में कैसा ख़्वार और ज़लील होंगा। और उसको भी जाने दो ये लड़की भी किसी से ना कहेगी। मगर डूब मरने की बात तो ये है के ये खुद अपने दिल में मेरी निसबत क्या खयाल क़ायम कर चुकी होगी। लेकिन ये सब कुछ सही। उसके सिवा और चारा भी तो नहीं है के मैं इस नसब का इंकार कर दूं। ग़ैरत की वजह से आवाज़ तो निकल ना सकी बहुत दबी हुई आवाज़ से कहा खुदा शाहिद है के मैं क़बीला बाहला से नहीं हूँ।

लड़की:- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमान:- मैं क़बीला सक़ीफ का शख़्स हूँ।

लड़की:- आपको मालूम है के ये शैर किसके हैं?।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

जिस क़द्र क़बायल अरब का नसब हम को मालूम है उनमें सबसे ज़्यादा गुमराह क़बीला सक़ीफ है। इस वास्ते के उनका कोई बाप ही सिवाए गुमराही के नहीं है। अगर उनका नसब किसी से मिलाया जावे या ये खुद नसब में अपना ताल्लुक़ किसी से ज़ाहिर करें। तो यक़ीनन ये मुहाल है (इस वास्ते के ये लोग बे नसब हैं) ये लोग पाखानों में रहने वाले सुवर हैं तो तुम इनसे खूब

अच्छी तरह से क़त्लो क़िताल करो क्योंके उनके खून तुम्हारे लिए हलाल है।

मेहमान इन अश्आर को सुनकर दिल में कांप उठा और घबरा कर कहने लगा के "नहीं नहीं" खुदा की क़सम! मैं क़बीला सक़ीफ़ में से नहीं हूँ।

लड़की:- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमान:- मैं क़बीले सनीह का एक शख़्स हूँ।

लड़की:- आपको मालूम है के ये मिसरआ किस का है?

लड़की के मिस्रे का तर्जुमा

"अल्लाह तआला क़बीला सनीह के इजतमे को मुतफर्रिक़ कर दे।"

मेहमान जिस हालत में मुबतला था। उसको वही खूब जान सकता था। लड़की कांटों के झाड़ की तरह उसको चिमटी हुई थी। और वो किसी तरह राह गुज़ीर ना पाता था। मजबूर होकर फिर उसने वही अपना पुराना राग अलापा और कहने लगा। अपनी जान अज़ीज़ की क़सम! मैं तो क़बीला सनीह से नहीं हूँ।

लड़की:- तो फिर आप किस क़बीले के सिलसिले नसब में दाखिल हैं?

मेहमान:- सच पूछो तो मैं क़बीला खज़ाआ में से हूँ।

लड़की:- तब तो आप मेरी इस तमन्ना को पूरा कर सकेंगे के मैं इन शैरों के शायर का नाम मालूम करती। क्या आप बता देंगे।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

अगर क़बीला ख़ज़ाआ किसी मजलिस में शेखी बग़ारना चाहें तो सिर्फ उनकी शेखी शराब के पीने पर मुनहसिर होती है। उन्होंने अज़राहे जहालत खाने खुदा को शराब की एक मश्क के अवज़ में बेच डाला। बदकारी पर फख्र करने वाले ये लोग बहुत बुरे हैं"।

मेहमान की ज़बान से क़बीला खज़ाआ का नाम निकलने को निकल गया। मगर लड़की ने अश्आर में इस क़बीले के ऐसे ऐब को ज़ाहिर किया के मेहमान अज़ सरतापा बहर नदामत में ग़र्क हो गया। खुद ही अपने आपको मलामत करता था। के आज मेरी हालत क्या हो गई है। के जिस क़बीले का नाम लेता हूँ वो इस क़बीले से दनाईय्यत में बदर्जहा बढ़ा हुआ होता हे। जिसका नाम मैंने पहले लिया है। क्या अरब के ग़ैर महसूर क़बायल में से कोइ ऐसा क़बीला इस वक़्त मुझ को याद ना आवेगा। जिसने उमूर शनीया का इर्तिकाब ना किया हो और उसकी हिज्जो ना की गई हो? आज मेरे हाफ्ज़े को क्या हो गया। बिलआख़िर सोचते सोचते ये कहा के मैं क़बीला बनी यश्कर से हूँ।

लड़की ने अब इस तरफ़ इलतिफात करना भी छोड़ दिया था के मैंने जो कुछ कहा। सच है या झूट। पहले क्या कहा था। अब क्या कहता है? उसके चेहरे के अंदाज़ से ये बात मालूम होती थी। के वो सिर्फ मेहमान से क़बीले का नाम सुनना चाहती है। और बस! इधर मेहमान ने ये कहकर के मैं फलाँ क़बीले का हूँ। अपनी बात ख़त्म की के लड़की ने अश्आर पढ़ना शुरू कर दिए। और अगरचै मक़्सूद उसका बजुज़ उसके और कुछ ना होता था के मेहमान ने जिस क़बीले का नाम लिया है उसकी हिज्जो करे। लेकिन ज़ाहिर ये करती थी के वो इस शैर को नज़्म करने वाले का नाम मालूम करना चाहती है। मेहमान के इस कलाम को सुनकर फौरन बोली! के आप को मालूम है के ये शैर किसके हैं?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

क़बीला बनी यश्कर (दनाईय्यत और कमीना पन में इस दर्जे को पहुँच गया है के) अगर अपनी तबीयत को वफाऐ अहद पर मजबूर करना चाहे तो) वफा करने पर क़ादिर नहीं। और (चूंके ऐब करने को हुनर चाहे) अगर वो बेवफाई करना चाहे तो बेवफाई करना भी नहीं जानता है। क़बीला यश्कर ऐसा क़बीला है के उसकी ज़िन्दगी सिर्फ रहने में ख़त्म होती है ये लोग खुद ज़लील और उनकी जड़ बुनियाद भी ज़लील है।

मेहमानः- (बहुत जल्दी से) खुदा की क़सम! मैं क़बीला यश्कर से नहीं हूँ।

लड़कीः- तो फिर आप किस क़बीले से हैं?

मेहमानः- मैं बनी उमय्या के क़बीले में से हूँ।

लड़कीः- तो ग़ालिबन आप इस शख़्स को जानते होंगे जिसके ये शैर हैं?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

क़बीला बनू उमय्या की शरफ़ और इज़्ज़त की बुनियादें मुतज़लज़िल हो गईं इसलिए आम आदमियों में उनका नैस्त व नाबूद हो जाना एक मामूली बात हो गई और गुज़िश्ता ज़माने में बनू उमय्या की सतवत उनको खुदा के मुक़ाबले में भी बेबाक बनाए हुए थे। तो ना आले हर्ब ने खुदा की इताअत की ना उनके मर्दों ने खुदा का ख़ौफ किया।

लड़की ने तो इस पर सवाल करना भी छोड़ दिया था। के उसके क़ौल में तदाफअे हो रहा है। कभी किस क़बीले की तरफ़। हाँ! मेहमान अव्वल अव्वल बहुत परेशान हुआ था। मगर अब इस क़द्र झूट बोल लेने के बाद उसको भी खुद अपने मुंह अपने क़ौल को रद करते हुए शर्म मालूम ना होती

थी। इसलिए उसने इन शैरों को सुनते हुए फौरन कहा। के खुदा की क़सम! मैं बनू उमय्या के क़बीले से नहीं हूँ। बनू उमय्या फीलवाक़ै ज़लील है।

लड़की:- तो फिर किस क़बीले के हैं?

मेहमान:- मैं क़बीला अंज़ा का एक शख़्स हूँ।

लड़की:- आप इन शैरों के कहने वाले जानते हैं?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

अगरचे ज़माना की नज़रें हमारे ऊपर बुरी बुरी पड़ने लगी थीं। मगर मुझ को ये खयाल था के एक ऐसा वक़्त भी आवेगा के क़बीले अंज़ा भी मेरी ग़ीबत करने पर आमादा हो जाएगा। मुझ को क़बीले वायल से ना समझना। अगर मैं उन गुमराहों से ज़रा भी ख़ौफ करूं। ये तो ऐसे बेक़द्र हैं जैसे के किसी के पास से पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े मफ़्क़ूद हो जावें!

मेहमान:- खुदा की क़सम! मैं क़बीला अंज़ा का भी नहीं।

लड़की तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमान:- मैं क़बीला कन्दा का एक शख़्स हूँ।

लड़की:- तो क्या आपको मालूम है के ये शैर किसके हैं?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

अगर क़बीला कंदा का कोई खूबसूरत औरतों की सी चोटी पर फख्र करे तो क़बीला कंदा को तुम ज़लील पेशों के लिए रहने दो। इस वास्ते के उसका आला दर्जा का फख्र लोगों को तकालीफ पहुँचाना है।

मेहमान:- खुदा की क़सम! मैं क़बीला कंदा का भी नहीं हूँ। क़बीला कन्दा फी अलहक़ीकत ज़दील कामों में मसरूफ रहता था।

लड़की:- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमान:- मैं क़बीले बनी असद का एक शख़्स हूँ।

लड़की:- तो क्या आप जानते हैं के ये शैर किसके हैं?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

जब क़बीला बनी असद की कोई औरत सने शऊर को पहुँचती तो जल्द उसका निकाह करा दे। लेकिन इस क़बीले में ज़िना की ऐसी कबीह आदत है के बावजूद निकाह कर देने के भी तो इस के ज़िना से मुतमईन ना होना और अगर क़बीला बनी असद की कोई लड़की अपने हाथों मेहंदी लगावे। और अब तक वो ज़िना में मुलव्विस ना हुई हो तो उसके माँ बाप उसको अपना शरीक कर लेते हैं। यानी उसका बाप भी उससे ज़िना कर लेता है।

मेहमान:- खुदा की क़सम! मैं क़बीला बनी असद में से भी नहीं हूँ। इस

क़बीले में बेशक ज़िना की आदत आम थी।

लड़की:- तो फिर किस क़बीले के हैं?

मेहमान:- मैं क़बीला हमदान का एक शख़्स हूँ।

लड़की:- तो क्या आपको मालूम है के ये अश्आर किस शख़्स के हैं?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

क़बीला हमदान की लड़ाई की चक्की मुक़ातलीन के सरों पर किसी दिन चले तो तुम देखोगे के वो निहायत तेज़ी से लड़ाई से भागे हुए जा रहे हैं।

मेहमान:- सच है क़बीला हमदान अक्सर लड़ाईयों में से भागा करते थे। शुजाअत की उनको हवा भी ना लगी थी। लेकिन खुदा की क़सम! मैं क़बीला हमदान में से नहीं हूँ।

लड़की:- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमान:- मैं क़बीले नहद का एक शख़्स हूँ।

लड़की:- तो क्या आपको मालूम है के ये शैर किस के हैं?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

क़बीला नहद के अफ़राद कमीने साबित होते हैं, जब के उनके पास कोई मेहमान आ जाता है। उनके चहरे रफ़त और क़ारे की तरह काले हैं और जो शख़्स मुसीबत के वक़्त उनसे फ़रयाद करे वो ऐसा नादान है जैसे के कोई गर्म ज़मीन से बच कर आग में जा कूदे।

ये अश्आर सुनते ही मेहमान ने कहा। ये अश्आर बिलकुल सच्चे हैं। मगर खुदा की क़सम में तो क़बीला नहद से नहीं हूँ।

लड़की:- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमान:- मैं क़बीला क़ज़ा का एक शख़्स हूँ।

लड़की:- क्या जानते हैं के ये अश्आर किसके हैं?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

क़बीला क़ज़ाआ के किसी शख़्स को अपने कुंबे पर फख्र नहीं करना चाहिए इस वास्ते के ना वो यमन के ख़ालिस अलनसब लोगों में से है ना मुज़िर के शरीफों में से। ये लोग दोग़ले हैं, ना क़ोहतान उनका बाप है और ना नज़ार, इसलिए उनको जहन्नुम में झोंक दो।

मेहमान:- हाँ हाँ! क़बीला क़ज़ाआ का नसब क़ाबिले ऐतबार ना था मगर खुदा की क़सम मैं तो क़बीला क़ज़ाआ से नहीं हूँ।

लड़की:- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमान:- मैं क़बीला बनी शीबान में से हूँ।

लड़की:- तो क्या आपको मालूम है के ये अश्आर किसके हैं?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

बनी शीबान का क़बीला बड़ी जमात वाला है। मगर उनमें से हर एक अव्वल नम्बर का अपनी अपनी असल के ऐतबार से कमीना और पाजी है। ये इस बचे हुए पानी को पिया करते हैं जो आम लोगो के पीने से बच रहता है।

फिज़ू मा जिसको हमने बचे हुए पानी से ताबीर किया है। एक ख़ास तरीके से हासिल शुदा पानी को कहा जाता है। यानी जब चश्मों और झीलों पर अहले अरब पहुँच जाते थे तो अपनी मश्कों और पखालों में पानी साफ और उम्दा भर लेने के लिए क़ाफले के शुरफ़ा और ज़ी इज़्ज़त लोग जाते थे। और जब वो अपने लिए पानी काफी जमा कर लेते थे तो उसके बाद क़ाफले घटिया और अदना दर्जे के लोग पानी पहुँचते थे। उसके बाद जब के मर्दों से चश्मा खाली हो चुकता था। तो औरतें जाती थीं। और इतमीनान से नहाना। कपड़ों का धोना और इसी क़िस्म की ज़रूरियात को पूरा करना उनका काम होता था। जब ये अपनी ज़रूरियात से फारिग़ हो चुकती थीं। तो उनके बाद लोंडी। ग़ुलाम और ऐसे लोग के जिनकी कोई इज़्ज़त और वक़अत क़ाफले में ना होती थी पहुँचते थे। यही पानी फिज़ूल मा कहा जाता था और इसी को हासिल करने वाले ज़लील और अदना दर्जे के लोग कहे जाते थे।

ग़र्ज़ ये के इन अश्आरों को सुनकर मेहमान ने कहा। के बेशक क़बीला शीबान अगरचे बड़े जथ्थे वाला है। लेकिन उसने मुल्क अरब में किसी क़िस्म की कोई इज़्ज़त नहीं पैदा की है। मगर खुदा की क़सम मैं तो क़बीला शीबान से हूँ ही नहीं।

लड़की:- तो फिर आप किस क़बीले के हैं।

मेहमान:- मैं क़बीला तनूख़ का हूँ।

लड़की क्या आपको मालूम है के ये अश्आर किसके हैं?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

जब क़बीला तनूख़ किसी क़बीले को लूटने के इरादे से किसी जगह का सफर करता है तो वो अपनी इज़्ज़त और शरफ़ और अपने कुंबे और पड़ोसियों की शौहरत को खो बैठता है।

मेहमान:- सच है क़बीला तनूख़ ऐसा ही बुज़दिल है। मगर खुदा की क़सम मैं तो क़बीला तनूख में से नहीं हूँ।

लड़की:- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमानः- मैं क़बीले ज़हल का हूँ।

लड़कीः- तो क्या आपको मालूम है के ये शैर किसका है।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

खुदा वंद आलम क़बीला ज़हल को हमेशा बदबख़्त रखे। जिस क़द्र लोग आसमान के नीचे बस्ते हैं। ये लोग उन सब से बदत्तर हैं।

मेहमानः- जिस शख़्स ने ये शैर कहा। बिलकुल सच कहा। बेशक क़बीला ज़हल ऐसा ही बदनाम है। लेकिन खुदा की क़सम मैं क़बीला ज़हल से नहीं हूँ।

लड़कीः- तो फिर किस क़बीले के हैं।

मेहमानः- मैं क़बीला मज़निया का हूँ।

लड़कीः- क्या आपको मालूम है के ये शैर किसका है?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

क़बीला मज़निया एक ऐसा ज़लील क़बीला है जिससे ना कमर की उम्मीद की जा सकती है ना दी की।

मेहमानः- सच है ये क़बीला मज़निया ऐसा ही बेख़बर बद दीन है। मगर मैं खुदा की क़सम इस क़बीले का नहीं हूँ।

लड़कीः- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमानः- मैं क़बीला नखअे का एक शख़्स हूँ।

लड़कीः- तो क्या आप जानते हैं के ये शैर किसके हैं।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

क़बीला नखअे जो अव्वल नम्बर का कमीना है। अगर उसके सारे अफ़्राद किसी पहाड़ की तरफ़ दौड़ें तो ये लोग तादाद में इस क़द्र हैं के उनकी कसरत की वजह से वो भी हिलने लगें। लेकिन उनसे किसी को ज़रा सा भी नफ़ा नहीं पहुँचता है। और ना खालिस शुरफ़ा में उनका शुमार है।

मेहमानः- बिलकुल दुरूस्त! मगर खुदा की क़सम मैं इस क़बीले का नहीं हूँ।

लड़कीः- तो फिर आप किस क़बीले के हैं।

मेहमानः- मैं क़बीले तेय का एक शख़्स हूँ।

लड़कीः- आपको मालूम है के ये शैर किस का है?

वलो असफ़ूरन यमद जनाहा

अला दूर तय कलहा ला सतज़लत

अगर छोटी सी चुड़िया अपने सर सारे क़बीले तय पर फैला दे तो

(ब)वजह अपनी हिक़ारत और कमी तादाद के सारा क़बीला उसके परों के अन्दर आ जावे।

मेहमानः- दुरूस्त है मगर खुदा की क़सम मैं क़बीला तय से नहीं हूँ।

लड़कीः- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमानः- मैं क़बीला अक का एक शख़्स हूँ।

लड़कीः- क्या आपको मालूम है के ये शैर किसका है?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

क़बीला अक के तमाम आदमी कोढ़ी और खिदमत गार हैं। ये लोग (म)लामत से कभी जुदा नहीं हो सकते हैं।

अब मेहमान क़बीलों का नाम लेते लेते घबरा गया था। और वो सोच सोच कर क़बायल के नाम बताने लगा था। और लड़की उसके मुंह को इस तरह ग़ौर से और मतानत के साथ तक रही थी। गोया कोई शिकारी जानवर अपने शिकार की तरफ़ बग़ौर देखता है। मेहमान बिलकुल सटपटा गया था। और दुआएँ माँगता था के लड़की की ज़बान से इस सिलसिले कलाम में कोई लफ़्ज़ ऐसा भी निकल जावे जिसको मैं अपनी तोहीन क़रार देकर गुस्सा ज़ाहिर करने के बाद बात करना तर्क कर दूं। काश ये मुझ को झूटा ही कह देती। तो मैं उसी पर ग़ज़बनाक हो जाता। मगर हाँ! उसने अव्वल अव्वल मुझ को झूटा कहा तो था तो क्या उसी पर गुस्सा करूं। और इस ज़बान ज़ोर लड़की को धतकारूं? "नहीं नहीं हर गिज़ नहीं" अव्वल तो उसने मुझ को सराहतन झूटा कहा नहीं था। और अगर बिलफर्ज़ उसने सराहत के साथ ही झूटा कहा भी था तो वो बात तो बहुत देर हुई के गुज़र चुकी। अब इस पर गुस्सा करने का क्या मौक़ा। ये तो मेरे पीछे पंजा झाड़ कर पड़ गई है। इस ग़ज़ब को तो देखो के मुझ को क़बीले के नाम सोचने में देर लगती है। मगर उसको शैर पढ़ते हुए देर नहीं लगती!

इलाहल आलमीन! मैं अपना पीछा इससे किस तरह छुड़ाऊँ? लेकिन मैं तो दूसरी ही फिक्र में पड़ गया। वो लड़की मेरे सकूत को हिक़ारत आमेज़ तबस्सुम के साथ देख रही थी। मुझ को जल्द किसी क़बीले का नाम लेना चाहिए। (कुछ सोच कर) खुदा की क़सम! मैं क़बीला अक का नहीं हूँ।

लड़कीः- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमानः- मैं क़बीला लख़्म का एक शख़्स हूँ।

लड़कीः- तो क्या आपको मालूम है के ये शैर किसका है?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

जब कोई जमात अपने क़दीमी फज़्ल की वजह से अशरफ़ और ज़ी इज़्ज़त समझी जाती है तो उस वक़्त यही अता करम का फख्र क़बीला लख़्म के हर एक शख़्स से दूर रहता है।

मेहमानः- सच है! मगर मैं खुदा की क़सम इस क़बीले का नहीं हूँ।

लड़कीः- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमानः- मैं क़बीले जज़ाम का एक शख़्स हूँ।

लड़कीः- क्या आप जानते हैं के ये शैर किसका है?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

अगर इस ग़र्ज़ से के शराब के नशे में दाद व दहश खूब होगी, दौरा शराब चले तो क़बीले जज़ाम की शिरकत इसमें भी नहीं हो सकती है।

मेहमानः- सच है! मगर खुदा की क़सम मैं तो क़बीला जज़ाम में से नहीं हूँ।

लड़कीः- तो फिर आप किस क़बीले के हैं।

मेहमानः- मैं क़बीले कल्ब का एक फर्द हूँ।

लड़कीः- क्या आपको मालूम है के ये शैर किसका है?

फला तक़्रंबिन कब्बा वला बाब दारहा

वला यतमईन सारीरी ज़ऊ नारहा

क़बीला कल्ब के बल्के उसके दरवाज़े के क़रीब भी तुम हर गिज़ ना जाना और रात को वो मुसाफिर जिसने उसकी आग की रोशनी देख ली हो उसको हर गिज़ उसकी उम्मीद ना करनी चाहिए के वो क़बीले कल्ब का मेहमान बन कर आराम से रह सकेगा।"

मेहमानः- खुदा की क़सम! मैं क़बीले कल्ब से नहीं हूँ।

लड़कीः- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमानः- मैं क़बीले बिलक़ीन का एक शख़्स हूँ।

लड़कीः- तो क्या आप जानते हैं के ये शैर किसका है?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

अगर तुम दनानियत के मुतअल्लिक़ तहक़ीक़ करो पूछो के उसका हैड कवारटर कहाँ है तो तुम देखोगे के वो क़बीला बिलक़ीन के अव्वल व आख़िर अहाता किए हुए है।

मेहमानः- बिलकुल ठीक है। मगर खुदा की क़सम मैं तो क़बीला बिलक़ीन से नहीं हूँ।

लड़कीः- तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमानः– मैं क़बीला बनी अलहारिस बिन कअब का एक शख़्स हूँ।

लड़कीः– क्या आप जानते हैं के ये शैर किसके हैं?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

ऐ क़बीला हारिस बिन कअब क्या तुम्हारी अक़लें तुम को तुम्हारी ईज़ा रसानी से नहीं रोकेंगी और तुम तो बिलकुल खोखली हड्डी की तरह ख़ैर से खाली हो। इन लोगों में बदन की लम्बाई और चौड़ाई का ऐब नहीं। इस वास्ते के उनके जिस्म खच्चरों से हैं मगर उनकी अक़लें चुड़ियों की सी हैं।

मेहमानः– इसमें तो शक नहीं के क़बीले हारिस बिन कअब हक़ीक़त में अक़्ल से ख़ारिज है। मगर खुदा की क़सम मैं तो क़बीले हारिस बिन कअब से नहीं हूँ।

लड़कीः– तो फिर आप किस क़बीले के हैं?

मेहमानः– मैं क़बीला बनी सलीम से हूँ।

लड़कीः– क्या आपको मालूम है के ये शैर किसका है?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

अगर तुम क़बीला सलीम के पास किसी मुसीबत से घबरा कर पहुँचो तो जिस तरह गए थे इसी तरह ना काम और ज़लील व शर्मिंदा होकर वापस होना नसीब हो।

मेहमानः– हाँ हाँ! ये लोग ऐसे ही थे। हमीयत और ग़ैरत तो उनके पास भी होकर ना गुज़री थी। मगर मैं खुदा की क़सम क़बीला बनी सलीम से नहीं हूँ।

लड़कीः– तो फिर आप किस क़बीले के हैं।

अब मेहमान मुतरद्दुद था के क्या करे। किसी क़बीले का नाम उसको याद ना आता था। आख़िर को मजबूर होकर कहने लगा के दरअसल बात ये है के मुझ को उसका इम्तिहान करना था के तुम को किस क़द्र शैर याद हैं। और किस क़द्र क़बायल से वाक़िफ़ हो। मैं फी अल हक़ीक़त अर्बी नस्ल हूँ ही नहीं। बल्के मैं तो एक फारसी नसाद शख़्स हूँ।

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

सुन लो! ऐसे मोहताजों से जो अपनी मुरादों की कामयाबी के कोशाँ हैं कह दो के इन कमीने मुल्क फारस के बाशिन्दों के क़रीब भी ना जावें इस वास्ते के वो अपने (मोहताजीन तो दर किनार) अक़ारिब और अनसार को भी ख़बस बातिन की वजह से महरूम वापस कर देते हैं।

अब मेहमान बिलकुल ही तंग हो गया था। और दिल ही दिल में कह रहा था के इलाही क्या करूं इसकी ज़बान से तो फारसी लोग भी ना बचे।

अब किसका नाम ले दूं। अब तो किसी ऐसी जमात की तरफ़ अपने आपको मनसूब करना चाहिए के जिसके मुतअल्लिक़ किसी शायर का खयाल भी ना गया हो। ना उसकी हिज्जो हो सके। इसलिए सोच कर बोला। "खुदा की क़सम! मैं फारसी अलअसल नहीं हूँ, जिनको उनके मालिकों ने अज़राहे तरहम आज़ाद कर दिया था।"

लड़की:- आप सच फ़रमाते हैं। आपको मालूम है के ये शैर किस का है?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

अगर किसी शख़्स को अखलाक़ रज़ीला का मरकज़ मालूम करना हो तो वो जान ले के आज़ाद किए हुए गुलामों के पास अख़लाक़ रज़ीला का मुजस्सम तसवीर मौजूद है।

मेहमान इस शैर को सुनकर चोंक उठा और दिल ही दिल में कहने लगा के अब मौक़ा है के मैं गुस्सा करूं उसने निहायत सख़्स अलफाज़ इस शैर में बयान किए और गुस्सा करके अपनी तोहीन का एक शौर मचा दूं और नाराज़ होकर चल दूं। इस सूरत में बात दब जावेगी। और मैं अपनी इस ज़िल्लत का फी अलजुमला कुछ अवज़ कर सकूंगा। मगर इस क़द्र झूट बोलने और हर मर्तबा परवरदिगारे आलम की झूटी क़सम खाने के बाद इज़हारे ग़ज़ब पर क्या मुझ को शर्म ना आवेगी। मैं तो इस क़द्र झूट बोलते बोलते और झूटी क़समें खाते खाते इस दर्जे पर पहुँच गया हूँ के इस नो उम्र बच्ची के सामने सर ना उठा सकूं अब मैं किस मुंह से गुस्सा कर सकता हूँ।

और इससे ज़्यादा ये के गुस्सा किस बात पर करूं? ये ज़बान दराज़ लड़की मुझ से तो खिताब करती ही नहीं। शैर पढ़कर शायर का नाम पूछती है। अब इसमें गुस्से की क्या बात? इलाही मैं किस मुसीबत में फंस गया। यहाँ तक पहुँच कर फिर उसको कुछ याद आया। और जल्दी से कहने लगा के खुदा की क़सम मैं आज़ाद किए हुए गुलामों से भी नहीं हूँ। बल्के हज़रत नूह (अला नबिय्यीना व अलेह अस्सलातो वस्सलाम) की औलाद में से जो एक साहबज़ादे हाम थे। उनकी औलाद में से हूँ।

ये कहकर अपने दिल में बहुत खुश हुआ के इस मर्तबा ऐसी बात ज़बान से निकली के इस तरफ़ इस लड़की का तो क्या किसी का ज़हन भी नहीं पहुँच सकता है। मगर ये खयाल दिल में अच्छी तरह से गुज़रने भी ना पाया था के लड़की ने अपने इसी मामूली अंदाज़ में कहा। के आपको मालूम है के ये शैर किसका है?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

इब्ने अक़ू का तो ज़िक्र ही फिज़ूल है। हाम की तमाम औलाद में से किसी से रिश्ता क़ायम ना करो। इस वास्ते के खुदा की तमाम मख़लूक़ में वो बदतरीन मख़लूक़ हैं।

मेहमान की परेशानी की अब हद ना थी। जिस क़द्र सूरतें वो निजात की निकाल सकता था। वो सब ख़त्म हो चुकी थीं। चहरे पर हवाईयाँ उड़ने लगीं थीं। मगर क्या कर सकता था आख़िर को झुंझलाकर कहा "खुदा की क़सम! मैं औलादे हाम में से भी नहीं हूँ।"

लड़कीः- (मामूली अंदाज़ से) तो फिर आप किस की औलाद में से हैं?

मेहमानः- (करख़्त आवाज़ से झुंझलाकर) मैं शैतान की औलाद में से हूँ।

लड़कीः- (इसी मामूली लहजे से) शैतान और उसकी तमाम ज़ियारत और उसके तमाम आवान पर खुदा की लानत हो। आपको मालूम है के ये शैर किसका है?

लड़की के अश्आर का तर्जुमा

ऐ खुदा के बन्दो! सुन लो ये (इबलीस लईन) तो तुम्हारा दुश्मन है। और ये इस मलऊन दुश्मन खुदा के साहबज़ादे तशरीफ़ फ़रमा हैं।"

मेहमान बदहवास हो चुका था। होशो हवास बजा ना थे। घबरा कर उठा और लड़की के क़दमों पर गिर पड़ा और निहायत आजज़ी के साथ माफी की दरख़्वास्त की और वहाँ से जल्द अज़ जल्द रवाना हो गया।

(अदब-उल-अरब, सफ़ा 91)

सबक़:- ये हैरत नाक फी अलबदीहा शैर गोई अरब के सिवा किसी क़ौम में नहीं मिल सकती है। उसके साथ ही ये बात भी अजीब मालूम होती है। के जब मेज़बान औरत को मालूम हो गया के बावजूद हर तरह की ख़ातिर व मदारत के मेहमान ने हमारी हिज्जो में शैर नज़्म किया या कम अज़ कम ये के किसी दूसरे का शैर पढ़ा। उस वक़्त अरब के तर्ज़ के मवाफिक़ बहुत आसान था के वो अपनी ज़िल्लत की जानिब अपने क़बीले के मर्दों को मुतवज्जह करती और एक वाज़लाह की आवाज़ से सारे क़बीले को उसके खून का पियासा बना देती। लेकिन वो जानती थी के जिस पर एक मर्तबा मेहमान बना कर एहसान किया जा चुका है। उसको खुद अपने हाथों से ज़लील करना शर्मनाक है। अलावा उसके अहले अरब के अक्सर लोगों को इस तफ़्सील की तो ख़बर होती नहीं। के मेहमान ने ममनून एहसान होने के बावजूद मेज़बान की अहानत की थी। हाँ ये बात शौहरत पज़ीर होती के फलाँ

ख़ानदान के लोगों ने एक शख़्स को मेहमान बना कर क़त्ल कर दिया। और इस ग़द्दारी का धब्बा पुश्तहा पुश्त तक लगता। गोया मतलब ये होता के पहले तो सिर्फ एक शख़्स ज़बानी हिज्जो कर रहा था। उसके रोकने की कोशिश में खसायल क़बीहा का अमली जामा पहन कर अपने आपको मतऊन कराया गया। ये एक मामूली फतानत थी। जिससे अरब की एक औरत ने काम लिया था। और ऐसी उम्दा सज़ा दी के उससे उम्दा सज़ा खयाल में भी ना आ सकती थी। अगर उसको क़त्ल कर दिया जाता। तो इस ज़िल्लत में कमी हर गिज़ ना आती जिसने उस औरत को बुरा फ़रोख़्ता कर दिया था। बल्के जितने मुंह उतनी ज़बानें हो जातीं और पहले एक शख़्स ने हिज्जो की थी तो अब इज़ारों ज़बानें हिज्जो करने लगतीं। और अगर अपने एहसान का खयाल करके क़त्ल ना किया जाता बल्के इस तज़लील के बदले में उसकी तोहीन करके क़बीले से निकाल दिया जाता तो क्या ये मुमकिन था के अगर मेहमान की ज़बान से बे इख़्तियारी की हालत में एक शैर ऐसा निकल गया था जिससे क़बीले की हिज्जो होती थी। तो इस तज़लील के बदले में वो क़सदन हिज्जो के क़सायद तसनीफ करे और मुल्क अरब मे उनकी शौहरत दे।

क्या और शौअरा की वो ज़बानें जो हमला करने के लिए मौक़ा और वक़्त की मुंतज़िर रहा करती थीं। इसका साथ ना देतीं? और अगर ग़ौर करो तो क़त्ल या दूसरी किसी क़िस्म की सज़ा इसलिए भी मुनासिब नहीं के उसके जुर्म से बढ़ जाती। उसने अपनी बे लगाम ज़बान से सदमा पहुँचाया था। उसकी सज़ा में ज़बान ही से काम लेना चाहिए था। अब उसको ऐसी सज़ा दी गई के वो खुद नादिम हुआ। और दिल से सच्ची तौबा करने पर मजबूर हुआ। मुमकिन था के सख़्त से सख़्त सज़ा देकर आईंदा ऐसी हरकत ना करने के वादे उससे ले लिए जाते। मगर वो इस वादे पर साबित क़दम भी रहेगा। उसकी ज़मानत मुश्किल थी। इस सज़ा के बाद ना मुमकिन हो गया के वो इस क़बीले की हिज्जो करे।

हिकायत नम्बर(783) हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की तख़्त नशीनी की इब्तिदा ही थी के शौअरा की एक जमात ने दरबारे खिलाफत में हाज़िर होने की इजाज़त चाही। शौअरा इस अम्र के आदी हो चुके थे। के अमरअ और सलातीन के दरबारों में हाज़िर होकर अपने क़सायद मदहिया से दरबारों को गर्म करें। और उनसे दिल भर कर नक़्द और खुलअत वसूल करें। उनके इन मज़ामीन

मुतखीलह में ऐसी तासीर होती थी के बखील सा बखील अमीर भी बग़ैर दिए ना रह सकता था। ये शौअरा कुछ इस तर्ज़ से ईनामात तलब करते थे के हुस्न तलब उनसे अच्छी गोया किसी को आती ही नहीं थी। और उनके इन समरात फिक्र का ऐसा ग़लग़ला मचा हुआ था के बअज़ बअज़ अम्रअ तो हज़ारों लाखों की तादाद में रुपया महेज़ इस तमन्ना में सर्फ कर दिया करते थे के फलाँ शायर हमारी मदह में ज़्यादा ना सही एक ही क़सीदा नज़्म कर दे। और उनमें से जिनकी तबाऐ ज़्यादा मोजें मारती थी। उनकी तो ऐसी ऐसी बड़ी तनख़्वाहें होती थीं। के शायद आज कल के औसत दर्जा के ताल्लुक़ दार भी आमदनी में उनका मुक़ाबला ना कर सकें। ग़र्ज़ ये के इधर तो उनके मज़ामीन की आम रग़बत जैबों और ख़ज़ानों से रुपया निकलवाने के लिए काफी थी। और इधर ना देने की सूरत में हिज्जो का ख़ौफ भी सोहाने रूह होता था। शौअरा की हिज्जो क्या थी गोया के एक सेफ क़ातअे थी के जिससे अम्रअ के क़लूब कांप उठा करते थे और शौअरा की जमात मज़ामीन हिज्जोया को कुछ ऐसे अजीब पैराया में अदा करती थी के बवजह फ़ुसाहत व बलाग़त और मज़ामीन की उम्दगी के इधर शायर की ज़बान से हिज्जो के अश्आर निकले के इधर बच्चे बच्चे ने उनको याद कर लिया। अब गोया उस जगह का हर हर बच्चा उसकी हिज्जो कर रहा है। ग़र्ज़ ये के शौअरा की जमात अपनी मुंह माँगी मुरादें हासिल करती ज़रूर थी। ख़्वाह अपने इन तखिय्युलात की रग़बत की वजह से या हिज्जो के ख़ौफ से।

शौअरा की मज़कूरा बाला जमात अमीर-उल-मोमिनीन की खिदमत में हाज़िर होने की तमन्ना में कई दिन तक मौजूद रही। मगर हाज़री ना मिलना थी ना मिली। अपनी ज़िल्लत के खयाल से ये जमात बे नील मराम जाना पसंद भी ना करती थी। हुस्ने इत्तिफाक़ से अदी बिन इरताता ख़लीफतुल मुस्लिमीन की ख़िदमत में बारयाब होने की ग़र्ज़ से तशरीफ़ लाए। ख़लीफातुल मुस्लिमीन अदी बिन इरताता की बवजह के इल्मो फज़्ल के ताज़ीम व तकरीम बहुत करते थे। इसलिए उनसे अच्छा सिफारिश करने वाला इस जमात को और कौन नसीब हो सकता था। इसलिए सब की राय हुई के उनको हाज़री की इजाज़त मिलले के लिए अपना शफी बनाया जाए। इस जमात में अरब का एक मश्हूर शायर जरीर नामी मौजूद था। फौरन अदी बिन इरताता की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और सामने आकर फी अलबदीहा ये अश्आर पढ़े।

अश्आर का तर्जुमा

तर्जुमाः- ऐ बुज़ुर्ग! अपनी सवारी को तेज़ हांकने वाले, अब ज़माना आप

हज़रात के मवाफिक़ है, हमारी जमात का ज़माना तो गया गुज़रा हुआ। अगर आप दरबारे खिलाफत में बारयाब हों। तो हमारे खलीफा को हमारा इस क़द्र पैग़ाम ज़रूर पहुँचा दें के हमारी जमात आपके दरवाज़े पर इस जानवर की तरह पड़ी हुई है जिसको रस्सी में बाँध कर डाल दिया गया हो। खुदा आपकी मग़फिरत करे। आप हमारी हाजत को भूल ना जावें। ज़माना दराज़ गुज़रा है। के हमारी जमात अपने बाल बच्चों और वतन से दूर पड़ी हुई है।

अदी इब्ने इरताता से रक़ीक़-उल-क़ल्ब पर इस "इन मिनल बयान-उल-सहरा" के मिसदाक़ कलाम का असर क्यों ना होता। फौरन तसल्ली देकर सिफारिश का वादा फ़रमा लिया। जब दरबार खिलाफत में हाज़िर हुए तो बातों बातों में अर्ज़ किया के अमीर-उल-मोमिनीन! शौअरा की जमात दरवाज़े पर मौजूद है उनकी ज़बानें ज़ेहर की बुझी हुई हैं। ये नाराज़ होकर जिसके मुतअल्लिक़ अपनी ज़बानें खोलते हैं वो इस क़ाबिल नहीं रहता के अपने दोस्त अहबाब अज़ीज़ व अक़ारिब किसी को अपना मुंह दिखावे उनके अश्आर के तीर जब उनकी ज़बानों की कमानों से चलते हैं तो कभी खता नहीं करते हैं। अगर आप उनको हाज़री की इजाज़त देकर उनको कुछ थोड़ा बहुत देकर दहन सग बा लुक़मा दो ख़ता बह पर अमल करें। तो ना मुनासिब नहीं बल्के खिलाफत के रौब व अदब में फर्क ना आवेगा।

ख़लीफत-उल-मुस्लिमीन: (निहायत बे ऐतनाई के साथ) इस जमात को मेरे पास आने से क्या वास्ता? मैं अपने अज़ीज़ वक़्त को उनके लग़वियात में सर्फ करना बे फायदा समझता हूँ,

अदी बिन इरतात: अमीर-उल-मोमिनीन! आपने मेरी गुज़ारिश पर ग़ौर नहीं फ़रमाया। उनकी हाज़री इस क़द्र बेकार नहीं। जिस क़द्र के ग़ुलामाने आली के ज़हन में है। और आप तो आप हैं। क्या आप ने ये नहीं सुना के सरवरे कायनात अलेह अलिफ अलिफ सलात व तहय्यात की मदह की गई और आप ने खुद सुनी और इस पर ईनाम अता फ़रमाया। आम मुसलमानों और खसूसन अमीर-उल-मोमिनीन से मतबअे शरीयत के लिए इससे ज़्यादा और क्या चाहिए के वो ख़ातिम-उल-अंबिया (रूही व रूह अबी वामी फदाह) का इत्तिबा करें।

अमीर-उल-मोमिनीन: (कुछ ताम्मुल के बाद) आपने बजा फ़रमाया। मगर ये तो मालूम हो के उनमें से कौन कौन हाज़री की इजाज़त का तालिब है।

अदी बिन इरतात: अमीर-उल-मोमिनीन! हाज़री की तमन्ना करने वालों

में हुज़ूर के चचा ज़ाद भाई उमर बिन अबी रबिआ अलक़र्शी भी हैं। जिनकी फ़ुसाहत व बलाग़त, नज़्मो नस्र का सिक्का जमा हुआ है।

अमीर-उल-मोमिनीन: (इस नाम से निहायत बराफरोख़्ता होकर) खुदा उसकी क़राबत को बर्बाद करे और उसको ज़िन्दगी में कभी इज़्ज़त नसीब ना हो। ये शख़्स वही तो है जिसके ये अश्आर मुझ तक पहुँचे हैं।

अश्आर का तर्जुमा

तर्जुमा:- ऐ काश के जिस रोज़ मेरी मौत मुझ से क़रीब होती उस रोज़ मैं तेरी आँखों और मुंह के माबैन को सूंघता और चूमता और ऐ काश के (मरने के बाद) जिस चीज़ से मुझ को ग़ुस्ल दिया जाता वो तेरा लुआब दहन होता। और ऐ काश के वो खुश्बू जो मरने के बाद मेरे बदन और कफन पर लगाई जाती वो तेरे ही गोश्त व पोस्त की होती और ऐ काश के सलमा (मेहबूबा का नाम है) क़ब्र में मेरे, हमबिस्तर होती। ख़्वाह यहाँ या जन्नत में या दोज़ख़ में।

अगर ये दुश्मन खुदा इस क़द्र करता के दुनिया में सलमा से मिलने की तमन्ना करता और उसके कुफ़्फारा में आमाल सालहा करता और इस क़द्र खुराफात ज़बान से ना बकता के जहन्नुम में भी इससे मिलने की तमन्ना का इज़हार करता तो भी इस क़द्र बुरा ना होता। खुदा की क़सम! मैं ऐसे बेबाक, गुस्ताख़, मुंह ज़ोर को हर गिज़ हर गिज़ अपने पास ना आने दूंगा। अच्छा के सिवा किसी और का नाम लीजिए। जो हाज़री का ख़्वास्तगार हो।

अदी बिन इरताता: हमील बिन मोअम्मर अलअज़री भी मौजूद है जो आज अपना नज़ीर खूद है। उसकी शिकायत तो ग़ालिबन अमीर-उल-मोमिनीन ने भी न सुनी होगी।

अमीर-उल-मोमिनीन: (निहायत नफ़रत के साथ) क्या ये वही शख़्स नहीं जिसकी जसारत यहाँ पहुँच गई के वो इस क़िस्म के अश्आर तसनीफ़ करे और उन पर फख़्र करे।

अश्आर का तर्जुमा

तर्जुमा:- काश के हम दोनों साथ साथ ज़िन्दा रहते। और अगर मरते तो क़ब्रिस्तान में मेरी और उसकी क़ब्र बराबर होती जब ये कहा जावे के लैला को दफ़्न करके मिट्टी और पत्थरों में छुपा दिया गया तो मैं ज़िन्दा रहकर क्या करूंगा। मेरा दिन तो इस तरह गुज़रता है के मअशूक़ा के दीदार को मेरी आँखें तरसती रहती हैं। लेकिन रात को ख़्वाब में मेरी और उसकी रूहें ज़रूर मिल लेती हैं।"

ये शख़्स के जिसको दिन रात के चौबीस घंटों में एक लम्हा भी अपने ख़ालिक़ का खयाल ना आवे और एक औरत का खयाल उसको घेरे रहे। आप खुद ही खयाल फ़रमावें के किस क़द्र बद इतवार होगा। खुदा की क़सम! मैं उसको भी अपने पास आने की इजाज़त ना दूंगा। अच्छा उसके सिवा किसी और का नाम बताईये।

अदी बिन इरतातः कसीर इज़्ज़त। ये वो मशहूर शायर है जिसके मदहिया क़सायद की आरज़ू बड़े बड़े अम्रअ ने की है और उसने अपने कमाल के ज़ौम में मामूल अम्रअ की तारीफ अपने लिए बाइसे तोहीन खयाल की है। और बावजूद बड़े बड़े ईनामात के वादों के उसने किसी को मुंह नहीं लगाया है।

अमीर-उल-मोमिनीनः- मालूम होता है के आप इस जमात के हाल से बिलकुल ही बे ख़बर हैं। इन्हें जामअे कमाल के ये अश्आर हैं।

अश्आर का तर्जुमा

तर्जुमाः- मदयन के तारिक-उद्दुनिया और जिन जिन लोगों से मैं मिला हूँ। उनको मैंने खुदा के अज़ाब से रोते पीटते देखा। और अगर वो मेरी प्यारी महबूबा अज़्ज़त की बातें इस तरह सुनते जिस तरह के मैंने सुनी हैं। तो कोई उसके सामने ताज़ीमन सर झुकाता कोई सज्दा करता।

अल्लाह उस पर लानत करे। ये एक नाक़िस-उल-अक़्ल वालदैन, औरत को क़ाबिले सज्दा समझता है। और खुदा के अज़ाब से डर कर रोने वालों का तमसखुर उड़ाता है। ये पहाड़ के बराबर कलमात ज़बान से निकाल देने वाला क्या दरबार में हाज़िर होने की इजाज़त दिए जाने के क़ाबिल है। खुदा की क़सम मैं ऐसे नाहिनजार को अपने पास आने की इजाज़त देकर गुनहगार ना बनूंगा। अच्छा! इसके सिवा और कौन इजाज़त का तालिब है।

अदी बिन इरतातः अदी बिन अहवस अनसारी भी मौजूद है और उसके फ़ज़्लो कमाल का तो हर छोटा बड़ा मदाह है।

अमीर-उल-मोमिनीनः- खुदा इस पर अपना ग़ज़ब नाज़िल फ़रमावे। क्या उस बद किरदार और बद अक़्वाल को मैं अपने पास आने दूंगा। "नहीं नहीं हर गिज़ नहीं।" मैं उसकी हालत से अच्छी तरह वाक़िफ हूँ। ये बदइतवार वही तो है जो मदीने के एक शख़्स की लोंडी को फिसला कर ले भागा था। और खाकिश हिदहन उस पर ये शैर फख़्रन पढ़ा था।

शैर का तर्जुमा

तर्जुमा:- मेरे और इस लोंडी के मालिक में हायल होकर खुदा उसको मुझ से अलेहदा करना चाहता है और मैं उसके पीछे पीछे लगा हुआ हूँ।"

अब तो आपको उनके हुस्ने इस्लाम की ख़बर हो गई। ख़ैर किसी और का नाम बताईये।

अदी बिन इरतात: हमाम बिन ग़ालिब अलफरज़दिक़। उसकी बज़ला संजी और लतीफा गोई तो रोतों को हंसा देती है। अगर उसको इजाज़त दे दी जावे तो ग़ालिबन ना मुनासिब नहीं।

अमीर-उल-मोमिनीन: आपने भी अच्छे का नाम लिया। आपको ख़बर नहीं के ये फ़ासिक़ ज़िना के गुनाह में मुबतला हुआ और उस पर ये अश्आर फख़्रिया कहे।

अश्आर का तर्जुमा

तर्जुमा:- उन दोनों ने मुझ को बड़ी बुलंदी से इस तरह लटकाया जिस तरह के कोई नर्म परों वाला बाज़ किसी शिकार पर पर तोल कर यकायक गुज़रता है। तो जब मेरे दोनों पैर ज़मीन पर जमे। तो इन दोनों ने कहा। के आया ये ज़िन्दा है। के इससे उम्मीद की जा सके। या ये ठंडा हो लिया के इससे अलग हो जावें। तो मैंने कहा। के ऐसा ना हो के निगहबानों को ख़बर हो जावे और मैं जल्दी से रात ही रात में निकल भागा।"

खुदा की क़सम! मैं उसको भी अपने पास ना आने दूंगा। अच्छा किसी और का नाम लीजिए।

अदी बिन इरताता: अख़्तल तग़लबे भी हाज़री का ख़्वास्तगार है। इसमें मुझ को तो कोई ऐब नहीं मालूम होता है।

अमीर-उल-मोमिनीन: (मुस्कुरा कर) ऐब नहीं मालूम होता। ये भी आपने खूब फ़रमाया। इससे ज़्यादा मुंह फट शायर कम होंगे। आपने उसके ये शैर सुने होंगे।

अश्आर का तर्जुमा

तर्जुमा: मैंने सारी उम्र में कभी रमज़ान के रोज़े नहीं रखे और कुर्बानी करना तो बजाए खुद मैंने कभी कुर्बानी का गोश्त खाया भी नहीं। ना मैंने सुबह के वक़्त, मक्का के टीलों की तरफ़ ऊँटों को बग़र्ज़ हिसूले निजात अखरवी तेज़ भगाया। और ना मैं खरीदे हुए ग़ुलाम की तरह सुबह के वक़्त हय्या अलल फलाह कहकर लोगों को नमाज़ के लिए बुलाता हूँ। हाँ ठंडी और तेज़ शराब के गिलास ज़रूर चढ़ा जाया करता हूँ। और सुबह होते होते सज्दे कर लिया करता हूँ।"

ये ज़ात शरीफ तो फ़रज़दिक़ से भी चार हाथ आगे हैं। खुदा की क़सम! मैं इस मुसलमान सूरत काफिर सीरत को अपने फर्श पर भी क़दम ना रखने दूंगा। इसके सिवा अगर कोई और हो तो उसका नाम लीजिए।

अदी बिन इरताताः जरीर भी है। उसकी ज़बान फ़रज़दिक़ के मुक़ाबले में तो बेशक खुली है। मगर उसने फ़रज़दिक़ पर ही बस की। मेरे इल्म में उसने कोई ऐसी जसारत नहीं की जिससे हदूद शरया पामाल होते हों।

अमीर उल मोमिनीनः आपने उनकी मजनूनाना बड़ नहीं सुनी। उनके शैर हैं।

शैर का तर्जुमा

तर्जुमाः- अशाक़ के दिलों को शिकार करने वाली तेरी पास रात को आए और ये वक़्त मुलाक़ात का वक़्त नहीं तो ख़ैरियत से वापस हो जा।"

ताहम अगर शायरों को आने की इजाज़त देना आपके खयाल में ज़रूरी ही है तो ख़ैर उसको बुलवा लीजिए।

अदी बिन इरताता अपने दिल में ये कहते हुए बाहर तशरीफ़ लाए के अलहम्दू लिल्लाह इस क़द्र वक़्त सर्फ करने के बाद अमीर-उल-मोमिनीन ने एक को तो इजाज़त हाज़िर होने की दे दी। अगर उसकी निसबत भी इंकार फ़रमा देते तो मैं क्या कर लेता। बाहर आकर देखा तो सब के सब चूं गोश रोज़ादार पर अल्लाहू अक्बर सत का मंज़र बने हुए थे। आपने जरीर को हमराह लिय और ख़लीफात-उल-मुस्लिमीन की ख़िदमत में हाज़िर हुए। जरीर एक पुरकाला आतिश था। और फी अलबदीहा कहने में तो ऐसा मशाक़ था के बसाअवक़ात उसके फी अलबदीहा शैर पढ़ देने पर लोगों को गुमान होता था। के ये घर से याद कर लाया है। मौक़ा पाकर पढ़ दिए। ख़लीफत-उल-मुस्लिमीन को दूर से देखते ही ये शैर पढ़ना शुरू कर दिए।

अश्आर का तर्जुमा

तर्जुमाः- बेशक जिस क़ादिर मतलक़ ने नबी उम्मी सल-लल्लाहो तआला अलेह व सल्लम को नबी बनाकर ख़ल्क़-उल्लाह की हिदायत के लिए भेजा। उसने तख़्ते खिलाफत पर एक आदिल ख़लीफा को मुतमकिन किया है। सारी रिआया के लिए उसका अद्ल व वक़ार आम है। यहाँ तक के उसकी रिआया का एक एक शख़्स अमूरे क़बीहा से मुंतख़िब है। और उसने बड़े बड़े टेढ़ों की कजी को सीधा कर दिया। मैं उसके पास नफा आजिल की उम्मीद लेकर हाज़िर हुआ हूँ और हर शख़्स जानता है के इंसानी नफ़्स मुनाफअे आजिला का दिलदादा है। मालिक हक़ीक़ी ने अपने क़ुरआने पाक

ं मुसाफिर और अयालदार फक़ीर का हिस्सा मुक़र्रर फ़रमा दिया है। (और ुझ में ये सारे ओसाफ मौजूद हैं)

अमीर-उल-मोमिनीनः (अपने खयाल में इइस मदह को हद से बढ़ा ुआ समझकर) जरीर! अल्लाह से डरो और ज़बान से कोई बात हक़ बात के सिवा ना निकालो। जरीर ने ये सुनते ही फिर शैर पढ़ना शुरू कर दिए।

अश्आर का तर्जुमा

तर्जुमाः- मेरे वतन यमामा नामी में बहुत से परागंदा बाल रांड औरतें हैं। हुत से यतीम हैं। के बवजह फाक़ा कशी के ना उनकी आवाज़ निकलती है। ा उनकी नज़र ऊपर उठती है) ये ऐसी जमात है के बवजह आपके इंसाफ के उनके माँ बाप के नअेम-उल-बदल हो गया। वो चिड़िया के ज़ईफ बच्चे की तरह हैं जो चल ना सकता है ना उड़ सकता है) क्या मैं इस तकलीफ और मुशक्क़त का हाल बयान करूं जो मेरे ऊपर नाज़िल हो चुकी। या ो कुछ आपको मेरे मसायब और शदायद का हाल सुनाया गया। वही मेरे ऊपर रहम करने के लिए काफी होगा। जब बारिश हम से मुंह फैर लेती है ो हम को अपने ख़लीफा से ऐसी ही उम्मीद लगी रहती है जैसी के बारिश े आज कल खिलाफत हक़ बहक़दार रसीद की मिसदाक़ है। जैसे के मूसा अलेहिस्सलाम अपने रब से कलाम करने के मुसतहिक़ समझे गए। हुज़ूर ने ांडों और दुखिया औरतों की तो हाजत रवाई फ़रमा दी। मगर अब इस रंडवे र्द की हाजत रवाई कौन करेगा। जब तक आप दुनिया में तशरीफ़ फ़रमा हैं। ख़ैर हम से जुदा नहीं हो सकती। ऐ खैर मुजस्सिम उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ आप पर खुदा की बर्कात की बारिशें होती रहें।

अमीर-उल-मोमिनीनः जरीर! खुदा की क़सम! तुम ने अपने मतलब को निहायत खूबी से अदा किया। मगर मेरी मुल्क में बजुज़ तीस अशर्फियों के और एक पैसा भी नहीं। उस में से भी दस अशर्फियाँ तो मेरा बेटा अब्दुल्लाह सर्फ कर चुका और दस अशर्फियाँ मेरी बीबी ने ले लीं। बाक़ी दस अशर्फियाँ तुम ले लो। ये कहकर ख़ादिम को हुक्म दे दिया के बाक़ी जरीर को दे दे।

जरीरः- अमीर-उल-मोमिनीन! मैं अगरचे अमरअ से हज़ारों लाखों, अशर्फियाँ लेकर भी खुश नहीं होता। और ज्यादा का तालिब होता हूँ लेकिन आपकी ये दस अशर्फियाँ मेरी उम्र भर की कमाई से अफ़्ज़ल और उम्दा हैं।

जरीर ये शुक्रिया के अलफाज़ अमीर-उल-मोमिनीन की खिदमत में कहकर बाहर आया तो उसकी जमात के बाक़ी मांदा शायरों ने पूछा के क्या हुआ।

जरीरः क्या हाल पूछते हो, सुनोगे तो सर पीट लोगे। मैं एक ऐसे खलीफा के पास से होकर आ रहा हूँ, जो फक़ीरों के लिए सखी और शायरों के लिए बखील है। लेकिन खुदा की क़सम मैं तो उसकी इस आदत के मदाह हूँ।

बाक़ी मांदा शौअरा ने जब जरीर से ये सुना तो उनकी उम्मीदों पर पानी पड़ गया। और अमीर-उल-मोमिनीन के इस हज़्म और एहतियात और तक़वे का नतीजा सिर्फ यही निकला के जिन शौअरा को सिर्फ इस जुर्म में दरबार की हाज़री के बजा फख्र से मेहरूम किया गया था। के उनकी ज़बानें उनके क़ाबू में ना थीं। और हदूद शरिया से मुतजावुज़ होकर दूर अज़ दूर पहुँच जाती थीं। वही लोग अपनी ज़बानों को क़ाबू में रखने लगे। हदूद शरिया और हक़ूक़ मज़हब की हिफाज़त करने लगे। बल्के ये एक आम तनबीह थी। जो बर्क़ ख़ातिफ की तरह ज़मीन के इस किनारे से होती हुई आन की आन में दूसरे किनारे तक पहुँच गई। और जिन बातों को वो हंसी के तौर से ज़बानों से निकाल दिया करते थे। उन से एहतियात करने लगे। दीनी हदूद और मज़हबी हक़ूक़ की जो अज़मत और वक़अत दिल से निकल चुकी थी। वो इस एक ही ताज़याना में लौट कर आ गई। (अदब-उल-अरब, सफ़ा 128)

सबक़:- अमीर-उल-मोमिनीन के इस मुख़्तसिर से वाक़ेये पर एक सरसरी नज़र डालने से बहुत से नसाऐह और बैश बहा मालूमात हासिल होती हैं।

1- सुलतान को ऐसा बा ख़बर रहना चाहिए के उसको रिआया में से हर एक के अफआल व अक़वाल की पूरी वाक़फीयत हासिल हो।

2- अेहकाम के जारी करने में (अगर वो तरीक़ से मुनहरिफ़ नहीं हैं) तो हर गिज़ उसकी परवा ना करे के आम लोग या रिआया में से ज़बान ज़ोर अशख़ास इस पर क्या कुछ मलमअे साज़ी ना करेंगे।

3- हक़ बात के मानने में इसका हर गिज़ खयाल ना करे। के मैं उससे क़ब्ल इस हुक्म के खिलाफ हुक्म दे चुका हूँ। मेरी बात की वक़अत लोगों के दिलों से निकल जावेगी। अमीर-उल-मोमिनीन ने बावजूद इस ताकीदी हुक्म के शौअरा की जमात हाज़िर दरबार ना हो। जब अदी बिन इरतात से ये सुना के हुज़ूर की खिदमत में भी यही शौअरा हाज़िर हुआ करते थे। तो उन्होंने शौअरा को हाज़िर होने की इजाज़त दे दी।

4- हुक्म जारी करने में अपने पराये की तख़्सीस ना करें। वो हुक्म

बे वक़अत है जो अपने आज़ा के लिए और अबाऐद के लिए और हो। अमीर-उल-मोमिनीन ने जब अक़वाल पर गिरफ़्त शुरू की तो अपने अज़ीज़ शायर को भी मुसतसना ना किया। और अजब नहीं के अदी बिन इरतात ने सब से पहले जो इस अज़ीज़ शायर का नाम लिया है। वो इसी मसलेहत से हो के अमीर-उल-मोमिनीन अपने अज़ीज़ का नाम सुनकर हुक्म में किसी क़िस्म की सहूलत कर देंगे। मगर अमीर-उल-मोमिनीन ने हर गिज़ उसको पसंद ना फ़रमाया। के एक ही जुर्म में अक़ारिब और अबाऐद दोनों शरीक हों। और अक़ारिब क़ाबिले अफ़्व समझे जावें। और अबाऐद से मवाख़िज़ा किया जावे। और फी अलहक़ीक़त हुक्म की सच्ची अज़मत रिआया के क़ल्ब में इसी वक़्त मुतमकिन होती है। जब के वो उसको बड़े छोटे अपने पराये की तमीज़ के बग़ैर सब पर बराबर देखती है।

5- अमीर-उल-मोमिनीन ने अपनी मदह में मुबालग़ा को पसंद ना फ़रमाया। उनको मालूम था के ज़बान पर क़ुद्रत रखने वाला अगर किसी बड़ी से बड़ी चीज़ को अच्छा साबित करने पर उतर आवे। तो अच्छा ही साबित करके छोड़ता है और अगर अच्छी से अच्छी चीज़ को बुरा साबित करना चाहे तो इस तौर से काम लेता है के क़लूब में ये बात जागुज़ीं हो जाती है के इससे बदतर चीज़ ख़ालिक जिल्ले व अला शानहू ने कोई पैदा ही नहीं फ़रमाई। इसी लिए अव्वल ही से फ़रमा दिया के देखा हक़ के सिवा और कोई बात ज़बान से ना निकालना।

6- अरबी इल्म अदब की मुनासबत का ये हाल था के इस क़िस्म के अश्आर (जिनकी वजह से शौअरा इस दर्जे के मअतूब क़रार दिए गए के अमीर-उल-मोमिनीन ने उनकी सूरतों को देखना भी गवारा (ना फ़रमाया) इस तौर पर नाम बनाम बरजस्ता याद थे। तो इसमें क्या शक हो सकता है के आपके हाफिज़ में अश्आर का एक काफी ख़ज़ाना मौजूद होगा। हुक्मरानी जैसी कुछ मशग़ूलियत को चाहने वाली और आदमी को किसी काम का ना रखने वाली चीज़ है। उसको हर साहब बसीरत मालूम कर सकता है। लेकिन बावजूद इस मशग़ूली के अरबी अश्आर हाफज़ा में महफूज़ थे। अमीर-उल-मोमिनीन की इस अदब दानी पर ग़ौर करके इन क़ासिर हिम्मतों के मुतअल्लिक़ अपनी राय क़ायम करो। जो बावजूद इस क़द्र मशाग़िल ना रखने के अरबी इल्म अदब से बेबेहरा हैं।

लाखों सलाम

फाज़िल बरेलवी

मुसतफा जाने रहमत पे लाखों सलाम
शमै बज़्म हिदायत पे लाखों सलाम
मेहर चर्ख नबुव्वत पे रोशन दुरूद
गुले बाग़ रिसालत पे लाखों सलाम
शहर यारे अरम ताजदारे हरम
नो बहार शफाअत पे लाखों सलाम
हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फक़ीरों की सरवत पे लाखों सलाम
दूर व नज़दीक के सुनने वाले वो कान
काने लअले करामत पे लाखों सलाम
जिसके माथे शफाअत का सहरा रहा
इस जबीं सआदत पे लाखों सलाम
जिस तरफ़ उठ गई दम में दम आ गया
इस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम
पतली पतली गुले क़ुद्स की पत्तियाँ
इन लबों की नज़ाकत पे लाखों सलाम
वो ज़बाँ जिसको सब कुन की कुंजी कहें
उसकी नाफिज़ हकूमत पे लाखों सलाम
कुल जहाँ मिलक और जौ की रोटी ग़िज़ा
इस शिकम की क़नाअत पे लाखों सलाम
जिस सुहानी घड़ी चमका तैबा का चाँद
उस दिल अफरोज़ साअत पे लाखों सलाम
काश मेहशर में जब उनकी आमद हो और
भेजें सब उनकी शौकत पे लाखों सलाम
एक मेरा ही रहमत में दावा नहीं
शाह की सारी उम्मत पे लाखों सलाम
मुझसे ख़िदमत के क़ुद्सी कहें हाँ रज़ा
मुसतफा जाने रहमत पे लाखों सलाम